ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

भादों-आश्विन, संवत् नानकशाही ५४६
वर्ष ८ अंक १ सितंबर 2014

संपादक : सिमरजीत सिंघ *एम. ए, एम. एम. सी.*
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ *एम. ए, एम. एम. सी.*

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन: 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**
फैक्स: 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

गुरु पूरा पूरी ता की कला ॥ गुर का सबदु सदा सद अटला ॥
गुर की बाणी जिसु मनि वसै ॥ दूखु दरदु सभु ता का नसै ॥१॥
हरि रंगि राता मनु राम गुन गावै ॥ मुकतुो साधू धूरी नावै ॥१॥रहाउ॥
गुर परसादी उतरे पारि ॥ भउ भरमु बिनसे बिकार ॥
मन तन अंतरि बसे गुर चरना ॥ निरभै साध परे हरि सरना ॥२॥
अनद सहज रस सूख घनेरे ॥ दुसमनु दूखु न आवै नेरे ॥
गुरि पूरै अपुने करि राखे ॥ हरि नामु जपत किलबिख सभि लाथे ॥३॥
संत साजन सिख भए सुहेले ॥ गुरि पूरै प्रभ सिउ लै मेले ॥
जनम मरन दुख फाहा काटिआ ॥ कहु नानक गुरि पड़दा ढाकिआ ॥४॥ *(पन्ना १३३९)*

प्रभाती राग में उच्चारण किए गए उपरोक्त शबद में पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी गुरु-महिमा का बखान करते हुए फरमान कर रहे हैं कि जो सच्चा गुरु होता है वो सर्वगुण संपन्न होता है तथा उसकी आत्मिक उच्चता, ताकत भी सर्वसामर्थ्य होती है। गुरु का शबद (उपदेश) सदैव अटल होता है। जिन जीवों के हृदय में गुरु की बाणी, गुरु का उपदेश बस जाता है, उन जीवों के सब तरह के दुख-दर्द दूर हो जाते हैं। जिन जीवों का मन प्रभु के प्यार-रंग में रंगा रहता है और जो जीव प्रभु का गुणगान करते रहते हैं वो सच्चे गुरु, साधु की चरण-धूल में स्नानरत होकर विकारों आदि से मुक्त हो जाते हैं। जो जीव गुरु-कृपा से प्रभु की शरण में रहते हैं वो संसार-सागर से पार हो जाते हैं। उनके मन से सब तरह के भय, भ्रम दूर हो जाते हैं। जिन जीवों का मन-तन सदा गुरु चरणों में जुड़ा रहता है, उनको कोई भय आदि नहीं सताता।

पंचम पातशाह अगली पंक्तियों में फरमान कर रहे हैं कि पूर्ण गुरु ने जिन जीवों को अपना जान उनकी प्रतिपालना की उनके हृदय में आत्मिक आनंद, सहजता का भाव सुख बनकर टिक जाता है; कोई वैरी, कोई दुख उनके निकट नहीं समाता, उन पर कोई प्रभाव नहीं बनाता। ऐसे जीवों के सारे पाप प्रभु-नाम-सिमरन करते हुए खत्म हो जाते हैं। वे संत-जन, सज्जन सुखी जीवन वाले बन गए जिनको पूर्ण गुरु ने प्रभु के साथ जोड़ा है, प्रभु की निकटता का एहसास कराया है। ऐसे भले जीवों का जन्म-मरण का दुख खत्म हो गया; पूर्ण गुरु ने, सच्चे गुरु ने उनका मान-सम्मान बचा लिया। कहने से तात्पर्य, सच्चे गुरु की संगत में आने से जीवों का जग में आना सफल हो जाता है और उनका लोक-परलोक में यश होता है।

शबद-गुरु की अवधारणा

*-डॉ. जगजीत कौर**

गुरमति अनुसार गुरु का सिक्ख गुरु की शरण में आता है और गुरु चरणों पर नतमस्तक होकर नाम की दात प्राप्त करता है, नाम अनुसारी जीवन यापन कर नाम में लीन हो जीवन सफल करता है *"सफल सफल भई सफल जात्रा ॥ आवण जाण रहे मिले साधा ॥"* जीवन यात्रा सार्थक करता है। जब तक दस गुरु साहिबान भौतिक शरीर जामें में रहे, जीवन कल्याण हेतु जिज्ञासु गुरु शरण में आते, विनीत अरदास करते, गुरुदेव उचित पात्र जान उन्हें गुरु मंत्र देकर गुरबाणी अनुसार जीवन यापन करने का उपदेश देते और लोक-परलोक सुहेले की दात बख़्शिश करते। सन् १७०८ ई में श्री हजूर साहिब नांदेड़ दक्षिण भारत में दशमेश पिता साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने परम ज्योति में लीन होने से पूर्व देहधारी गुरु परंपरा को हमेशा के लिए समाप्त कर, श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरतागद्दी प्रदान की। मौजूद सारी संगत को जो आदेश दिया वो ज्ञानी गिआन सिंघ के शब्दों में इस प्रकार है :

आगिआ भई अकाल की तबै चलायो पंथ।
सब सिक्खन को हुकम है गुरू मानिओ ग्रंथ।

संगत ने शीश झुका आदेश स्वीकार किया, साथ में प्रार्थना की कि शबद से ज्योति प्रकट करने की विधि हमें कौन बताएगा ? गुरुदेव जी ने बताया कि यह अधिकार खालसे को दिया गया है। पांच प्यारे मिलकर पाहुल की बख़्शिश करेंगे और साथ ही शबद-गुरु गुरबाणी पाठ से जुड़कर जीवन सार्थक करने की विधि भी बताएंगे। पांच प्यारों से मिले अमृत-जल का पान कर गुरमति से जुड़ा प्राणी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब को तन-मन से समर्पित, दीक्षित, जिज्ञासु प्रभु स्वरूप से अभेदता प्राप्त कर लेगा। गुरुदेव जी ने उपदेश दिया :

प्रथम रहित यहि जान खंडे की पाहुल छके।
सोई सिंघ प्रधान अवर न पाहुल जो लए।
पांच सिंघ अंम्रित जो देवै । ता को सिर धर छक पुन लेवै।
पुन मिल पांचो रहित जो भाखै। ता को मन मै द्रिड़ कर राखै।

(रहितनामा भाई देसा सिंघ)

इस प्रकार खालसे में गुरु शरीर के दर्शन करने हैं और श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पावन बाणी शबद रूप से जुड़कर प्रभु में अभेद होना है। गुरुदेव जी ने हमें शबद गुरु के अनुगामी बनाया। गुरु का सिक्ख शबद गुरु में सुरति-लिव जोड़कर प्रभु से अभेदता प्राप्त करता है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की पावन बाणी को हम दस गुरु साहिबान की प्रगट ज्योति मानते हैं। शबद अगम्य, अगोचर, अपरंपार, अकाल पुरख वाहिगुरु जी की ज्योति का ही प्रकाश है। शबद ही सृष्टि का कर्त्ता है, शबद ही जगत का जीवन है, शबद से ही समग्र सृष्टि का अस्तित्व है, जगत की व्युत्पति है :

उतपति परलउ सबदे होवै ॥ सबदे ही फिरि ओपति होवै ॥ *(पन्ना ११७)*

निर्गुण अफुर प्रभु ने शबद द्वारा ही स्वयं को सफुर कर सृष्टि का प्रकटीकरण किया है।

**१८०१-सी, मिशन कम्पाऊण्ड, निकट सेंट मेरीज़ अकादमी, सहारनपुर (यू पी)-२४७००१, मो. ९४१२४-८०२६६*

जपु जी साहिब में गुरु नानक पातशाह जी ने स्पष्ट किया *'कीता पसाउ एको कवाउ'* प्रभु के एक स्फुरण मात्र 'कवाउ' से ही सारी सृष्टि प्रकट हो गई। शबद ही प्रभु की शक्ति है, शबद ही सृष्टि प्रकटीकरण का विधान (manifestation principle of the universe) है। इसे ही 'हुकम' मानते हैं 'नाम' भी इसी का पर्यायवाची है। *"विणु नावै नाही को थाउ"* फरमान द्वारा, नाम को, समूची जड़ चेतन प्रकृति को केंद्रीय शक्ति माना गया है। समग्र ब्रह्मांड में प्रभु रूप शबद का ही प्रसार है। गुरु नानक पातशाह जी ने उपदेश किया कि शबद में अपनी सुरति को जोड़कर अकाल पुरख परम परमात्मा तक पहुंच सकते हैं। शांत चित्त सहज स्थिर मन की वृत्ति सुरति को शबद में लीन कर अफुर लोक तक पहुंच सकने की विधि गुरुबाणी में स्पष्ट की गई है। गुरुबाणी परमात्मा रूप है क्योंकि यह परमगुरु के मुख से निसृत सच्ची बाणी 'धुर की बाणी' है जो साक्षात परमात्मा का ही शबद अंश है। परमात्मा के शबद द्वारा गुरु के मुख से प्रकटीकरण हुआ है :

सतिगुर विचि आपु रखिओनु करि परगटु आखि सुणाइआ ॥ (पन्ना ४६६)

यह धुर की बाणी है :

धुर की बाणी आई ॥ तिनि सगली चिंत मिटाई ॥ (पन्ना ६२८)

गुरु-शबद द्वारा ही जिज्ञासु का मार्ग दर्शन करता है, सदाचार युक्त जीवन जीने की विधि गुरु-शबद द्वारा ही सिक्ख को समझाता है। गुरु-शबद द्वारा सिक्ख को नाम-सिमरन का उपदेश देता है, नाम की बख़्शिश सिक्ख पर करता है।

पूरे गुर ते नामु पाइआ जाइ ॥ जोग जुगति सचि रहै समाइ ॥ (पन्न ९४१)

सतिगुरु शबद द्वारा ही नाम की दात देते हैं :

सबदै ही नाउ ऊपजै सबदे मेलि मिलाइआ ॥
बिनु सबदै सभु जगु बउराना बिरथा जनमु गवाइआ ॥ (पन्ना ६४४)

जो जीव गुरु-शबद से नहीं जुड़ता वह अपना जीवन व्यर्थ गंवा कर चला जाता है। ऐसे प्राणी जो शबद विचार से नहीं जुड़ते उन्हें 'बउराना' बताया गया है :

सबदु गुर पीरा गहिर गंभीरा बिनु सबदै जगु बउरानं ॥ (पन्ना ६३५)

शबद की महत्ता गुरु नानक पातशाह जी ने सिद्ध मंडली से गोष्ठि कर उन्हें समझाई। अनेक वाद-विवाद करने के पश्चात अंत में गुरु चरणों पर समर्पित होकर उन्होंने स्वीकारा कि शबद ही ब्रह्ममय होकर समग्र ब्रह्मांड में परिव्याप्त है। गुरुदेव जी की पावन बाणी 'सिध गोसटि' प्रत्यक्ष प्रमाण है, जिसमें सिद्ध ज्ञान गोष्ठि करते हुए गुरुदेव जी से प्रश्न करते हैं:

कवण मूलु कवण मति वेला ॥ तेरा कवणु गुरू जिस का तू चेला ॥ (पन्ना ९४२)

गुरुदेव जी का उत्तर है :

पवन अरंभु सतिगुर मति वेला ॥
सबदु गुरू सूरति धुनि चेला ॥ (पन्ना ९४३)

गुरुदेव जी ने शबद को अपना गुरु बताया सुरति को चेला कहा जब तक सुरति शबद में नहीं जुड़ती अध्यात्मसुख की प्राप्ति नहीं हो सकती। जीव को नितांत, असीम तृप्ति और स्थायी सुख देने वाला आत्मिक रस शबद, गुरुबाणी से जुड़कर ही प्राप्त होता है, ऐसा गुरुदेव का फ़रमान है :

बिनु सबदै रसु न आवै अउधू हउमै पिआस न जाई ॥
सबदि रते अंम्रित रसु पाइआ साचे रहे अघाई ॥ (पन्ना ९४५)

सुमेर पर्वत पर स्थित चरपट योगी प्रश्न करता है :

दुनीआ सागरु दुतरु कहीऐ किउ करि पाईऐ पारो ॥
चरपटु बोलै अउधू नानक देहु सचा बीचारो ॥
(पन्ना ९३८)

गुरुदेव जी का स्पष्ट उत्तर है :

जैसे जल महि कमलु निरालमु मुरगाई नै साणे ॥
सुरति सबदि भव सागरु तरीऐ नानक नामु वखाणे ॥ *(पन्ना ९३८)*

कमल का पुष्प जल में रहता है। जल में ही उसकी उत्पत्ति व विकास होता है। वह जल की सतह से ऊपर उठा जल से निर्लिप्त रहता है। मुरगाबी जल पर तैरते, जल-विहार क्रीड़ा करते हुए भी जल से निर्लिप्त रहती है, अपने पंख जल में डुबोती नहीं सूखे ही रखती है, इसी प्रकार जीव भी जगत में विचरते हुए कार्य व्यापार में लगा अपने सांसारिक दायित्वों को पूरा करते हुए माया मोह और माया जनित विकारों से अविछिन्न निर्लिप्त रहते हुए अपनी चित्तवृत्ति को शबद आकाल पुरुख से जोड़े रख सकता है। विकारों की लहरें उसे डुबो नहीं सकती। यदि जिज्ञासु का मन पूर्ण समर्पित भाव से प्रभु चरणों से गुरु-शबद से जुड़ा हो तो प्रभु प्रियतम स्वयं उसकी वरद हस्त देकर रक्षा करता है, पंचम गुरुदेव जी ने इसी भाव को ऐसे व्यक्त किया है :

लगड़ी सुथानि जोड़णहारै जोड़ीआ ॥
नानक लहरी लख सै आन डुबण देइ न मा पिरी ॥ *(पन्ना ५१९)*

जिस जीव का चित्त सुंदर स्थान प्रभु चरणों से जुड़ जाता है, जिसे कृपा दृष्टिकर स्वयं जोड़ने योग्य प्रभु ने जोड़ा है उसके जीवन में भले ही कितने उतार-चढ़ाव आएं, लोभ लहरें उसे घेरने का प्रयास करें, पदार्थवादी आकर्षण उसे आकृष्ट करते रहे किंतु शब्द से जुड़ा वह गुरमुख इन लोभ लहरों में डूबता नहीं क्योंकि उसे प्रिय प्रियतम प्रभु ने कस कर पकड़ा हुआ है। प्रिय कृपावान, दयालु प्रभु उसे डूबने ही नहीं देता। गुरु-शबद से जुड़ा जीव सांसारिक कार्य व्यावहार करता हुआ सुरति को शबद से जोड़े रखता है और भवसागर से पार हो जाता है।

मनुष्य स्वस्वरूप की पहचान नहीं कर सकता, प्रभु में लीन नहीं हो सकता, क्योंकि उसने अपने आप को मिथ्या हउमै की दीवारों में घेरा हुआ है। हउमै के कारण ही वह प्रभु से दूर है, गुरुदेव जी का फ़रमान है :

गुर कै सबदि हउमै बिखु मारै ता निज घरि होवै वासो ॥
जिनि रचि रचिआ तिसु सबदि पछाणै नानकु ता का दासो ॥ *(पन्ना ९४०)*

गुरु द्वारा दिए गए शबद-नाम की कमाई करने से हउमै का विष समाप्त हो जाता है, हउमै ने ही जीव को ब्रह्म से दूर किया है। हउमै का विष खत्म होते ही जीव का निज घर स्वस्वरूप में निवास हो जाता है और जीव ब्रह्म स्वरूप में समाहित हो जाता है। उस रचनाकार प्रभु को शबद की कमाई से ही पहचाना जाता है।

"हुकमि रजाई चलणा" की तर्ज पर गुरुदेव समझा रहे हैं :

हुकमे आवै हुकमे जावै हुकमे रहै समाई ॥
पूरे गुर ते साचु कमावै गति मिति सबदे पाई ॥
(पन्ना ९४०)

संपूर्ण सृष्टि में हुक्म का ही वरतारा है, जीव हुक्म से ही आता है, हुक्म से ही जाता है, हुक्म में ही समाहित होता है, ऐसी सूझ गुरु द्वारा प्राप्त शबद की कमाई करने से होती है, नाम-जपकर जीव हुक्म को पहचान पाता है।

शबद की प्राप्ति, गुरु से मिलाप की विधि भी गुरु साहिब ने जपु जी साहिब में स्पष्ट की कि जीव नाम श्रवण करे पुन: उसका मनन करे। शबद जिसे नाम भी कहा गया है, संपूर्ण ब्रह्मांड में ध्वनि लहरियों के रूप में व्याप्त है।

इन ध्वनि लहरियों को, प्रभु-नाम को, पहले सुनना है, कानों से सुनकर ही उस ध्वनि लहर तक पहुंचने का प्रयास जीव कर सकता है "सुणिऐ सतु संतोखु गिआनु" सुनने से सत्य, संतोष और ज्ञान की प्राप्ति होगी। मनुष्य का मन चंचल होता है, श्रवण करते हुए भी वह बाहरी जगत के विषयों में भ्रमित होता है। इसलिए मन को काबू करना होगा और चित्तवृत्ति अंतरमुखी कर इसका चिंतन-मनन करना होगा, गुरुदेव जी ने मनन की बात कही *"मंने की गति कही न जाइ"* सुरति भ्रमित बुद्धि को एकाग्र करने के लिए मनन करना होगा। *"मंनै सुरति होवै मनि बुधि ॥ मंनै सगल भवण की सुधि ॥"* मननशील जीव को विवेक बुद्धि की प्रप्ति होती है, वह समस्त भुवनों का ज्ञाता हो जाता है और तब *"मंनै पावहि मोखु दुआरु ॥"* इसके लिए नाम-अभ्यासु निरंतर सिमरन ज़रूरी है, *"सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ॥"* लगातार प्रभु-नाम का प्रेम सहित सिमरन करे। नाम-सिमरन सर्वश्रेष्ठ सिरमौर तत्व है, गुरुदेव जी का फ़रमान है :

नाम ततु सभ ही सिरि जापै ॥
बिनु नावै दुखु कालु संतापै ॥
ततो ततु मिलै मनु मानै ॥
दूजा जाइ इकतु घरि आनै ॥ (पन्ना ९४३)

नाम-सिमरन सभी तत्वों से ऊपर है। नाम के बिना मनुष्य दुखी रहता है। नाम-सिमरन द्वारा जब मूल तत्व से मेल हो जाता है मन को प्रतीति आ जाती है, द्वैत-भाव नष्ट हो जाता है, एकता के घर में निवास होता है। ब्रह्म जीव का एक्य होता है, ब्रह्म तत्व की प्राप्ति होती है।

"सिध गोसटि" के अनुसार सिद्धों को यह भी शंका होती है कि शबद-नाम का निवास कहां हैं :

सु सबद का कहा वासु कथीअले जितु तरीऐ भवजलु संसारो ॥ (पन्ना ९४४)

गुरु साहिब का उत्तर है :

सुणि सुआमी सचु नानकु प्रणवै अपणे मन समझाए ॥ (पन्ना ९४४)

शबद से जुड़ने के लिए अंतरमुखी होकर मन को समझाना होगा। नाम का निवास मन में ही है :

नउ निधि अंम्रितु प्रभ का नामु ॥
देही महि इस का बिस्रामु ॥
सुंन समाधि अनहत तह नाद ॥
कहनु न जाई अचरज बिसमाद ॥ (पन्ना २९३)

नाम अमृत है जो माया के तीनों गुणों के विष से ऊपर अलग है, इस अमृत-नाम खज़ाने को सद्गुणों से प्राप्त किया जाता है।

त्रै गुण रहत रहै निरारी साधिक सिध न जानै ॥
रतन कोठड़ी अंम्रित संपूरन सतिगुर कै खजानै ॥ (पन्ना ८८३)

यह अमूल्य खज़ाना उसे ही प्राप्त होता है जिस पर गुरु कृपा करता है, कृपा तब होती है जब जिज्ञासु पूर्ण समर्पित हो गुरु-शबद से जुड़ता है :

हरि जीउ गुफा अंदरि रखि कै वाजा पवणु वजाइआ ॥
वजाइआ वाजा पउण नउ दुआरे परगटु कीए दसवा गुपतु रखाइआ ॥
गुरदुआरै लाइ भावनी इकना दसवा दुआरु दिखाइआ ॥
तह अनेक रूप नाउ नव निधि तिस दा अंतु न जाई पाइआ ॥ (पन्ना ९२२)

शबद श्रवण, मनन कर, अंदर से नाम की पहचान प्राप्त कर जीव दुखों से निवृत्त हो जाता है और सदीवी स्थायी आनंद का पात्र बनता है :

तिना अनंदु सदा सुखु है जिना सचु नामु आधारु ॥
गुर सबदी सचु पाइआ दूख निवारणहारु ॥ (पन्ना ३६) ❁

बिनु सबदै जगु भूला फिरै . . .

-डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ*

शबद-गुरु किसी भौतिक आकार का नाम नहीं यह एक ऐसा विचार और दर्शन है जिसे आत्मसात करना वास्तव में पारब्रह्म को पा लेना है। एक ऐसी नवेली दृष्टि है जो बुद्धि की जड़ता को समाप्त करके तन और मन दोनों को आह्लादित कर देने वाली एवं तरंगित आत्मा को शाश्वत सत्य से जोड़ देने वाली है। शाश्वत सत्य अर्थात परमात्मा जिसने इस सृष्टि की रचना की और स्वयं को सृष्टि के कण-कण में व्याप्त कर दिया। शबद-गुरु सिक्ख धर्म दर्शन की आत्मा है और यह आत्मा श्री गुरु ग्रंथ साहिब में निवास करती है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का संयोजन श्री गुरु अरजन देव जी ने किया और प्रथम स्वरूप को श्री हरिमंदर साहिब में प्रतिष्ठित करके सच की भक्ति का मार्ग खोल दिया। समयानुकूल श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरु की पदवी पर आसीन करने का महान कार्य श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा सम्पन्न हुआ। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का गुरगद्दी पर आसीन होना परिस्थितिजन्य अथवा कोई तात्कालिक निर्णय नहीं, गुरु साहिब की सुविचारित योजना की परिणिति ही था। इसके स्पष्ट संकेत श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा रचित बाणी 'बचित्र नाटक' में मिलते हैं :

जब पहिले हम स्रिसटि बनाई ॥
दईत रचे दुसट दुखदाई ॥
ते भुज बल बवरे ह्वै गए ॥
पूजत परम पुरख रहि गए ॥६॥
ते हम तमकि तनक मो खापे ॥
तिन की ठउर देवता थापे ॥
ते भी बलि पूजा उरझाए ॥
आपन ही परमेसर कहाए ॥७॥ *(बचित्र नाटक)*

उपरोक्त वचनानुसार परमात्मा ने जब सृष्टि बनाई तो सबसे पहले दैत्य बनाये। ये दैत्य अपने अपार शारीरिक बल के अहं के कारण इतने बुद्धिभ्रष्ट हो गये कि परमात्मा को भूल ही गये। उनके कृत्यों पर परमेश्वर ने कुपित होकर पल भर में उनका नाश कर दिया। फिर परमात्मा ने देवता बनाये। देवताओं ने भी बलि चढ़ाने जैसे आडंबरों में उलझ कर परमेश्वर को विस्मृत कर दिया और स्वयं ही परमेश्वर बन बैठे। ऐसे जितने भी लोग आये परमात्मा के संदेश का प्रसार करने के स्थान पर स्वयं ही परमात्मा बनते गये और उन्होंने अपनी पूजा कराई। इसके पश्चात परमात्मा ने ऐसे साक्ष्य बनाये जो उसके अस्तित्व को प्रमाणित कर सकें। ये साक्ष्य थे- पृथ्वी, सूर्य, जल, हवा अग्नि आदि। इन साक्ष्यों की भी पूजा होने लगी। सिद्ध, साधु-जन आदि जिन्हें भी थोड़ा ज्ञान हुआ अपना-अपना पंथ चलाने लगे। पारब्रह्म को कोई भी नहीं जान पाया।

सभ अपनी अपनी उरझाना ॥
पारब्रहम काहू न पछाना ॥
तप साधत हरि मोहि बुलायो ॥
इम कहि कै इह लोक पठायो ॥२८॥
मैं अपना सुत तोहि निवाजा ॥

*ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, मो: ९४१५९-६०५३३

पंथ प्रचुर करबे कहु साजा ॥
जाहि तहां तै धरमु चलाइ ॥
कबुधि करन ते लोक हटाइ ॥२९॥

(बचित्र नाटक)

परमात्मा ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को अपना पुत्र अर्थात अपने गुणों का उत्तराधिकारी बनाकर इस विशेष कार्य के लिए पृथ्वी पर भेजा कि उनके पावन संदेश का व्यापक प्रचार-प्रसार हो सके, धर्म की स्थापना और लोगों की अज्ञानता दूर हो सके। श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरगद्दी प्रदान करना *"सभ अपनी अपनी उरझाना"* में न पड़कर लोगों को कुबुद्धि से हटाने के लिए ज्ञान का महान स्रोत उपलब्ध कराना था ताकि धर्म का राज्य स्थापित हो सके। दशम पातशाह ने अपनी बात कहने से पूर्व श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री तेग बहादर साहिब तक का यथोचित वर्णन किया :

तिन बेदीअन की कुल बिखे
प्रगटे नानक राइ ॥
सभ सिक्खन को सुख दए
जह तह भए सलाइ ॥४॥
चौपई॥ तिन इह कल मो धरमु चलायो ॥
सभ साधन को राहु बतायो ॥
जो तां के मारग महि आए ॥
ते कबहूं नही पाप संताए ॥५॥ . . .

(बचित्र नाटक)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के अनुसार श्री गुरु नानक साहिब ने संसार में धर्म की प्रतिष्ठा की और सबको परमात्मा का मार्ग दिखाया। उनकी दिखाई राह पर चलने वालों का कल्याण हुआ और ऐसे लोग पाप-कर्मों से विरत हो गए। जिस तरह श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री गुरु तेग बहादर साहिब तक ने कभी भी अपनी पूजा नहीं कराई और लोगों को सीधे परमेश्वर से जोड़ा। उसी धारा पर चलते हुए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भी अपनी पूजा के प्रति वर्जना की :

जो हम को परमेसर उचरि हैं ॥
ते सभ नरक कुंड महि परिहैं ॥
मो कौ दास तवन का जानो ॥
या मै भेद न रंच पछानो ॥३२॥

(बचित्र नाटक)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने स्वयं को परमात्मा का दास बताया और सुचेत किया कि इस बात में तनिक भी संदेह न किया जाये।

श्री गुरु नानक साहिब तथा अन्य गुरु साहिबान द्वारा बाणी रचना और उस बाणी में परमात्मा की महिमा का वर्णन करते हुए सद्गुणों के जरिए परमात्मा तक पहुंचने का मार्ग दिखाना एक लंबी, अनवरत और परिपक्व प्रक्रिया थी, शबद-गुरु के अस्तित्व में आने की। शबद कैसे शिरोमणि और गुरु है, शबद का गुरसिक्ख के जीवन में क्या महत्त्व है, यह तो उसी रात तय हो गया जब श्री गुरु ग्रंथ साहिब का श्री हरिमंदर साहिब में प्रथम प्रकाश कर श्री गुरु अरजन देव जी सेवारत होकर ज़मीन पर सोये। यह एक प्रतीकात्मक संदेश था आने वाले युगों के लिए कि मुक्ति की राह शबद-गुरु में ही है।

परमात्मा गुणों का महासागर है और गुरु-शबद में उन्हीं गुणों की महिमा है ताकि परमात्मा के प्रत्यक्ष दर्शन हो सकें। जो इस शबद से नहीं जुड़ा हुआ है, वह राह से भटका हुआ और बुद्धि से विचलित है।

गगनंतरि वासिआ गुण परगासिआ गुण महि गिआन धिआनं ॥
नामु मनि भावै कहै कहावै ततो ततु वखानं ॥
सबदु गुर पीरा गहिर गंभीरा बिनु सबदै जगु

बउरानं ॥
पूरा बैरागी सहजि सुभागी सचु नानक मनु मानं ॥ (पन्ना ६३५)

सांसारिक मोह-माया एवं विकारों से ऊपर उठकर परमात्मा के गुणों से जुड़ना उन्हें अपने जीवन में उतारना तथा अन्य को भी इसके लिए प्रेरित करना ज्ञान-ध्यान अर्थात सच्चा धर्म है। शबद इन्हीं गुणों की गूढ़ और सारगर्भित व्याख्या है, इसी लिए सर्वश्रेष्ठ और पूजनीय है। गुरु-शबद के बिना जीवन संकटों का पहाड़ है। गुरु-शबद विकार रहित तथा सहज बनाने वाला है और यही स्थिति परमात्मा के अनुकूल और उसे प्रिय है। गुरु-शबद सदैव परमात्मा से जोड़े रखता है।

सभि गुणवंती आखीअहि मै गुणु नाही कोइ ॥
हरि वरु नारि सुहावणी मै भावै प्रभु सोइ ॥
नानक सबदि मिलावड़ा ना वेछोड़ा होइ ॥
(पन्ना ५६)

शबद-गुरु मानव जीवन में ऐसी स्थिति लाने में समर्थ है कि मनुष्य अहंकार रहित हो जाता है। उसके श्रेष्ठ कर्मों के लिए यदि उसकी सराहना होती है तब भी वह विनम्र रहते हुए विचार करता है कि उसमें तो कोई गुण है ही नहीं। वह जानता है कि यह प्रशंसा तो परमात्मा से जुड़ने के कारण है। सारा संसार सुख-दुख के फेर में पड़ा हुआ है। गुरु-शबद से जुड़कर सुख-दुख एक समान हो जाते हैं।

सुख कउ मागै सभु को दुखु न मागै कोइ ॥
सुखै कउ दुखु अगला मनमुखि बूझ न होइ ॥
सुख दुख सम करि जाणीअहि सबदि भेदि सुखु होइ ॥ (पन्ना ५७)

सच्चा सुख गुरु-शबद को जानने-समझने और उसे अंगीकार करने में है। गुरु-शबद मनुष्य को मूलत: बदल देने वाला है।

सबदि रते से निरमले तजि काम क्रोधु अहंकारु ॥
नामु सलाहनि सद सदा हरि राखहि उर धारि ॥
सो किउ मनहु विसारीऐ सभ जीआ का आधारु ॥
(पन्ना ५८)

गुरु-शबद की महिमा है कि सारे विकार दूर हो जाते हैं और मन निर्मल हो जाता है जिससे मनुष्य परमेश्वर की स्तुति में लीन रहता है और उसे अपने मन में बसाये रखता है। उसे ज्ञात है कि परमात्मा उसके ही नहीं सभी जीवों के जीवन का भी आधार है। यह आधार मनुष्य के जीवन में स्थायी परिवर्तन लाता है।

सबदि मरै सो मरि रहै फिरि मरै न दूजी वार ॥
सबदै ही ते पाईऐ हरि नामे लगै पिआरु ॥
बिनु सबदै जगु भूला फिरै मरि जनमै वारो वार ॥
(पन्ना ५८)

गुरु-शबद मोक्ष का मार्ग है जिससे मनुष्य आवागमन के फेर से उबर जाता है और अपने प्रेम से परमात्मा को पा लेता है। गुरु-शबद से विमुख वे भटके हुए लोग हैं जो आवागमन के के चक्र में फंसे रहते हैं।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब को परंपरागत उसी विधि के अनुसार जैसे श्री गुरु नानक साहिब के बाद अन्य नौ गुरु साहिबान गुरगद्दी पर आसीन हुए थे, माथा टेका और गुरगद्दी पर आसीन किया। उन्होंने समूह संगत को श्री गुरु ग्रंथ साहिब को ही गुरु मानने का आदेश दिया। आज वही सत्कार-मर्यादा श्री गुरु ग्रंथ साहिब के साथ निभाही जा रही है जो सत्कार श्री गुरु नानक साहिब से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का था।

गुरु-शबद सहज अवस्था देने वाला, निर्मल और विकारों से विरत करने वाला और मोक्ष का मार्ग दिखाकर परमात्मा से मेल कराने वाला

है। किस तरह आती है, निर्मलता और कैसे मिलता है, मोक्ष? श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश और पाठ तो हर रोज़ विश्व के गुरुद्वारों और हज़ारों गुरसिक्खों के घरों में किया जाता है। गुरु-शबद का सत्कार प्रकाश करने और पाठ कर लेने तक ही सीमित नहीं है।

खटु सासत बिचरत मुखि गिआना ॥
पूजा तिलकु तीरथ इसनाना ॥
निवली करम आसन चउरासीह इन महि सांति न आवै जीउ ॥२॥
अनिक बरख कीए जप तापा ॥
गवनु कीआ धरती भरमाता ॥
इकु खिनु हिरदै सांति न आवै जोगी बहुड़ि बहुड़ि उठि धावै जीउ ॥३॥ (पन्ना ९८)

पूजा, पाठ, तिलक, तीर्थ-स्नान आदि सारी विधियां मनुष्य की बनाई प्रक्रियाएं मात्र हैं, जिन्हें यंत्रवत किया है। फल तो है परमात्मा को जानना, उसके सच्चे स्वरूप को पहचानना। परमात्मा का मार्ग तो परमात्मा स्वयं ही दिखाता है।

तउ किरपा ते मारगु पाईऐ ॥ ॥
प्रभ किरपा ते नामु धिआईऐ ॥
प्रभ किरपा ते बंधन छुटै ॥
तउ किरपा ते हउमै तुटै ॥१॥
तुम लावहु तउ लागह सेव ॥
हम ते कछू न होवै देव ॥ (पन्ना १८०)

धर्म के नाम पर किए जाने वाले ज्यादातर आडंबर-पाखंड, विधि-विधान अहंकार को बढ़ाने वाले हैं। फल इस भावना से मिलता है कि हम तो कुछ भी करने योग्य नहीं हैं, परमात्मा की कृपा होगी तो राह दिखेगी, नाम से जुड़ेंगे, माया-विकारों से दूर होंगे और सेवारत हो सकेंगे। एक सांसारिक व्यक्ति का सहयोग पाने के लिए हम उसकी पसंद-न पसंद जानने का प्रयत्न करते हैं और उसकी पसंद के अनुसार कार्य करते हैं ताकि वह हम पर प्रसन्न हो सके। वह तो परमात्मा है, सर्वशक्तिमान। उस सर्वगुण, सर्वसमर्थ परमात्मा की कृपा बिना उसके मनोनुकूल कार्य किए कैसे पायी जा सकती है। वह तो गुणों का अटूट भंडार है और वही मुक्ति का दाता है। स्पष्टत: उसे वही कर्म प्रिय है जो सद्गुणी है और वही राह जो मोक्ष की ओर ले जाने वाली हो :

जो तुधु भावै सो निरमल करमा ॥
जो तुधु भावै सो सचु धरमा ॥
सरब निधान गुण तुम ही पासि ॥
तूं साहिबु सेवक अरदासि ॥३॥ (पन्ना १८०)

परमात्मा को क्या भला लगता है, उसके गुणों की क्या व्याख्या है इसे परमात्मा का दास बनकर गुरु-शबद से समझा जा सकता है। शबद-गुरु से जुड़ना है तो सहजता आवश्यक है जो मन से उपजती है न कि यंत्रवत प्रक्रियाओं से :

सतिगुरु सहजै दा खेतु है जिस नो लाए भाउ ॥
नाउ बीजे नाउ उगवै नामे रहै समाइ ॥
(पन्ना ९४७)

शबद-गुरु की शरण में गुरसिक्ख मन में भाव धारण करके सहजता से जाता है और वहां नाम का दान ही मांगता है। नाम-दान मिलने पर नाम में ही रच जाता है। भावार्थ कि परमात्मा को पाना चाहता है और परमात्मा में ही रच जाता है। इस तरह यह गुरु मर्यादा हो जाती है कि जब भी श्री गुरु ग्रंथ साहिब के समक्ष मस्तक निवायें, सारे विकार, संवेग त्याग कर सहज भाव से और परमात्मा को पाने की आशा में निवाएं। परमात्मा किसी अन्य भक्ति से नहीं मिल सकता। यही एक राह है :

आवहु संत पिआरिहो अकथ की करह कहाणी ॥

करह कहाणी अकथ केरी कितु दुआरै पाईऐ ॥
तनु मनु धनु सभु सउपि गुर कउ हुकमि मंनिऐ पाईऐ ॥
हुकमु मंनिहु गुरू केरा गावहु सची बाणी ॥
कहै नानकु सुणहु संतहु कथिहु अकथ कहाणी ॥
(पन्ना ९१८)

गुरु-शबद से साधसंगत में जुड़ना अधिक फलदायक है। अन्य किसी विधि से परमात्मा नहीं मिल सकता। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शरण में जाना है तो संपूर्ण समर्पण के साथ तन, मन, धन हर प्रकार के अहं से रहित होकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दिए गए उपदेशों को आज्ञा समझकर मानना है। सतिगुरु के हुक्म को मानने से ही परमात्मा प्राप्त होगा और सच दृढ़ हो सकेगा। परमात्मा के गुणों का वर्णन नहीं किया जा सकता, वे अकथ्य हैं, श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शरण में आकर परमात्मा का भेद भी समझ में आ जाता है।

वस्तुतः सतिगुरु और परमेश्वर में कोई भेद नहीं है।

गुरु परमेसरु एको जाणु ॥
जो तिसु भावै सो परवाणु ॥१॥रहाउ॥
गुर चरणी जा का मनु लागै ॥
दूखु दरदु भ्रमु ता का भागै ॥
गुर की सेवा पाए मानु ॥
गुर ऊपरि सदा कुरबानु ॥२॥ (पन्ना ८६४)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी परमात्मा की बाणी है और इसे परमात्मा का हुक्म समझ कर ही ग्रहण करना है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अनुसार जीवन का व्यवहार रखकर ही परमात्मा की कृपा पायी जा सकती है। इससे दुख, दरिद्रता और भ्रमों का निवारण हो जाता है और जीवन आनंद से भर उठता है। यही जीवन की सच्ची पूंजी है जो काम आती है। ऐसे सतिगुरु पर तो गुरसिक्ख सदा-सर्वदा अपने आप को न्यौछावर करता है। ❁

कविता

सच्ची किरत देती सुख

न कर हेराफेरी तू, सादा जीवन गुज़ार !
याद रख सच्चा सौदा, कर सच्चा व्यापार !
क्यों करता है तू सदा, झूठ का कारोबार ?
झूठ नहीं बन सकता, मुक्ति का आधार !
सच्ची किरत से ही मिलता है सच्चा संतोष,
करके नेक कमाई तू, कर ले बेड़ा पार !
याद रख गुरु साहिबान के अनमोल वचन,
नाम जपने, किरत करने, वंड छकने का आधार !
गुरुओं, संतों, भक्तों ने भी की सच्ची किरत,
उन सबने बढ़ाया सच्ची किरत का सत्कार !
भाई लालो जी का जीवन हमें प्रेरणा देता,
जो करे नेक कमाई, उसे मिलता गुरु-प्यार !
बुरे कामों की कमाई होती ज़हर समान,
ज़हर खा फ़ले-फूलेगा, न तेरा परिवार!
ऐ मानव! ईमानदारी से धन जुटाया कर,
और गाया कर धन्य निरंकार! धन्य निरंकार!!
झूठी शानो-शौकत का मोह तू छोड़ दे,
गुरु ग्रंथ साहिब का हुक्म मान, बन जा सचिआर !

-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर', बी-एक्स ९२५, मुहल्ला संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, मो. ९८७२२-५४९९०

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में बाईस वारें व नौं धुनियां

*-सिमरजीत सिंघ**

'वार' पंजाबी लोक साहित्य के काव्य रूप का विलक्षण अंग है। यह पंजाबियों का पसंदीदा साहित्य है। सेनिकों, योद्धाओं में वीर रस पैदा करने के लिए इस साहित्य का विशेष योगदान होता है। भट्टों व कवियों द्वारा रचित वारों को ढाडी बहुत ही जोशीले ढंग से गाते हैं, जिसे सुनने से मनुष्य जोश से भर जाता है। वो निडर होकर शेर की तरह रणक्षेत्र में जा गरजता है। परंपरा के अनुसार वारें पउड़ियों में लिखी जाती हैं और पउड़ी के दो रूप बरते जाते हैं- निशानी छंद वाला तथा सिरखंडी छंद वाला। इसकी भाषा जनभाषा होती है तथा युद्ध का वातावरण सृजने के लिए तल्ख व कठोर धुनियों वाले वर्णों का प्रयोग किया जाता है। इस काव्य रूप का आरंभ कब हुआ इसके बारे में कुछ भी कहना मुश्किल है। इसके पुरातन होने का प्रमाण श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी से मिल जाता है।

शूरवीर योद्धाओं के मैदान-ऐ-जंग में किए वीरता-भरपूर किसी एक कारनामे को दिल छूह लेने वाली कविता द्वारा पेश किया जाता आ रहा है, वार में किसी योद्धे के सारे जीवन को ब्यान नहीं किया जाता बल्कि एक घटना को ही ब्यान किया जाता है। वार का विशेष गुण यह होता है कि इसमें दो विरोधी शक्तियों की टक्कर होती है। लोक वारों में जहां यह टक्कर बाहरमुखी होती हैं अर्थात दो योद्धाओं में होती है वहीं यह टक्कर आध्यात्मिक वारों में अंर्तमुखी अर्थात मनुष्य के अंदर चल रही बुराइयों को फ़तहि करने के लिए दर्शायी गई है। इन आध्यात्मिक वारों में मनुष्य को सामाजिक, राजनीतिक तथा सभ्याचारक प्रकरण में सही दिशा प्रदान करके उसके इखलाकी जीवन को ऊंचा उठाया जाता है। सिक्ख साहित्य में यह काव्य-रूप बहुत प्रचलित है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में २२ वारें दर्ज हैं।

गुरमति में वारों का आगाज़ सिक्ख धर्म के प्रवर्त्तक श्री गुरु नानक देव जी ने किया। श्री गुरु नानक देव जी के समय भारत की जनता हाकिमों के जुल्म सहन कर बुज़दिल व निर्बल हो चुकी थी। काबुल से छोटे-छोटे जत्थों के रूप में हमलावर हिंदोस्तान में आकर लूटपाट कर रहे थे। उनको रोकने की किसी में हिम्मत नहीं थी। क्षत्रिय जिनका धर्म देश की रक्षा करना था, उन्होंने अपना धर्म छोड़कर रहन-सहन मलेछों की तरह बना लिया।

खत्रीआ त धरमु छोडिआ मलेछ भाखिआ गही ॥
(पन्ना ६६३)

श्री गुरु नानक देव जी इस बात से भली भांति वाकिफ़ थे कि हिंदोस्तानियों को बहादुर बनाकर जुल्म का मुकाबला करना पड़ेगा। इसके लिए श्री गुरु नानक देव जी ने सिक्खों को उपदेश दिया :

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥
सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥
इतु मारगि पैरु धरीजै ॥
सिरु दीजै काणि न कीजै ॥ (पन्ना १४१२)

श्री गुरु नानक देव जी ने सिक्खों में वीर रस पैदा करने के लिए समयानुकूल ३ वारों की

संपादक, गुरमति ज्ञान एवं गुरमति प्रकाश

गुरबाणी में रचना की। श्री गुरु अमरदास जी ने ४ वारें, श्री गुरु रामदास जी ने ८ वारें तथा श्री गुरु अरजन देव जी ने ६ वारें तथा एक वार भाई सत्ता जी व भाई बलवंड जी ने मिलकर लिखी। इन वारों में से 'बसंत की वार महला ५' तथा 'सते बलवंड की वार' को छोड़कर अन्य सभी वारों में पउड़ियां के साथ सलोक भी हैं जो पउड़ी के भावार्थ से मिलते-जुलते हैं। इन वारों के शीर्षक गुरु साहिब ने रागों के नाम पर दिए हैं। जिससे अभिप्राय है कि इस वार को इस राग में गायन करना है।
१. वार माझ की महला १ : संगीत शास्त्रियों के विचार के अनुसार राग 'माझ' पंजाब के माझा क्षेत्र की लोक-धुन से विकसित हुआ है। गुरु साहिबान के समकालीन संगीत ग्रंथों में माझ राग का उल्लेख बिलकुल नहीं मिलता। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि गुरु साहिबान ने जहां लोक-काव्य रूपों को अपनी बाणी में बरता वहीं उन्होंने लोक-धुनों पर आधारित रागों को भी अपनाया।

श्री गुरु नानक देव जी द्वारा लिखी इस वार में २७ पउड़ियां एवं ६३ सलोक हैं। इन में से ४६ सलोक श्री गुरु नानक देव जी के हैं व १२ सलोक श्री गुरु अंगद देव जी के हैं ३ सलोक श्री गुरु अमरदास जी के व २ सलोक श्री गुरु रामदास जी के हैं। इस वार के रचना-काल तथा रचना-स्थान संबंधी कोई निश्चित प्रमाण नहीं मिलता। वैसे 'पुरातन जनमसाखी' की साखी ४३ में इस वार के दक्षिण की उदासी के समय रचने का ज़िक्र मिलता है। इस वार की पउड़ी में श्री गुरु नानक देव जी के दार्शनिक व धार्मिक विचारों का प्रकटावा हुआ है। इस वार की प्रत्येक पउड़ी आठ-आठ तुकों की है परंतु इनमें मात्रा संबंधी एकरूपता नहीं है। सलोकों की पउड़ी के अनुसार बांट एक समान नहीं है। दो से आठ तक सलोक दर्ज मिलते हैं। सलोकों की तुकों में गिनती भी एक समान नहीं हैं। २ से लेकर २४ तुकों के सलोक दर्ज हैं। भाषा की दृष्टि से यह वार पंजाबी के ज्यादा समीपस्थ है। अरबी व फ़ारसी भाषा का भी इसमें प्रयोग किया गया है।
२. आसा की वार महला १ : 'आसा' पंजाब का प्रसिद्ध व लोकप्रिय राग है। आसा राग गुरमति संगीत पद्धति का महत्त्वपूर्ण राग है। सिक्ख धर्म में इसके गायन का समय अमृत वेला (प्रभात) तथा शाम है। सुबह के समय इस राग में 'आसा की वार' नामक विशेष बाणी के गायन की प्रथा है। शाम को 'सो दरु की चौकी' में 'सो दरु' का शबद इसी राग में गाया जाता है। यहां यह तथ्य विशेष वर्णनयोग्य है कि भारतीय संगीत की दोनों पद्धतियों में कोई भी राग सुबह व शाम के समय नहीं गाया जाता (मौसमी रागों से संबंधित मौसम के बिना) परंतु इस राग का गायन केवल गुरमति संगीत पद्धति में ही दोनों समय किया जाता है।

इसका पंजाब के लोक-धुन 'टुंडे असराजे की धुनी' के साथ निकट संबंध माना जाता है। गुरु साहिबान ने इसको मुख्य राग के रूप में अंकित किया है।

'आसा की वार' में श्री गुरु नानक देव जी ने अपने समय के राजसी, धार्मिक हालातों संबंधी अपना अनुभव प्रकट किया है। यह श्री गुरु नानक देव जी द्वारा उच्चारण की गई लंबी बाणियों में से एक है। इस वार में २४ पउड़ियां हैं। इन पउड़ियों को समझने के लिए ५९ सलोक दर्ज किए गए हैं। इन सलोकों में ४४ सलोक श्री गुरु नानक देव जी के हैं तथा १५ सलोक श्री गुरु अंगद देव जी के हैं। इस वार द्वारा श्री गुरु नानक देव जी ने बताया है कि मनुष्य

के अंदर पांच विकारों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) से हमेशा लड़ाई होती रहती है। इस वार में दिए सलोकों द्वारा गुरु जी मनुष्य को भला मनुष्य बनने की प्रेरणा देते हैं। इन सलोकों में प्रकृति व सृष्टि का विवरण पेश कर मनुष्य की आत्मिक बुद्धि पर बल दिया है। पाखंडवाद पर गहरी चोट की गयी है। 'आसा की वार' के अनुसार समाज ऐसा होना चाहिए जिसमें सभी लोग हर प्रकार का काम कर सकते हों। कामों की बांट जन्म पर आधारित न हो ताकि जात-पात की तंगदिली से ऊपर उठा जा सके। जत-सत को धारण करने वाला समाज हो, जिसमें स्त्री को पूर्ण सम्मान प्राप्त हो। 'आसा की वार' मनुष्य को सचिआर जीवन जीने का ढंग बताती है तथा वहमों-भ्रमों का खंडन कर मनुष्य को इससे आज़ाद होकर चलने का पथ दर्शाती है।

३. मलार की वार महला १ : 'मलार' राग के बारे में श्री गुरु अमरदास जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब में फरमान किया है :

मलारु सीतल रागु है हरि धिआइऐ सांति होइ ॥
(पन्ना १२८३)

इसके बारे में लिखा है कि बहुमूल्य मोती नाक में, मुंह में पाठ तथा चमकता चेहरा व चढ़ती जवानी जिस पर चंदन मल-मलकर खुशबू पैदा की हो तथा रेशमी कपड़े अर्थात सभी ओर उत्साह का वातावरण। अतः 'राग मलार' में बाणी की बारिश होती है तथा जिसने पी लिया वो शांत-चित हो गया :

साची बाणी मीठी अंम्रित धार ॥
जिनि पीती तिसु मोख दुआर ॥ (पन्ना १२७५)

यह वार श्री गुरु नानक देव जी द्वारा उच्चारण की हुई है। इस वार की कुल २८ पउड़ियां है जिनमें से १ पउड़ी श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा उच्चारण की हुई है तथा अन्य २७ पउड़ियां श्री गुरु नानक देव जी की हैं। इस वार में कुल ५८ सलोक संकलित किए गए हैं। इस वार की प्रत्येक पउड़ी आठ-आठ तुकों की है किंतु इसके आकार में समानता नहीं है। इनमें दर्ज ५८ सलोकों में से २४ सलोक श्री गुरु नानक देव जी के, ५ सलोक श्री गुरु अंगद देव जी, २७ सलोक श्री गुरु अमरदास जी के तथा २ सलोक श्री गुरु अरजन देव जी के हैं। प्रत्येक पउड़ी के साथ २-२ सलोक हैं, सिर्फ २१वीं पउड़ी के साथ ४ सलोक हैं। सलोकों की तुकों का आकार एक समान नहीं है। २ से लेकर २६ तक सलोक मिलते हैं। इस वार की पउड़ी की भाषा का स्वरूप पूरबी पंजाबी वाला है, परंतु सलोक लगभग केंद्रीय पंजाबी में लिखे हुए हैं, चाहे इनके ऊपर कहीं-कहीं लहिंदी का प्रभाव है।

इस वार में श्री गुरु नानक देव जी ने कुरीतियों व कूड़ परंपराओं को त्यागकर वास्तविक धर्म-कार्य में लीन होने की भावना को प्रकट किया है। कुछ विद्वानों ने इसकी भाव सामग्री को ४ भागों में विभाजित किया है। १ से ७ तक पउड़ियां प्रभु के बारे में ८ से १६ तक नाम के बारे में, १७ से २२ तक भक्ति के बारे में तथा २३ से २८ तक पउड़ियां गुरु-शबद के बारे में हैं। परंतु ऐसी बांट अंदरूनी तत्थों से स्पष्ट नहीं होती।

४. गूजरी की वार महला ३ : 'गूजरी' एक पुरातन राग है। इसका सुरात्मिक स्वरूप करुणा रस का धारक है। जिस कारण यह गंभीर प्रकृति की भक्ति भाव वाली रचनाओं को गायन के लिए अति उपयोगी है। 'राग गूजरी' तोड़ी की किस्म है। इसी लिए कई संगीत प्रेमी इसको 'गूजरी तोड़ी' भी कहते हैं।

इस वार में कुल २२ पउड़ियां हैं। ये सभी पउड़ियां श्री गुरु अमरदास जी की उच्चारण की

हुई हैं। प्रत्येक पउड़ी में ५-५ तुकें हैं। प्रत्येक पउड़ी के साथ २-२ सलोक हैं। इनमें से केवल चौथी पउड़ी के साथ आया सलोक भक्त कबीर जी का है तथा अन्य श्री गुरु अमरदास जी के हैं। इन सलोकों की तुकों में समानता नहीं है। २ से ११ तक तुकें मिलती हैं। इस वार की भाषा साध-भाषा से प्रभावित पूरबी पंजाबी है। पउड़ियों व सलोकों में भावगत समानता है।

इस वार में गुरु जी ने फरमान किया है कि परमात्मा जगत का सृजनहार है। परमात्मा की मेहर से गुरु की प्राप्ति होती है :

प्रभ पासि जन की अरदासि तू सचा सांई ॥
चिंता छडि अचिंतु रहु नानक लगि पाई ॥
(पन्ना ५१७)

५. सूही की वार महला ३ : 'सूही' एक अप्रचलित राग है। पुरातन मध्यकालीन या आधुनिक संगीत ग्रंथों में इस राग का उल्लेख नहीं मिलता। मध्यकालीन धार्मिक ग्रंथों में से श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इस राग अधीन बाणी अंकित है। कई विद्वान 'सूहा' राग को ही सूही राग मानते हैं। 'गुरु-शबद रतनाकर महान कोश' के लेखक भाई कान्ह सिंघ नाभा इस राग के संबंध में लिखते हैं :

"सूही एक रागिनी है जिसको सूहा भी कहते हैं। यह काफी ठाठ की शाड़व रागिनी है। इसमें धैवत विवर्जित है। सूही में गंधार तथा निषाद कोमल और अन्य सुर शुद्ध हैं। वादी मद्धिम तथा शड़ज संवादी है। गाने का समय दो घड़ी दिन चढ़े है।"

इस वार में श्री गुरु अमरदास जी के १५ सलोक हैं। अन्य में से २१ सलोक श्री गुरु नानक देव जी के तथा ११ सलोक श्री गुरु अंगद देव जी के हैं। इसी तरह इसके कुल ४७ सलोक हैं। इस वार की कुल २० पउड़ियां हैं। प्रत्येक पउड़ी की ५-५ तुकें हैं। सलोकों में तुकों की समानता नहीं हैं। २ से लेकर ८ तक तुकें हैं। आम तौर पर प्रत्येक पउड़ी के साथ २-२ सलोक हैं परंतु सातवीं व पंद्रहवीं पउड़ी के साथ आए सलोकों की संख्या चार-चार है। ६वीं, ९वीं व १५वीं पउड़ी के साथ आए सलोकों की संख्या तीन-तीन है। इस वार में गुरमति के कई सिद्धांतों पर रौशनी डाली गई है।

६. रामकली की वार महला ३ : 'रामकली' बहुत ही प्रसिद्ध व हरमन प्यारा राग है। प्रभात के रागों में इसकी बहुत महानता है। रामकली राग में श्री गुरु अमरदास जी ने 'अनंदु साहिब' बाणी की रचना की है।

रामकली राग में श्री गुरु अमरदास जी द्वारा रची इस वार की कुल २१ पउड़ियां है। प्रत्येक पउड़ी में एक समान आकार वाली पांच-पांच तुकें हैं। पहली पउड़ी के बाद एक तुक 'रहाउ' वाली भी है। 'रहाउ' की व्यवस्था किसी अन्य वार में नहीं हुई है। इन पउड़ियों के साथ ५२ सलोक भी दर्ज हैं। इन सलोकों में से १९ सलोक श्री गुरु नानक देव जी के ७ सलोक श्री गुरु अंगद देव जी के तथा २४ सलोक श्री गुरु अमरदास जी के हैं। २ सलोक भक्त कबीर जी के हैं। ८वीं पउड़ी के साथ दर्ज महला ३ का सलोक भक्त फरीद जी के सलोकों में क्रमांक ५२ पर भी आया है तथा पउड़ी २ के साथ पहला सलोक भक्त कबीर जी के सलोकों में क्रमांक ६५ पर भी दर्ज हैं। सलोकों की बांट प्रत्येक पउड़ी के साथ समान रूप में नहीं हुई।

इस वार में गुरु जी ने फरमाया है कि सारी सृष्टि परमात्मा की पैदा की हुई है तथा वो खुद इसमें व्याप्त है। माया की रचना कर फिर मनुष्य को उसके जाल में फंसने से बचाता भी वो खुद ही है। सदा परमात्मा की भक्ति करके योनियों के चक्र से मुक्ति प्राप्त करनी चाहिए।

७. *मारू वार महला ३ :* 'राग मारू' एक पुरातन तथा कठिन राग है। पुरातन संगीत ग्रंथों में इसको वीर रसी राग कहा गया है। प्रचीन ग्रंथकार इसको मारुव, मारव, मारविक आदि नामों के साथ जाना हुआ अंकित करते हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इसको मारू राग ही लिखा गया है। पुरातन राग होने के कारण इसके कई रूप प्रचलित हैं जिनमें रिशभ कोमल, मद्धिम तीव्र, पंचम वर्जित तथा अन्य सभी सुर शुद्ध बरते जाते हैं। श्री गुरु अमरदास जी की रची इस वार में कुल २२ पउड़ियां हैं। प्रत्येक पउड़ी में पांच-पांच तुकें हैं अंतिम पउड़ी में छः तुकें हैं। इसके साथ ४७ सलोक भी दर्ज हैं। पउड़ी अंक २, १३ व १४ के साथ तीन-तीन सलोक हैं तथा अन्य के साथ दो-दो सलोक हैं। ४७ सलोकों में से श्री गुरु नानक देव जी के १८ सलोक श्री गुरु अंगद देव जी का १ सलोक, श्री गुरु अमरदास जी के २३ सलोक, श्री गुरु रामदास जी के ३ सलोक तथा श्री गुरु अरजन देव जी २ सलोक हैं। इस वार में अनेकों आध्यात्मिक पक्षों पर प्रकाश डाला गया है।

८. *सिरीराग की वार महला ४ :* 'सिरीराग' शाम का राग है। सिरीराग का रूप बताते हुए कहा गया है कि गहनों से लदी खूबसूरत स्त्री का है, *'सु त्रय भूखन अंग सुभ'* यह अति गर्मी तथा अति सर्दी में गाया जाता है।

प्रमाणित स्रोत हमें यह बताते हैं कि जब श्री गुरु नानक देव जी आए तो गुणों की शाम पड़ चुकी थी, लंबी रात दिख रही थी। हाथ को हाथ नहीं दिख रहा था। कोई दीया नहीं था तथा न ही कोई रोशनी थी जो जनता को अज्ञानता के अंधकार में से बाहर निकाल सकती।

सिरीराग एक प्रचीन राग है, गुरमति संगीत में इसकी विशेष जगह है। इसकी महत्ता यह है कि क्रमशः राग-विधान का आरंभ इसी राग से किया गया है। इस राग के महत्त्व को और उजागर करने के लिए श्री गुरु अमरदास जी फरमान करते हैं :

रागा विचि स्रीरागु है जे सचि धरे पिआरु ॥
(पन्ना ८३)

राग-रागिनी परंपरा के अनुसार यह राग विशेष महत्त्व का धारक है। आधुनिक थाट के अनुसार इसको पूरबी थाट के अंतर्गत रखा जाता है। इस स्वरूप से भी ज्यादा प्राचीन तथा बुजुर्ग सिक्ख कीर्तनियों में प्रचलित रहे स्वरूप में यह राग काफी थाट के अंतर्गत आता है। प्राचीन सिरीराग निश्चय ही काफी थाट के अधीन होगा। बुजुर्ग संगीत विद्वानों से प्राप्त काफी थाट का सिरी राग ही पुरातन स्वरूप है। पूरबी थाट तथा काफी थाट के सुरों का मूल रूप एक ही है। परंतु थाट के अनुसार उनका सुर-रूप तबदील कर देने से शेष नियम समान रहने पर भी सिरीराग पूरबी तथा काफी थाट के अधीन आ जाता है।

इस वार की कुल २१ पउड़ियां हैं जो श्री गुरु रामदास जी की उच्चारण की हुई हैं। ये सभी पउड़ियां पांच-पांच तुकों की हैं। प्रत्येक पउड़ी के साथ २-२ सलोक दर्ज हैं। केवल १४वीं पउड़ी के साथ तीन सलोक दर्ज हैं। इस तरह सलोकों की कुल संख्या ४३ है। इनमें से ७ सलोक श्री गुरु नानक देव जी के, २ सलोक श्री गुरु अंगद देव जी के, ३३ सलोक श्री गुरु अमरदास जी के तथा १ सलोक श्री गुरु अरजन देव जी का है। श्री गुरु रामदास जी का कोई सलोक इसमें नहीं हैं। सलोकों में तुकों की समानता नहीं है। २ से लेकर ११ तुकों तक के सलोक दर्ज हैं। पउड़ियों व सलोकों के भावार्थों में बहुत समानता है। इस वार में बताया गया है कि परमात्मा प्रत्येक जीव का प्रतिपालक है।

क्रमशः . . .

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अहंकार की निवृत्ति सम्बंधी आए उपदेश

*-डॉ. परमजीत कौर**

इस कलयुग में विकराल तृष्णा, भूख, लोभ, मोह, अहंकार तथा झूठे मान की लालसा ने मनुष्य को जकड़ा हुआ है। नाम-सिमरन द्वारा ही इन विकारों के जाल से मुक्ति प्राप्त की जा सकती है। परमात्मा के नाम का सिमरन किए बिना मनुष्य के सारे कार्य-व्यवहार मृतक के किए गए शृंगार के समान निरर्थक हैं :

नाम बिना जो पहिरै खाइ ॥
जिउ कूकरु जूठन महि पाइ ॥
नाम बिना जेता बिउहारु ॥
जिउ मिरतक मिथिआ सीगारु ॥ (पन्ना २४०)

नाम एक एहसास है, रस है। इसको पीने से अन्य सारे रस बिसर जाते हैं। मन शांत हो जाता है, तृष्णा समाप्त हो जाती है। जन्म-जन्मांतरों की प्यास बुझ जाती है :

राम रसु पीआ रे ॥
जिह रस बिसरि गए रस अउर ॥ (पन्ना ३३७)
अंम्रित नामु पीआ मनु त्रिपतिआ आघाए रसन चखा ॥
कहु नानक सुख सहजु मै पाइआ गुरि लाही सगल तिखा ॥ (पन्ना १२१२)

मनमुख परमात्मा के नाम-रस का स्वाद नहीं ले सकता क्योंकि उसके अंदर अहंकार (हउमै) का कांटा होता है। जो उसे आत्मिक जीवन के मार्ग पर चलने नहीं देता :

साकत हरि रस सादु न जाणिआ तिन अंतरि हउमै कंडा हे ॥
जिउ जिउ चलहि चुभै दुखु पावहि जमकालु सहहि सिरि डंडा हे ॥ (पन्ना १३)

मनुष्य के आत्मिक जीवन में अहंकार गहन अंधकार है। इस अंधकार का कारण अज्ञानता है। अज्ञानता के कारण मनुष्य अपने मूल प्रभु से जुड़ नहीं पाता तथा यत्र-तत्र भटकता फिरता है। वह अपना भला-बुरा भी समझ नहीं पाता :

मूलु न बूझै आपु न सूझै भरमि बिआपी अहं मनी ॥ (पन्ना ११८६)

श्री गुरु अमरदास जी समझा रहे हैं कि अहंकार का परमात्मा के नाम के साथ विरोध है। ये दोनों एक साथ हृदय में नहीं रह सकते :

हउमै नावै नालि विरोधु है दुइ न वसहि इक ठाइ ॥
हउमै विचि सेवा न होवई ता मनु बिरथा जाइ ॥ (पन्ना ५६०)

गुरु साहिब दृढ़ करवा रहे हैं कि अहंकार के अधीन भक्ति करने से मन नाम-रस में लीन नहीं होता। अंदर आत्मिक आनंद पैदा नहीं होता। इस तरह की गयी भक्ति प्रभु-दर पर कबूल नहीं होती :

हउमै विचि भगति न होवई हुकमु न बुझिआ जाइ ॥
हउमै विचि जीउ बंधु है नामु न वसै मनि आइ ॥ (पन्ना ५६०)

अहंकारी मन के पीछे चलता हुआ मनुष्य अपना आदर खो बैठता है :

अहंकारु करहि अहंकारीआ विआपिआ मन की

६२०, गली नं. २, छोटी लाइन, संतपुरा, यमुनानगर- १३५००१ (हरियाण); मो. ९८१२३-५८१८६

मति ॥
तिनि प्रभि आपि भुलाइआ ना तिसु जाति न पति ॥
(पन्ना ४२)

अहंकार ग्रस्त जीव स्वयं को कर्त्ता समझता है। परमात्मा से अपना अलग अस्तित्व बनाकर भ्रम में पड़ा रहता है। वह यह नहीं समझता कि उसका अपना तो कुछ है ही नहीं। उसका शरीर, बुद्धि सब परमात्मा द्वारा दिए गए हैं। उसके पास जो धन-पदार्थ महल आदि हैं जिन पर वह अभिमान करता है, सब परमात्मा की कृपा से उसे प्राप्त हैं। वह इस वास्तविकता को न समझता हुआ अहंकार के अधीन भक्ति करता है, जिसका फल प्राप्त नहीं होता। श्री गुरु रामदास जी का कथन है :

विचि हउमै सेवा थाइ न पाए ॥
जनमि मरै फिरि आवै जाए ॥ (पन्ना १०७१)

अहंकार एक बड़ा रोग है। इस रोग से ग्रस्त जीव मानसिक अशांति तथा तनावपूर्ण जीवन व्यतीत करता है :

हंउमै अंदरि खड़कु है खड़के खड़कि विहाइ ॥
हंउमै वडा रोगु है मरि जंमै आवै जाइ ॥
(पन्ना ५९२)

श्री गुरु नानक देव जी के शब्दों में अहंकार से पैदा होने वाले आत्मिक रोग बहुत बुरे हैं। मैं तो संसार में जिधर देखता हूं उधर अहंकार की पीड़ा ही नज़र आती है :

नानक हउमै रोग बुरे ॥
जह देखां तह एका बेदन आपे बखसै सबदि धुरे ॥
(पन्ना ११५३)

अहंकार का कारण है माया का मोह। माया के मोह में फंसा हुआ मनुष्य केवल अपने आप के साथ जुड़ा रहता है। वह अपने एश्वर्य, सम्पत्ति, मान, सत्कार को देख-देखकर अहंकार कर बैठता है। प्रभु के नाम के साथ उसका प्रेम नहीं बनता। गुरबाणी को सुनते, पढ़ते हुए वह रस विभोर नहीं होता :

जिचरु इहु मनु लहरी विचि है हउमै बहुतु अहंकारु ॥
सबदै सादु न आवई नामि न लगै पिआरु ॥
सेवा थाइ न पवई तिस की खपि खपि होइ खुआरु ॥ (पन्ना १२४७)

अहंकार एक दीर्घ रोग है तथा माया का मोह पुराना रोग है :

अहंबुधि बहु सघन माइआ महा दीरघ रोगु ॥
(पन्ना ५०२)

जब तक अहंकार है, तृष्णा का दरिया है, अशांति है, गिरावट है, परमात्मा से दूरी है तब तक मैं की भावना खत्म होकर सब कुछ तू है वाली अवस्था नहीं बनती। श्री गुरु नानक देव जी का फरमान है :

हउ मै करी तां तू नाही तू होवहि हउ नाहि ॥
(पन्ना १०९२)

श्री गुरु अरजन देव जी समझा रहे हैं कि परमात्मा हमारे बहुत निकट है पर बीच में अहंकार की दीवार खड़ी है, अज्ञानता का अंधकार है। जब अहंकार की दीवार गिर पड़ती है तो प्रभु अपने अंदर ही दिखाई देने लगता है :

हउ हउ भीति भइओ है बीचो सुनत देसि निकटाइओ ॥
भांभीरी के पात परदो बिनु पेखे दूराइओ ॥
(पन्ना ६२४)

प्रश्न यह उठता है कि अहंकार की निवृत्ति कैसे हो सकती है ? वास्तव में अहंकार को अच्छी तरह समझे बिना यह रोग दूर नहीं किया जा सकता। जब जीव को यह एहसास हो जाता है कि वह परमात्मा से टूटा हुआ है तथा अपनी अलग हदबंदी में कैद है। तो उसे परमात्मा के दर का पता मिल जाता है :

हउमै बूझै ता दरु सूझै ॥ (पन्ना ४६६)

श्री गुरु अरजन देव जी के मत में संतजन मनुष्य की अहंकार निवृत्ति में सहायक होते हैं। आप जी का कथन है-- हे संतो! मुझे कोई ऐसा इलाज बताओ जिससे मैं अपने अंदर से अहंकार दूर कर सकूं, मेरे अंदर से मोह नष्ट हो जाये, मेर-तेर वाली भावना दूर हो जाए, माया वाली पकड़ समाप्त हो जाए, जिस इलाज से परमात्मा को अपने निकट देख सकूं :

बिनसै मोहु मेरा अरु तेरा बिनसै अपनी धारी ॥१॥
संतहु इहा बतावहु कारी ॥
जितु हउमै गरबु निवारी ॥१॥रहाउ॥
सरब भूत पारब्रहमु करि मानिआ होवां सगल रेनारी ॥२॥
पेखिओ प्रभ जीउ अपुनै संगे चूकै भीति भ्रमारी ॥३॥
(पन्ना ६१६)

गुरु साहिब समझाते हैं कि परमात्मा का नाम-सिमरन ही ठोस इलाज है :

अउखधु नामु निरमल जलु अंम्रितु पाईऐ गुरू दुआरी ॥ (पन्ना ६१६)

नाम को प्राप्त करने के लिए गुरु की शरण लेनी पड़ती है। जो गुरु के सम्मुख रहता है वह अंदर से अहंकार नष्ट कर लेता है :

काइआ अंदरि हउमै मेरा ॥
जंमण मरणु न चूकै फेरा ॥
गुरमुखि होवै सु हउमै मारे सचो सचु धिआवणिआ ॥ (पन्ना १२६)

हमारे लिए गुरबाणी ही गुरु है। गुरु की शरण में आने का भाव है गुरु-शबद द्वारा बताए गए सिद्धांतों के अनुसार जीवन को बनाना। गुरु के शबद के अनुसार जीवन ढालने से अहंकार दूर हो जाता है :

गुर सबदी चूकै अभिमानु ॥ (पन्ना १२५९)

मन नाम-रस में लीन हो जाता है। श्री गुरु नानक देव जी समझाते हैं कि यह दात झूठ या पाखंड से प्राप्त नहीं होती :

हउमै गरबु जाइ मन भीनै ॥
झूठि न पावसि पाखंडि कीनै ॥
बिनु गुर सबद नही घरु बारु ॥
नानक गुरमुखि ततु बीचारु ॥ (पन्ना ९०६)

श्री गुरु अमरदास जी दृढ़ करवा रहे हैं कि वह मन अपवित्र है जिसको अहंकार की मैल लगी हुई है। तीर्थ स्नान आदि से यह मैल दूर नहीं होती। यदि मनुष्य का हृदय गुरु-शबद से धोया जाये भाव गुरु-शबद अनुसार चलकर अंदर से अवगुण समाप्त कर दिए जाएं तो मन पवित्र हो जाता है, अहंकार की मैल समाप्त हो जाती है :

सबदु बुझै सो मैलु चुकाए ॥
निरमल नामु वसै मनि आए ॥
सतिगुरु अपना सद ही सेवहि हउमै विचहु जाई हे ॥
(पन्ना १०४४)

काइआ कुसुध हउमै मलु लाई ॥
जे सउ धोवहि ता मैलु न जाई ॥
सबदि धोपै ता हछी होवै फिरि मैली मूलि न होई हे ॥
(पन्ना १०४५)

अहंकार आत्मिक मौत लाने वाला ज़हर है। गुरु का शबद इस ज़हर को मारने के लिए मानो गुरुड़ है, जो अंदर से अहंकार के ज़हर को निकाल देता है :

हउमै बिखु मनु मोहिआ लदिआ अजगर भारी ॥
गरुड़ु सबदु मुखि पाइआ हउमै बिखु हरि मारी ॥
(पन्ना १२६०)

गुरु के शबद की विचार करने से जीवन मार्ग में विकार बाधा नहीं बनते। माया की प्यास मिट जाती है, जब मनुष्य गुरु हुक्म के अनुसार चलता है तब ज्ञान के तत्व विचारता है तथा अपने अहंकार को गुरु के शबद द्वारा

जला देता है, उसका मन पवित्र हो जाता है। श्री गुरु नानक देव जी का कथन है :

गुरमुखि होवै सु गिआनु ततु बीचारै हउमै सबदि जलाए ॥
तनु मनु निरमलु निरमल बाणी साचै रहै समाए ॥ (पन्ना ९४६)

मन में परमात्मा के प्रति अटूट विश्वास होना ज़रूरी है :

मनि परतीति बनी प्रभ तेरी ॥
बिनसि गई हउमै मति मेरी ॥ (पन्ना १०७२)

परमात्मा पर विश्वास के साथ-साथ हृदय में प्रभु का डर होना भी आवश्यक है। परमात्मा का निर्मल भय दुर्मति की मैल को काट देता है। गुरु द्वारा प्राप्त ज्ञान से जिसका मन निर्मल हो जाता है उसके अंदर परमात्मा का डर तथा प्रेम पैदा हो जाता है :

नानक जिन्ह मनि भउ तिन्हा मनि भाउ ॥ (पन्ना ४६५)

ऐसे मनुष्य की तृष्णा समाप्त हो जाती है, मन वश में आ जाता है तथा वह आत्मिक अडोलता में टिककर अहंकार दूर करके अविनाशी प्रभु के नाम रंग में रंग जाता है :

भउ बैरागा सहजि समाता ॥
हउमै तिआगी अनहदि राता ॥
अंजनु सारि निरंजनु जाणै सरब निरंजनु राइआ ॥ (पन्ना १०३९)

गुर परसादी भउ पइआ वडभागि वसिआ मनि आइ ॥
भै पइऐ मनु वसि होआ हउमै सबदि जलाइ ॥ (पन्ना ६४५)

सतिगुरि मिलिऐ भउ ऊपजै भै भाइ रंगु सवारि ॥
तनु मनु रता रंग सिउ हउमै त्रिसना मारि ॥ (पन्ना ७८८)

आत्म निरीक्षण के बिना सारा ज्ञान केवल पुस्तकीय ज्ञान बन जाता है। इसलिए अहंकार को मिटाने के लिए बार-बार अपने को परखकर कथनी-करनी में अंतर दूर कर, मन को विकारों के जाल से मुक्त कर गुरु-शबद में लीन करना पड़ता है :

हउमै मेटि सबदि सुखु होई ॥
आपु वीचारे गिआनी सोई ॥ (पन्ना १०४०)

मेरा मेरा करि करि विगूता ॥
आतमु न चीन्है भरमै विचि सूता ॥ (पन्ना ३६२)

साधसंगत अहंकार को दूर करने में सहायता करती है। श्री गुरु अरजन देव जी विस्तार से समझाते हैं कि साधसंगत में जाकर गुरु-शबद की विचार करने से दुर्मति नष्ट हो जाती है, अच्छे-बुरे का अंतर करने वाली विवेक-बुद्धि प्राप्त हो जाती है। ज्ञान का प्रकाश हो जाता है। मनुष्य सब में एक परमात्मा को देखने लगता है। उसका अहंकार नष्ट हो जाता है :

सभ महि जानउ करता एक ॥
साधसंगति मिलि बुधि बिबेक ॥
दासु सगल का छोडि अभिमानु ॥
नानक कउ गुरि दीनो दानु ॥ (पन्ना ३७७)

यदि कोई अपनी शोभा बढ़ाना चाहता है तो उसे सज्जनों की संगत करनी चाहिए। साधसंगत करने से अहंकार, माया का मोह आदि इस प्रकार नष्ट हो जाते हैं मानो उन्हें गड्ढा खोदकर दबा दिया गया हो :

जे को अपुनी सोभा लोरै ॥
साधसंगि इह हउमै छोरै ॥ (पन्ना २६६)

साधसंगि चिंत बिरानी छाडी ॥
अहंबुधि मोह मन बासन दे करि गडहा गाडी ॥ (पन्ना ६७१)

श्री गुरु अरजन देव जी दृढ़ करवा रहे

हैं कि बिना साधसंगत के अहंकार नष्ट नहीं होता। जैसे जल से वृक्ष हरे हो जाते हैं वैसे ही साधसंगत में जाने से मनुष्य के अंदर का अहंकार समाप्त होकर मन नम्रता में हरा-भरा हो जाता है :

हउमै मूलि न छुटई विणु साधू सतसंगै ॥
(पन्ना १०९८)

मिलि पाणी जिउ हरे बूट ॥
साधसंगति तिउ हउमै छूट ॥ (पन्ना ११८१)

जीव को अनेक जन्मों की अहंकार की मैल लगी होती है। साधसंगत के माध्यम से वह परमात्मा के साथ जुड़ता है; परमात्मा के नाम का सिमरन करता है। परमात्मा जीव के अंदर बस जाता है। उसकी परमात्मा से प्रीति हो जाती है। इस तरह धीरे-धीरे अहंकार की मैल उतर जाती है :

जनम जनम की हउमै मलु लागी मिलि संगति मलु लहि जावैगो ॥ (पन्ना १३०९)

दुरमति मिटी हउमै छुटी सिमरत हरि को नाम ॥
(पन्ना ३००)

हउमै मैलु बिखु उतरै हरि अंम्रितु हरि उर धारि ॥
(पन्ना ३००)

प्रभ की प्रीति हउमै मलु खोइ ॥ (पन्ना ३९१)

जब परमात्मा का प्रेम अंदर बस जाता है तो सबसे पहले अहंकार नष्ट होता है फिर लोकाचार संबंधी रस्में छोड़ दी जाती हैं :

सुनहु लोका मै प्रेम रसु पाइआ ॥
दुरजन मारे वैरी संघारे सतिगुरि मो कउ हरि नामु दिवाइआ ॥रहाउ॥
प्रथमे तिआगी हउमै प्रीति ॥
दुतीआ तिआगी लोगा रीति ॥ (पन्ना ३७०)

संक्षेप में कह सकते हैं कि जब जीव साधसंगत में जाकर गुरु-शबद को सुनता है, विचारता है। गुरमति के अनुसार जीवन को बनाने का यत्न करता है। हमेशा अपने जीवन को परखता रहता है। प्रभु के डर, अदब में रहकर दिन-रात परमात्मा के नाम का सिमरन करता है तो उसके अंदर से अहंकार रूपी ज़हर निकल जाता है। श्री गुरु रामदास जी का कथन है कि परमात्मा का नाम ऐसी औषधि है जो असर अवश्य करती है :

हरि हरि जपनु जपउ दिनु राती जपि हरि हरि हरि उरि धारी ॥
हरि हरि हरि अउखधु जगि पूरा जपि हरि हरि हउमै मारी ॥ (पन्ना ६६६)

इस अवस्था में मनुष्य का कहना, देखना, बोलना सब परमात्मा की सिफति-सालाह वाले शबद में लीन हो जाता है। अर्थात वह सदा प्रभु के गुण कीर्तन में लगा रहता है। वह हर तरफ एक परमात्मा को देखता है। उसका अहंकार समाप्त हो जाता है :

आखणु वेखणु बोलणा सबदे रहिआ समाइ ॥
बाणी वजी चहु जुगी सचो सचु सुणाइ ॥
हउमै मेरा रहि गइआ सचै लइआ मिलाइ ॥
(पन्ना ३५)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में मानवाधिकारों का निरूपण

*-डॉ. राजेंद्र सिंह साहिल**

मानवाधिकारों का अर्थ : मनुष्य होने के नाते हर मनुष्य का एक आधारभूत अस्तित्व होता है। इस आधारभूत अस्तित्व को कायम रखने के लिए जिन न्यूनतम अधिकारों की आवश्यकता होती है, वे 'मानव-अधिकार' कहलाते हैं। ये वे अधिकार हैं जो मात्र मनुष्य होने के कारण ही मनुष्य को प्राकृतिक रूप से प्राप्त हो जाते हैं। इनके बिना मनुष्य का अस्तित्व स्वतंत्रता एवं अस्मिता बरकरार नहीं रह सकती। मनुष्य जैसे-जैसे सभ्य होता गया वैसे-वैसे प्रकृति प्रदत्त अधिकारों के प्रति उसकी चेतनता निरंतर बढ़ती गई। धर्म ने इस विकास प्रक्रिया में बड़ी अहम भूमिका निभाई है। भिन्न-भिन्न धर्मों ने अपने-अपने ढंग से मानव के अस्तित्व एवं अस्मिता को स्थापित करने का प्रयत्न किया है। वर्तमान काल में मानवाधिकारों को अंतर्राष्ट्रीय कानून का दर्जा दे दिया गया है और सारे विश्व में किसी रूप में इस की अवज्ञा स्वीकार नहीं की जाती। संयुक्त राष्ट्र संघ ने १९४८ ई में एक मानवाधिकार संबंधी चार्टर जारी किया जिसे मानव-अधिकार संबंधी वैश्विक घोषणा-पत्र (Universal Declaration Of Human Rights) कहा जाता है। इस घोषणा-पत्र में ३० अनुच्छेद हैं जिनमें हर संभव सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं न्यायिक मानवाधिकारों को शामिल किया गया है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में मानवाधिकार : प्राचीन एवं मध्यकालीन धर्म ग्रंथों एवं आचार संहिताओं में विभिन्न मानवाधिकारों की चर्चा की गई है। उदाहरणत: वेदों और उपनिषदों में मानवीय समता, आर्थिक समृद्धि, राजनीतिक स्वतंत्रता आदि की बात की गई है, वहीं बौद्ध-जैन ग्रंथों में अहिंसा जैसे जीवन मूल्य की स्थापना की गई है। भागवत धर्म, इसाई एवं इस्लाम धर्म में भी मानव-मानव समानता पर गहन चिंतन मिलता है।

उपर्युक्त संदर्भ में श्री गुरु ग्रंथ साहिब की स्थिति अत्यंत विलक्षण एवं अद्वितीय है। शेष धर्म-ग्रंथों में जहां मानवाधिकार संबंधी संकेत मात्र हैं वहीं श्री गुरु ग्रंथ साहिब में मनुष्य के मूलभूत अधिकारों को लेकर स्पष्ट विचार एवं निर्णय प्राप्त होते हैं। यह बड़ा अद्‌भुत एवं आश्चर्यजनक तथ्य है कि मानवाधिकार संबंधी वैश्विक घोषणा पत्र में दर्ज हर मानव अधिकार से संबंधित चर्चा श्री गुरु ग्रंथ साहिब में की गई है।

मानवीय समता की स्थापना-जाति विभाजन का खंडन : मानव समाज में मानव-मानव के मध्य असमानता का भाव रखना मानवाधिकारों के हनन का सबसे बड़ा कारक है। बाहरी दुनिया में यह ना-बराबरी क्षेत्र, रंग, नस्ल आदि के रूप में दिखाई देती है, जबकि भारत में यह जाति-व्यवस्था की शक्ल में मौजूद है। भारतीय समाज अनगिनत जातियों में विभाजित है। कुछ स्वयंभू धार्मिक एवं सामाजिक सिद्धांतों के आधार पर कुछ जातियों को ऊंचा और कुछ को नीचा समझा जाता है। कथित उच्च जातियों का कथित निम्न जातियों के प्रति अमानवीय व्यवहार

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, मो: ९४१७२-७६२७१*

छूआछूत या अस्पृश्यता के रूप में भारतीय समाज में बिखरा हुआ है।

मध्यकाल में गुरु साहिबान ने जाति-प्रथा के विरोध में ज़ोरदार मुहिम चलाई। श्री गुरु नानक देव जी ने जाति विभाजन की अवधारणा को सिरे से खारिज़ कर दिया और फुरमाया कि मनुष्य को जाति से नहीं उसके अंदर प्रज्वलित अकाल पुरुख की ज्योति से पहचानना चाहिए जो हर मनुष्य में समान रूप से विद्यमान है :

जाणहु जोति न पूछहु जाती आगै जाति न हे ॥
(पन्ना ३४९)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में स्पष्ट रूप से मानवीय समता एवं भ्रातृ-भाव की बात की गई है :

अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे ॥
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे ॥ *(पन्ना १३४९)*

गुरबाणी सभी मनुष्यों को एक अकाल पुरुख की संतान मानती है, इसलिए आपस में कोई भेदभाव या वैर भाव नहीं रखना चाहिए:

एकु पिता एकस के हम बारिक तू मेरा गुर हाई ॥
(पन्ना ६११)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में मानवीय समता एवं भाईचारे की स्वीकृति सिर्फ सैद्धांतिक रूप में ही नहीं है बल्कि गुरु साहिबान ने व्यावहारिक स्तर पर भी जाति-प्रथा का खंडन किया है। संगत-पंगत, सांझे लंगर, सांझे सरोवर जैसी संस्थाओं की स्थापना से गुरु साहिबान ने जाति-भेद को समूल नष्ट करने का आयोजन किया।

ऊंच-नीच की भावना मनुष्य में हउमै (अहम्) उत्पन्न करती है, इस लिए श्री गुरु अमरदास जी जाति का अभिमान करने वाले को मूर्ख-गंवार कहते हैं :

जाति का गरबु न करि मूरख गवारा ॥
(पन्ना ११२७)

स्त्री-पुरुष समानता : मानव इतिहास में जिस प्राणी के मानवाधिकारों का सबसे अधिक हनन हुआ है, वह है स्त्री! सदा से नारी को माया का बंधन, नरक का द्वार, नागिन आदि कहकर अपमानित किया जाता रहा है। सामाजिक स्तर पर सदैव नारी को पुरुष से हीन माना गया है। यही नहीं, सती प्रथा और कन्या हत्या जैसी कुप्रथाओं से उसके अस्तित्व को ही संकट में डाल दिया गया है। यहां तक कि विभिन्न धर्मों में भी स्त्री का निरादर ही किया गया है।

सबसे अलग श्री गुरु नानक देव जी ने *"सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजानु"* कह कर पहली बार स्त्री को सम्मानित स्थान दिया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में लिंग-भेद के आधार पर स्त्री-पुरुष में अंतर करने का स्पष्ट विरोध है। यही कारण है कि गुरमति में स्त्री को वे सभी अधिकार प्राप्त हैं जो पुरुष को प्राप्त हैं। इसके अतिरिक्त व्यवहारिक रूप से सती प्रथा, पर्दा प्रथा, बहु विवाह, कन्या हत्या जैसी नारी विरोधी प्रथाओं का ज़बरदस्त निषेध एवं खंडन है।

आर्थिक अधिकारों की रक्षा-वंड छकणा का सिद्धांत : मानवाधिकारों का हनन करने वाला एक और बड़ा कारक है- आर्थिक शोषण। विश्व में अन्य विभिन्नताओं एवं भेदों के साथ-साथ अमीर-गरीब का भेद भी निरंतर चला आया है। प्राचीन धर्म ग्रंथों में निर्धनता को पूर्व जन्म के पाप-कर्मों का फल कहा गया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अनुसार गरीबी अमीरों द्वारा किए शोषण के कारण होती है। श्री गुरु नानक देव जी आर्थिक शोषण को अत्यंत निंदनीय कर्म मानते हैं :

जे रतु लगै कपड़ै जामा होइ पलीतु ॥
जो रतु पीवहि माणसा तिन किउ निरमलु चीतु ॥
(पन्ना १४०)

प्रथम पातशाह द्वारा मलिक भागो का

निषेध और भाई लालो का समर्थन आर्थिक शोषण के खिलाफ खुली जंग का एलान था।

धन-दौलत के लोभी ही दूसरों का हक छीनते फिरते हैं। गुरबाणी में *"पापा बाझहु होवै नाही मुइआ साथि ना जाई"* कह कर धन का लोभ न करने की शिक्षा दी गई है और किरत (कर्म) करके 'वंड छकने'(बांट कर खाना) की हिदायत की गई है :

घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ (पन्ना १२४५)
उदमु करेदिआ जीउ तूं कमावदिआ सुख भुंचु ॥ (पन्ना ५२२)
खावहि खरचहि रलि मिलि भाई ॥
तोटि न आवै वधदो जाई ॥ (पन्ना १८६)

इसी प्रकार गुरबाणी में गृहस्थ जीवन का पालन करते हुए हर प्रकार की आर्थिक, सामाजिक सुरक्षा प्राप्त करने के हक की पैरवी भी की गई है। श्री गुरु अरजन देव जी का कथन है कि समस्त भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए ही मुक्ति मिल पाती है :

हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ विचे होवै मुकति ॥ (पन्ना ५२२)

गुरबाणी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति एवं आर्थिक उन्नति को निषिद्ध नहीं मानती। समाज में सुरक्षित रहते हुए उचित श्रेष्ठ एवं खुशहाल जीवन जीना मनुष्य का मूलभूत अधिकार है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज एक शबद में भक्त धन्ना जी अकाल पुरुख से हर भौतिक ज़रूरत पूरी करने के लिए अरदास कर रहे हैं:

दालि सीधा मागउ घीउ ॥
हमरा खुसी करै नित जीउ ॥
पन्हीआ छादनु नीका ॥
अनाजु मगउ सत सी का ॥
गऊ भैस मगउ लावेरी ॥
इक ताजनि तुरी चंगेरी ॥
घर की गीहनि चंगी ॥
जनु धंना लेवै मंगी ॥ (पन्ना ६९५)

धार्मिक भेदभाव का निषेध : श्री गुरु ग्रंथ साहिब का भिन्न-भिन्न धर्मों के प्रति दृष्टिकोण अत्यंत निरपेक्षता पूर्ण है। यहां सभी धर्मों को समान मानकर उनके प्रति सम्मान प्रकट किया गया है। यहां किसी भी प्रकार के धार्मिक भेदभाव को स्वीकार नहीं किया गया है। अपने धर्म एवं संस्कृति को मानने की स्वतंत्रता मनुष्य का मूल अधिकार है। गुरु साहिबान ने मनुष्य के इस अधिकार का पूरा समर्थन किया है।

पंचम पातशाह का फरमान है :

कोई बोलै राम राम कोई खुदाइ ॥
कोई सेवै गुसईआ कोई अलाहि ॥ . . .
कोई नावै तीरथि कोई हज जाइ ॥
कोई करै पूजा कोई सिरु निवाइ ॥
कोई पड़ै बेद कोई कतेब ॥ (पन्ना ८८५)

मध्यकाल में भारत में हिंदू एवं इस्लाम दो प्रमुख धर्म थे। गुरबाणी में लोगों को अपने-अपने धर्म में पक्के रहने की नसीहत दी गई है। गुरु साहिबान का विचार है कि अपने धर्म में पक्का व्यक्ति ही दूसरे के धर्म का सम्मान कर सकता है। *"मुसलमाणु सोई मलु खोवै"* कह कर मुस्लिमों को एवं *"दइआ कपाह संतोखु सूतु"* कहकर हिंदुओं को अपने अंदर सद्‌गुण उत्पन्न करने के लिए प्रेरित किया गया है।

भारत में आम जनता के धार्मिक अधिकारों का सर्वाधिक निरादर ब्रह्मण वर्ग ने किया है। इस वर्ग ने स्वयं को उच्च एवं शेष समाज को निम्न मानकर उस पर अत्याचार किए हैं। ऐसे ही एक अन्याय के विषय में भक्त नामदेव जी बयान करते हैं :

सूदु सूदु करि मारि उठाइओ कहा करउ बाप बीठुला ॥ (पन्ना ११९२)

यही कारण है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब में

ब्राह्मण वर्ग द्वारा किए गये धार्मिक अत्याचारों का खुलकर विरोध दर्ज है :

मथै टिका तेड़ि धोती कखाई ॥
हथि छुरी जगत कासाई ॥ (पन्ना ४७१)

राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूकता : गुरु साहिबान ने राजा वर्ग द्वारा आम जनता पर किए गये शोषण एवं अत्याचार का निर्भीक विरोध किया :

राजे सीह मुकदम कुते ॥
जाइ जगाइन्हि बैठे सुते ॥
चाकर नहदा पाइन्हि घाउ ॥
रतु पितु कुतिहो चटि जाहु ॥ (पन्ना १२८८)

गुरु साहिबान ने राजनीतिक प्रक्रिया में जनता के दख़ल को भी पूरी हिमायत दी है। श्री गुरु नानक देव जी का कथन है कि तख़्त पर वही गुणी राजा टिक सकता है जो लोक राय या लोक मत के अनुसार चलता है :

राजा तखति टिकै गुणी भै पंचाइण रतु ॥
(पन्ना ९९२)

न्यायिक अधिकार-'हलेमी राज' की अवधारणा : श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सदाचार एवं इखलाक द्वारा नियंत्रित न्याय-प्रधान, राज्य-प्रबंध को श्रेष्ठ माना गया है, जिस में हर मनुष्य को इंसाफ और न्याय प्राप्त हो और उसके सभी मानवाधिकारों की रक्षा हो।

इस संदर्भ में गुरबाणी में 'हलेमी राज' का सिद्धांत स्थापित किया गया है :

हुणि हुकमु होआ मिहरवाण दा ॥
पै कोइ न किसै रञाणदा ॥
सभ सुखाली वुठीआ इहु होआ हलेमी राजु जीउ ॥ (पन्ना ७४)

निष्कर्षत: स्पष्ट है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब में मानवाधिकार संबंधी संपूर्ण चिंतन प्राप्त होता है। सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, न्यायिक आदि मानव जीवन का कोई भी ऐसा पक्ष नहीं है जिससे संबंधित अधिकारों की चर्चा श्री गुरु ग्रंथ साहिब में न की गई हो। साफ दिखता है कि मानवाधिकार संबंधी वैश्विक घोषणा-पत्र की रचना करने वाले लोग श्री गुरु ग्रंथ साहिब की विचारधारा से कितने अधिक प्रभावित और प्रेरित थे।

कविता

मेरी विनती हो प्रवान!

मैं अदना-सा
मैं अल्प बुद्धि
मैं अल्प आकार।
आप सायर-सागर!
आप सर्वत्र उजागर!
मैं एक बूंद
आप निधि-निधान!
आप पुंज प्रधान!
न जानूं ये भेद,
कब से बिछुड़ा हूं।
न समझ सकूं,
कहां से उखड़ा हूं।
मांगता हूं कृपा
चाहता हूं प्रसाद
आप हैं सदा मेहरबान!
आप हैं कृपा-निधान!
मेरी विनती हो प्रवान!
मेरी दीनता हो प्रवान!
शरणागत को दें शरणदान!
मिले चरण-धूलि दयावान!
मिले चरणों में स्थान!

-डॉ. सुरिंदरपाल सिंघ, पत्तण वाली सड़क, पुराना शाला, गुरदासपुर-१४३५२१, मो. ९४१७१-७५८४६

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में आवागमन संबंधी आए विचार

*-स. गुरदीप सिंघ**

जीव के मर जाने से आत्मा भौतिक शरीर से निकल जाती है। मनुष्य के बार-बार जन्म लेने के कारण आवागमन के सिद्धांत को माना जाता है। हिंदू मत के पुरातन ग्रंथों, वेदों, उपनिषदों, शास्त्रों और गीता में आवागमन का सिद्धांत मिलता है। जैन मत, आर्यन भी आवागमन को मानते हैं। इबरानी, ईसाई और मुसलमान इसे नहीं मानते। मुसलमानों का निश्चय है कि व्यक्ति के मर जाने के बाद उसकी रूह कब्र में ही पड़ी रहेगी। एक दिन कयामत आयेगी और उस दिन एक फरिश्ता 'करना' फूकेगा सारी रूहें कब्रों में से उठ जायेंगी, तब लेखा होगा। खुदा, पैगंबर पर निश्चय रखने वाली रूहें बहिश्त में भेजी जायेंगी और पापी रूहों को दोजख़ में फेंका जायेगा।

सिक्ख धर्म आवागमन को मानता है। श्री गुरु अमरदास जी का फरमान है कि प्रभु सर्व शक्तिमान एवं समर्थ है। प्रभु ने जनम-मरण की मर्यादा बनाकर आवागमन की रचना करके सृष्टि की साजना की है :

आवा गउणु रचाइ उपाई मेदनी ॥
(पन्ना १२८३)

जिस प्रकार थितें, वार, महीने ऋतुएं, दिन-रात बार-बार आते-जाते हैं उसी प्रकार यह जगत है। जगत में जीव मरते और जन्म लेते हैं। परमात्मा ने स्वयं ही जीवों के लिए जनम-मरण का चक्र बना दिया है। अटल रहने वाला स्वयं प्रभु है जो सारी सृष्टि में अपनी सत्ता टिका रहा है। गुरु के सम्मुख रहने वाला व्यक्ति गुरु के शबद को अपने मन में बसाकर यह बात समझ लेता है।

आवा गउणु कीआ करतारि ॥ (पन्ना ८४२)

श्री गुरु नानक देव जी उच्चारण करते हैं कि जीव परमात्मा से ही उपजते हैं और उसी में अभेद हो जाते हैं। यह तभी संभव है जब जीव परमात्मा की आराधना करें। झूठे आदमी इस दुनिया में आते हैं पर वे टिक नहीं पाते। बुराइयों के कारण उनको आवागमन का चक्र पड़ जाता है। यह आवागमन गुरु के शबद द्वारा ही काटा जा सकता है :

साचौ उपजै साचि समावै साचे सूचे एक मइआ ॥
झूठे आवहि ठवर न पावहि दूजै आवा गउणु भइआ ॥
आवा गउणु मिटै गुर सबदी आपे परखै बखसि लइआ ॥ (पन्ना ९४०)

कुछ विद्वान आवागमन के तीन भेदों का वर्णन करते हैं :

१. पूरवअसतीत:- आत्मा पहले से ही मौजूद होती है। विदेह दिशा में से मनुष्य देह में प्रवेश करने से इसको देह धारण करने का अवसर प्राप्त होता है। मरने के बाद इसे दोबारा देह नहीं धारण करनी पड़ती। इस सिद्धांत को पूरवअसतीत (THE DOCTRINE OF PRE EXSISTANCE) कहते हैं।

२. यथार्थ आवागमन:- आत्मा मानव देह धारण से पहले पशु, पक्षी, वृक्ष आदि अनगिनत जन्मों में भटकने के बाद मानवीय देह धारण करती है।

**३०२, किदवाई नगर, लुधियाना-१४१००८; मो: ९८८८१२६६९०*

इस देही को त्यागने के बाद जीव दोबारा मनुष्य योनि में आने से पहले कई पशु, पक्षी आदि योनिओं में जन्म लेगा इसको मुसलाइ तनासख अर्थात् यथार्थ आवागमन (Transmigration) कहते हैं।

३. पुनरभव:- जीवात्मा वर्तमान मानव जामा धारण करने से पहले भी मानव देही में स्त्री या पुरुष के रूप में थी और मरने के बाद पुन: मानवीय देह धारण करती रहेगी जब तक मुक्त नहीं हो जाती। इस सिद्धांत का नाम पुनरभव (Reincarnation) है।

गुरमति सिद्धांत:- हउमै (अहं) जीव को एक अलग शख़्सियत का रूप देती है और इस शख़्सियत के आधार पर जीवात्मा हउमै युक्त कर्म आरंभ कर देती है। इन कर्मों के अंतरीव असर से बने स्वभाव के अनुसार यह नया जन्म धारण करती है। गुरमति आत्मिक उन्नति के शिखर को छूना आवागमन से मुक्त होने का मूल साधन बताती है। गुरमति अनुसार परमात्मा को मिलना परमात्मा में अभेद होना है। परमात्मा से अभेदता केवल मानवीय शरीर धारण करने से हो सकती है परंतु मानवीय शरीर धारण करने से पहले कई योनिओं से निकलना पड़ता है :

कई जनम भए कीट पतंगा ॥
कई जनम गज मीन कुरंगा ॥
कई जनम पंखी सरप होइओ ॥
कई जनम हैवर ब्रिख जोइओ ॥१॥
मिलु जगदीस मिलन की बरीआ ॥
चिरंकाल इह देह संजरीआ ॥रहाउ॥
कई जनम सैल गिरि करिआ ॥
कई जनम गरभ हिरि खरिआ ॥
कई जनम साख करि उपाइआ ॥
लख चउरासीह जोनि भ्रमाइआ ॥
(पन्ना १७६)

मानस देही सभी योनियों से श्रेष्ठ मानी जाती है। इस योनि में न केवल चेतनता ही ऊंचे दर्जे तक जाती है, बल्कि नए विचार भी पनपते हैं। परम पद तक पहुंचने के लिए इसी योनि में यत्न किया जा सकता है। श्री गुरु अरजन देव जी फरमान करते हैं कि पूरी चौरासी लाख योनिओं में से परमात्मा ने मानस योनि को महत्ता दी है। जो मनुष्य इस सीढ़ी से थिरक जाता है वह जन्म-मरण के चक्र में फंसकर दुख भोगता है :

लख चउरासीह जोनि सबाई ॥
माणस कउ प्रभि दीई वडिआई ॥
इसु पउड़ी ते जो नरु चूकै सो आइ जाइ दुखु पाइदा ॥२॥ (पन्ना १०७५)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब उच्चारण करते हैं कि हे मनुष्य! तू कई योनिओं में भटक-भटककर हार गया है। अब तुझे मानवीय चोला मिला है। परमात्मा से मिलने के लिए यही एक मात्र अवसर है। तू प्रभु का सिमरन क्यों नहीं करता ?

फिरत फिरत बहुते जुग हारिओ मानस देह लही ॥
नानक कहत मिलन की बरीआ सिमरत कहा नही ॥ (पन्ना ६३१)

श्री गुरु नानक देव जी इस शंका का समाधान करते हैं कि जिस जीव आत्मा ने मनुष्य देही प्राप्त कर ली है वह पुन: मानुष्य योनि से नीची योनि में जा सकती है। कर्मों के अनुसार वह नीची योनि प्राप्त कर सकती है। जिस मनुष्य ने अपने मन से परमात्मा का नाम भुला दिया है और मोह माया का नशा चढ़ा लिया है उसको सुख नहीं मिल सकता। गुरु के बिना प्रभु की भक्ति नहीं हो सकती और भक्ति के बिना आत्मिक आनंद की प्राप्ति नहीं हो सकती :

सूकर सुआन गरधभ मंजारा ॥

पसू मलेछ नीच चंडाला ॥
गुर ते मुहु फेरे तिन्ह जोनि भवाईऐ ॥
बंधनि बाधिआ आईऐ जाईऐ ॥५॥
(पन्ना ८३२)

श्री गुरु नानक देव जी फरमान करते हैं कि साकत पूर्व में भी साकत थे, इसलिए उन्होंने पुनर्जन्म से पहले भी दुखी जीवन ही बिताया था। वास्तव में आवागमन है ही साकतों के लिए :

जिउ आरणि लोहा पाइ भंनि घड़ाईऐ ॥
तिउ साकतु जोनी पाइ भवै भवाईऐ ॥
(पन्ना ७५२)

श्री गुरु अरजन देव जी उच्चारण करते हैं कि जो व्यक्ति सत्संग में प्रभु का नाम जप कर, प्रभु का यश सुनकर और प्रभु की शरण में आकर गुरमति के धारणी बनते हैं, उनका आवागमन खत्म हो जाता है :

जनम मरन के मिटे अंदेसे ॥
साधू के पूरन उपदेसे ॥ . . .
थिति पाई चूके भ्रम गवन ॥
सुनि नानक हरि हरि जसु स्रवन ॥
(पन्ना २८७)

श्री गुरु अरजन देव जी फरमान करते हैं कि जिस मनुष्य पर प्रभु पातशाह कृपा करते हैं उसके सारे बंधन कट जाते हैं। गुरु की कृपा से जिस मनुष्य को सारे भय, भ्रम से रहित परमात्मा मिल जाता है, उसके अंदर सदा आनंद बना रहता है। परमात्मा के चरणों में लीन रह कर मनुष्य सारे सुख प्राप्त कर लेता है। गुरु के दर पर आने से मनुष्य जीवन वाला सफर कामयाब हो जाता है। गुरु से मिलकर जन्म-मरण का चक्र खत्म हो जाता है :

सफल सफल भई सफल जात्रा ॥
आवण जाण रहे मिले साधा ॥ (पन्ना ६८७)

आवागमन से छुटकारा पाने के लिए गुरमति को मन में बसा, गुर-उपदेश को धारण कर अपना हर कर्म गुर-शबद की ओट लेकर करना चाहिए। गुर-शबद अनुसार किए गए अमल मन में सही ज्ञान का प्रकाश करते हैं जो हउमै का खातिमा कर देते हैं। आवागमन से मुक्त होना ही मोक्ष प्राप्त करना है। जो प्रभु आज्ञानुसार कर्म करता हुआ प्रभु स्वभाव धारण कर लेता है, वह प्रभु में अभेद हो जाता है। जिस मनुष्य ने अपने मन में प्रभु को बसा लिया उसको परमात्मा की समझ आ जाती है और जन्म-मरण का चक्र खत्म हो जाता है :

आवा गउणु निवारिओ करि नदरि नीसाणु ॥
(पन्ना ९६८)

जिस व्यक्ति को गुरु ने आत्मिक आनंद देने वाला हरिनाम दे दिया उसके भीतर से तृष्णा की आग बुझ जाती है। उसका इधर-उधर का भटकना समाप्त हो जाता है :

फूटो आंडा भरम का मनहि भइओ परगासु ॥
काटी बेरी पगह ते गुरि कीनी बंदि खलासु ॥१॥
आवण जाणु रहिओ ॥
तपत कड़ाहा बुझि गइआ गुरि सीतल नामु दीओ ॥१॥रहाउ॥ (पन्ना १००२)

श्री गुरु रामदास जी उच्चारण करते हैं कि जिस व्यक्ति ने अपने भीतर से अहं भाव मिटा दिया है वो गुरु की शरण में रहकर सदा आत्मिक आनंद प्राप्त करता है। जिसे सदा थिर रहने वाले प्रभु की सिफत-सलाह वाला गुर-शबद मन में प्यारा लगता है, वह गुर-शबद की बरकत से आवागमन के चक्र को मिटा सदा प्रभु के रंग में रंगा रहता है :

आवा गउणु निवारि सचि राते साच सबदु मनि भाइआ ॥
सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाईऐ जिनि विचहु आपु गवाइआ ॥ (पन्ना १२३४)

वैज्ञानिक युग में गुरमति दर्शन का महत्त्व

-स. जुगिंदर सिंघ*

आधुनिक विज्ञान के पदार्थवादी बरताव के प्रभाव का लेखक को व्यक्तिगत अनुभव है, जो कभी इस दलदल में फंस गया था। विज्ञान के गहन अध्ययन ने यही बताया कि विज्ञान अपने सीमित हथियारों एवं पहुंच के स्रोतों द्वारा उस अंतिम सत्य वस्तु ब्रह्म को ढूंढ नहीं सकती। हां, उसके अभी तक तय किये सफर एवं प्राप्त किए ज्ञान से कुछ झलक अवश्य मिलती है जो इस ओर संकेत करती है कि इस दृष्यमान जगत का आधार है और कोई शक्ति अपनी अकल कला (Artless Art) द्वारा इस संसार का सृजन कर इसमें निवास करती है।

सिक्ख धर्म के निर्माता श्री गुरु नानक देव जी संसार के आध्यात्मिक आकाश के सब से अधिक रौश्न सितारे हैं, जिस की चुम्बकीय रौशनी संसार सागर के मुसाफिरों का सदैव मार्गदर्शन करती रहेगी। श्री गुरु नानक देव जी के महान व्यक्तित्व ने ब्रह्मज्ञान की अमृतवर्षा से जहां मिस्र और इरान के मरूस्थलों को तृप्त किया, वहीं अपने प्यार की गरमाहट से तिब्बत और चीन की बर्फानी चोटियों को भी पिघलाया। उनकी शिक्षा विश्व दृष्टिकोण को नई दिशाएं प्रदान करती है, नये जज़्बात, नई दृष्टि, चरमोल्लास से भरपूर विचारधारा प्रदान करती है। श्री गुरु नानक देव जी का व्यक्तित्व बहुपक्षीय था। वे एक महान साहित्यकार, महान अगुआ (रहबर), महान दार्शनिक, क्रांतिकारी, देश भक्त, समाज-सुधारक एवं प्रेम से लबालब व्यक्तित्व थे, जिन्होंने विश्व के कल्याण हेतु जंगलों, पहाड़ों, नदियों एवं मारुस्थलों को लांघकर, हज़ारों मीलों का सफर तब तय किया जब आवाजाही के साधन बिलकुल ही नहीं थे।

श्री गुरु नानक देव जी के लगाए सिक्खी के पौधे को उनके उत्तराधिकारियों ने सींचा और संभाला। यही पौधा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के समय फल देने लगा। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने ज्योति ज्योत समाने से पहले विश्व को एकबारगी ही नया संकल्प दिया। आपने देहधारी गुरुडम को समाप्त कर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को गुरगद्दी सौंप दी।

आधुनिक युग विज्ञान का है। इस आणविक एवं अंतरिक्ष युग में मानवता एक ऐसे ज्वालामुखी के दहाने पर खड़ी है, जो कभी भी फट सकता है। इस अति विकसित युग में विश्व का प्रत्येक कदम मानो अंधेरे में उठाया जा रहा है। बेशक प्राकृतिक शक्तियों पर मानव ने विशेष सीमा तक नियंत्रण पा लिया है परंतु समाज के आत्मिक विकास पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। पदार्थवादी प्रभाव तले मनुष्य ईश्वर के अस्तित्व से ही बागी हो बैठा है और चेतन सत्ता (Counciousness) को पदार्थक रूप (Materialistic Form) देने में जी-जान से जुटा है। मानवी अंतःकरण को एक स्वचालित मशीन बताकर चेतन सत्ता को पदार्थक विकास की ही प्रक्रिया कहा जा रहा है। यह सब कुछ क्यों है? इसलिए कि किसी गलत प्रभाव के

* पु. संपादक मानसरोवर (पंजाबी), ८/२२०, खिचड़ीपुर, दिल्ली-११००९१, मो. ९८७१५६३१३९

अधीन धर्म और विज्ञान में विच्छेदन की स्थिति उत्पन्न हो गई है। ये सगी बहनें बनने की बजाय सौतनों का रोल अदा कर रही हैं। जब तक धर्म को मानव संस्कृति एवं विज्ञान का आधार नहीं बनाया जाता तब तक मानवता को गहरी खड्ड में गिरने से कोई नहीं बचा सकता।

आइए, अब सर्वेक्षण द्वारा तय करें कि वैज्ञानिक आधार एवं सभ्यता का स्रोत बनने वाला धर्म किस तरह का होना चाहिए? विश्व के धार्मिक इतिहास को बांधने से एवं तुलनात्मक अध्ययन द्वारा यह बात स्पष्ट हो जाएगी कि उस प्रकार का धर्म केवल श्री गुरु नानक देव जी का चलाया हुआ 'सिक्ख धर्म' ही हो सकता है। डॉ. एस. राधा कृष्णन के कथनानुसार यदि विश्व के सभी धर्मों की मूल सच्चाईयां एवं अच्छाईयां एक साथ एक ही धर्म में देखनी हो तो वह धर्म केवल श्री गुरु नानक देव जी का ही है।

इस लेख के द्वारा हम विज्ञान की पदार्थकता और संसार की वास्तविकता एवं रूप-रेखा के बारे में नवीन सच्चाईयों को 'गुरमति' की रौशनी में परखेंगे और गुरमति की विशेषतायें बताने की कोशिश करेंगे।

पहली बात तो यह है कि यह ब्रह्मांड बड़ा विशाल है और मनुष्य की हस्ती इसमें इतनी है जितनी मरुस्थल में रेत के कण की या महासागर में पानी की बूंद की होती है। चींटी बेशक कितनी भी एड़ियां उठा-उठाकर एक पर्वत की विशालता का अनुभव करने का प्रयास करें, वह पर्वत के आकार का कभी अंदाज़ा नहीं लगा सकती। इसी प्रकार मनुष्य याहे कितना भी प्रयत्न करे वह ब्रह्मांड की मूल एवं समूची वास्तविकता को अपनी प्राकृतिक विधियों (Physical Methods) द्वारा कभी नहीं जान पाएगा। यह ब्रह्मांड बड़ा विशाल है। वैज्ञानिक दूरदर्शक यंत्रों (Telescopes) द्वारा झांकने से सितारों का पता चलता है, जिनकी रोशनी को एक लाख छियासी हज़ार मील प्रति सैकिंड की रफतार से धरती पर पहुंचने में पचास करोड़ साल (500 million Light Years) लगते हैं। इससे भी इतर, विज्ञान नहीं जानती कि ब्रह्मांड कहां तक है। विज्ञान की समूची खोज माद्दी (Physical) है और जिन यंत्रों द्वारा यह सच्चाई की खोज करती है, वे भी उसी पदार्थक संसार का ही भाग हैं, उन्हीं सिद्धांतों के ही अधीन हैं जिनके अधीन पदार्थक विद्या (Physical Science) है।

कई मत यह कहते हैं कि परमात्मा, जीव तथा प्रकृति (Matter) तीनों अनादि (Eternal) हैं, न ही किसी ने पैदा किये हैं और न ही कोई इनका काल कर सकता है। उनके अनुसार ये तीनों एक-दूसरे से स्वतंत्र (Independent) हैं, परंतु गुरमति केवल एक आकल पुरख (ईश्वर) की हस्ती को अविनाशी तथा स्वतंत्र मानती है और शेष सभी वस्तुओं को, समेत देश, काल (Space Time) के कृतम अथवा उसकी बनाई हुई मानती है। पदार्थवादी (Materialists) तो परमात्मा और जीव-आत्मा को भी नहीं मानते। उनके अनुसार यह संसार एक स्वयंभू प्रक्रिया है जिसका न आदि है न अंत। वे कहते हैं कि हरकत यानी गति (Motion) प्रकृति का सदैवी गुण है और यह हरकत यानी गति ही सभी प्रकार की संसार रचना करती है। पदार्थक दर्शन के प्रारंभिक नियमों में से एक नियम है जिसे "विरोधी शक्तियों के अंतरी प्रवेश" (Interpenetration of the opposites) का सिद्धांत कहते हैं। इस सिद्धांत के अनुसार संसार-रचना में दो प्रकार की विपरीत या विरोधी शक्तियां काम कर रही हैं-- विनाशकारी और निर्माणकारी।

ये दोनों शक्तियां संसार रचना को स्थिर रखती हैं। पदार्थ वादियों के अनुसार संसार-रचना एक ओर तबाह हो रही है और दूसरी ओर बगैर किसी कर्त्ता के बन रही है। इस प्रकार ये संसार-रचना का न आदि मानते हैं और न अंत। गुरु साहिब कहते हैं कि इस संसार-रचना का पसारा कई बार हो चुका है। कई बार इसकी रचना हुई और कई बार अंत हुआ :

कई बार पसरिओ पासार ॥
सदा सदा इकु एकंकार ॥ (पन्ना २७६)

आइए, अब हम संसार के आदि-अंत के बारे में कुछ नवीन वैज्ञानिक खोजों पर विचार करें। वैज्ञानिकों का कहना है कि संसार के अस्तित्व में आने से पहले गहन अंधेर, धुंधूकार था। श्री गुरु नानक साहिब अपने विशाल अनुभव द्वारा इस दशा का वर्णन इस तरह करते हैं :

अरबद नरबद धुंधूकारा ॥
धरणि न गगना हुकमु अपारा ॥
ना दिनु रैनि न चंदु न सूरजु सुंन समाधि लगाइदा ॥ (पन्ना १०३५)

यह हालत थी संसार रचना से पहले। अकाल पुरख अपनी निर्गुण अवस्था (Impersonal State) में था। जब उसकी इच्छा हुई, इस संसार को उसने अपने में से इस तरह पैदा किया, जिस तरह मकड़ी अपने में से जाला पैदा करती है और रेशम का कीड़ा अपने में से रेशम पैदा करता है। इस पसारे "कीता पसाओ एको कवाओ ॥" ने उदकर्षण और आकर्षण शक्तियों (Force of repulsion & attraction) के प्रभाव तले विकास कर करोड़ों सूरजों, चंद्रमाओं, सितारों और धरतियों ने, संसार का आधुनिक रूप धारण किया। श्री गुरु नानक साहिब जपु जी साहिब में लाखों आकाशों का वर्णन करते हैं, जिनके बारे में विज्ञान अब पता कर सकी है :

पाताला पाताल लख आगासा आगास ॥
(पन्ना ५)
केते इंद चंद सूर केते केते मंडल देस ॥
(पन्ना ७)

भविष्य में संसार की क्या हालत होगी ? विज्ञान का एक सब से कम मतभेद वाला सिद्धांत जिसे ताप गति का दूसरा सिद्धांत (Second Law of Thermodynamics) कहते हैं, बताता है कि यह संसार तबाही की ओर जा रहा है। संसार शक्ति (Energy of the Universe) धीरे-धीरे अप्राप्त (Less Available) दशा को धारण कर रही है। सितारों अथवा ब्रह्मांड का माद्दा लगातार रौशनी की लहरों में तबदील हो रहा है और पूरे अंतरिक्ष में इस प्रकार पसर रहा है कि फिर से अपनी जत्थेबंद्धक (Organised Form) में नहीं आ सकता। समस्त विश्व का माद्दा या तो एक दिन अपने आपको शक्ति के रूप में तबदील कर लेगा या तापमान का मृत्यु दर्जा धारण कर लेगा। संसार की यह अधिक से अधिक अस्थिरता की दशा होगी। यह प्रक्रिया बहुत तीव्र गति से बढ़ रही है और किसी साधन द्वारा भी कम नहीं हो सकती। उस समय हमें किसी रचनहार एवं दैवी शक्ति की आवश्यकता महसूस होगी जो पुन: इस संसार को उसका पहले वाला रूप प्रदान कर सके अथवा संसार शक्ति को संगठित कर सके। याद रहे कि यह सिद्धांत 'द्वंदात्मक पदार्थवाद' (Dialectical materialism) के 'विपरीत शक्तियों के अंतरी प्रवेश' के सिद्धांत के सर्वथा उलट है और यह पलटाया नहीं जा सकता।

कितने आश्चर्य की बात है कि माद्दा-प्रस्त संसार रचना की एक स्वचालित मशीन के साथ तुलना करते हैं। उनके अनुसार संसार रचना

एक ऐसी रचना है जिसका रचनहार कोई नहीं, एक ऐसी कला है जिसका कलाकार कोई नहीं, एक ऐसा अद्भुत डिज़ाइन है जिसका डिज़ाइनर कोई नहीं। कितनी आश्चर्य की बात है कि अंधा माद्दा विकास की निश्चिय गाडीराह पर अपने आप चलता जाए। यह कभी हो ही नहीं सकता। विज्ञान किसी भी मशीन को स्वचालित चेतन सिद्ध नहीं कर सकती। इलेक्ट्रानिक कंप्यूटर्ज जैसी मशीनें भी जिन्हें मशीनी दिमाग कहा जाता है, को तैयार करने में दस बीस नहीं बल्कि सैंकड़ें मनुष्यों के दिमागों ने वर्षों मेहनत की है। वे अपने आप ही तैयार होकर काम नहीं करने लग पड़े। यदि एक मामूली मशीन बनाने में इतनी बुद्धि की आवश्यकता है तो क्या संसार-रचना, जिसे देखकर बड़े-बड़े वैज्ञानिक मुंह में उंगलियां डालते हैं, को रचने के लिए किसी बुद्धि एवं सिद्धांत की आवश्यकता नहीं? क्या यह संसार-रचना उद्देश्यपूर्ण नहीं? क्या मनुष्य-जीवन का कोई मनोरथ नहीं? गुरु साहिब बताते हैं कि यह रचना अकाल पुरख ने अपने हुक्म और इच्छा से की है। जीव और माद्दा, देश और काल उसी के पैदा किये हुए हैं :

ओअंकारि ब्रहमा उतपति ॥
ओअंकारु कीआ जिनि चिति ॥
ओअंकारि सैल जुग भए ॥
ओअंकारि बेद निरमए ॥ *(पन्ना ९२९)*

संसार के माद्दा को हरकत (गति) देने वाली अवश्य कोई शक्ति है। इंग्लैंड के प्रसिद्ध विज्ञानी न्यूटन के गति के पहले नियम के अनुसार कोई भी वस्तु अपनी विश्राम या गति की अवस्था को बदल नहीं सकती जब तक कि कोई बाहरी शक्ति उस पर परिवर्तन हेतु न लगाई जाए। हम पूछते हैं कि ब्रह्मांड के माद्दे को हरकत में लाने वाली प्रथम प्रकृति अथवा शक्ति कौन-सी थी? संसार का आदि कारण कोई अवश्य है। गुरु साहिब तो कहते हैं कि आदि कारण कहना भी उसको देश-काल की सीमा में लाना है। वह सब कारणों का कारण 'करन कारन' है।

प्रो. ए. एन. व्हाईटहेड का कथन है :

"पदार्थक संसार के साधारण सर्वेक्षण से जो निष्कर्ष निकलता है, वो यह है कि भौतिक शिक्षा के सिद्धांतों की शब्दावली में संसार की क्रियाशीलता को आज तक न बता पाने का कारण यह है कि हमने किसी सर्वव्यापक (माद्दी शक्ति के विपरीत) शक्ति को आंखों से ओझल कर रखा है। यह सर्वव्यापक शक्ति अपने कार्य-क्षेत्र में इतनी विशाल और बिखरी हुई है कि हमारी समीक्षा और विचार सामर्थ्य से बाहर है।"

यह विशालता और बिखराव अनुभवी आंखों की पकड़ में आता है। श्री गुरु नानक देव जी का 'पातशाह' तो 'दिसै ज़ाहिरा' है।

गुरमति के अनुसार माद्दा और शक्ति एक ही चेतन शक्ति के पैदा किए हुए हैं। आइए, अब माद्दा और शक्ति के संबंध पर विज्ञान द्वारा विचार करें :-

पदार्थवादियों के अनुसार तो माद्दा मूल वस्तु है और चेतनता माद्दा का विकसित रूप है। यह गुरमति सिद्धांत के विपरीत है। हम पदार्थवादियों से पूछते हैं कि कलाकार ने कला को जन्म दिया है या कला ने कलाकार को? डिज़ाईनर डिज़ाईन बनाता है या डिज़ाईन डिज़ाईनर को? प्रसिद्ध दार्शनिक बर्गसन (पहले नास्तिक था) पूछता है कि क्या कुछ परमाणुओं का इकट्ठ शैक्सपियर की अमर रचना को जन्म दे सकता है? क्या वर्णमाला के कुछ अक्षरों की वैज्ञानिक तरतीब बाइबिल को, बगैर चेतन अंत:

करण के जन्म दे सकती है? क्या कुछ रासायनिक और भौतिक क्रियाओं के मेल से उस हंसी का कारण पता किया जा सकता है जो बर्गसन के विचारों को सुनने वालों में पैदा हुई? बर्गसन लिखता है, जब मुझे प्रकृति के अद्भुत नज़ारे देखने का मौका मिला तो मुझे धरती के सीने पर और पहाड़ों की वादियों में प्रकृति का कोई अगाध दिल सांस लेता अनुभव हुआ। उसके प्रयोगशाला के सूत्र प्रकृति के सौंदर्य और खूबसूरती की ताब न सह सके। वैज्ञानिकों ने माद्दे को शक्ति में और शक्ति को माद्दे में तबदील कर लिया है। उन्होंने मेसनज (Mesons) तैयार किए हैं जो निरोल शक्ति को पदार्थ में बदलने से बनते हैं। ऐटम और हाईड्रोजन बमों में माद्दे को शक्ति में बदला जाता है। मतलब यह कि माद्दा या प्रकृति भी शक्ति का ही रूप है। माद्दा शक्ति का निवास-स्थान है। बर्गसन माद्दे को जीवन रौ की पलटवीं धारा कहता है। जब हम सर्वेक्षण करते हुए माद्दे की सबसे अंतिम तह इलेक्ट्रॉनों, प्रोटॉनों तक पहुंचते हैं तो हमें पता चलता है कि माद्दे के ये अंश विद्युत से बने हुए हैं। विद्युत क्या है? निरोल शक्ति। इसमें शक्ति संगठित रूप में है। कहते हैं कि एक तोला तांबे में आठ करोड़ घोड़ों की शक्ति होती है। शक्ति और माद्दे के संबंध को प्रसिद्ध विज्ञानी स्वर्गीय डॉ आईनस्टाईन ने इस प्रकार बताया है:

$E= Mc^2$

E= शक्ति

M= पदार्थ की मात्रा (माद्दा)

C^2=रौशनी की गति (जो १८६००० मील प्रति सेकंड है) का वर्ग

मुद्दे की बात यह है कि माद्दा शक्ति की उपज है। चेतन शक्ति ही स्वतंत्र आत्मिक रूप है और संगठित होकर सिकुड़कर माद्दा बन जाती है। प्रसिद्ध विज्ञानी J.W.N. Sullivan अपनी पुस्तक Limitations Of Science में लिखता है :

"To put it briefly, the electron, the ultimate constituent of matter, is found to have properties both of wave and a partical. The old partical conception, as used by Bohr, is altogether inadiquate. And with this discovery the last possibility of picturing the electron is gone. It is strange that more we investigate the true nature of matter, the more illusive it becomes."

भावार्थ :-"संक्षिप्त में माद्दे के अंतरीव अंश इलेक्ट्रॉन, लहरों एवं अणुओं की, दोनों प्रकार की विशेषताएं लिए हुए मिलते हैं। माद्दे का पुरातन परमाणुवादी सिद्धांत, जो बोहर प्रयोग में लाया, बिलकुल अधूरा सिद्ध हुआ है और इस खोज के साथ इलेक्ट्रॉनों की प्राकृतिक चितरण की अंतिम संभावना भी पूरी तरह खत्म हो जाती है। यह आश्चर्यजनक है कि जितना हम माद्दे की वास्तविकता जानने का प्रयत्न करते हैं उतना ही अधिक वह छल रूप होता है।"

श्री गुरु नानक साहिब बताते हैं कि संसार की उत्पत्ति एवं प्रलय शबद द्वारा होती है। गुरमति का यह सिद्धांत विज्ञान की आधुनिक खोज के साथ मेल खाता है। माद्दा भी शक्ति की लहरों में ही तबदील हो जाता है।

बुद्ध मत के अनुसार संसार रचना सुन्न से होती है परंतु गुरु साहिब बुद्ध मत के सुन्न से भाव नेस्ती का नहीं लेते। सुन्न से भाव बुद्ध मत के अनुसार शून्य है। गुरु साहिब सुन्न में भी निर्गुण ब्रह्म का वास बताते हैं :

सुंन कला अपरंपरि धारी ॥

आपि निरालमु अपर अपारी ॥
आपे कुदरति करि करि देखै सुंनहु सुंनु उपाइदा ॥
(पन्ना १०३७)

पदार्थवादी दर्शन के जन्मदाता कार्ल मार्क्स के साथी फ्रैडरिक एंगल्ज ने अपनी संसार-प्रसिद्ध पुस्तक Dialectics Of Nature में स्पष्ट कहा है कि बिंदु अवस्था में मात्रा का अभाव नहीं होता। (Zero is not devoid of the content).

विकास सिद्धांत (Evolution Theory) के अनुसार जैविक पदार्थों की उत्पत्ति समुद्र (पानी) में से हुई है। साधारण माद्दा तत्वों के मेल से एक जिल्भ जैसी (Jelly Like) पैदा हुई जो विकास द्वारा भिन्न-भिन्न रूप लेती असाधारण बनती गई। गुरमति भी इसी सिद्धांत की पुष्टि करती है और जीवन का प्रारंभ या स्रोत पानी को मानती है :

पहिला पाणी जीउ है जितु हरिआ सभु कोइ ॥
(पन्ना ४७२)

गुरु साहिब हर चीज़ का स्रोत अकाल पुरख को मानते हैं। वही सूक्ष्म और वही स्थूल वही सारे संसार का सूत्र रूप आधार है और अपनी कला द्वारा सर्व भरपूर है। आधुनिक विज्ञान ने भी जीव-निरजीव के भेद को मिटा दिया है। भारत के प्रसिद्ध जीव विज्ञानी सर जगदीश चंद्र बोस ने अपने सूक्ष्म यंत्रों के प्रयोगों द्वारा सिद्ध कर दिया है कि जीवन पत्थर, वनस्पति, धातु आदि चेत, अचेत सब में विद्यमान है। जीवन सर्वव्यापक है कहीं प्रकट है, कहीं गुप्त।

माद्दे को शक्ति में बदलने की बात केवल अद्‌भुत ही नहीं, महत्त्वपूर्ण भी है। इसके साथ हमें आधुनिक विज्ञान की ओर से एक संकेत मिलता है कि माद्दी संसार की रूप-रेखा बाहरमुखी और ठोस नहीं, जैसा कि हम पहले समझते रहे हैं, बल्कि इसकी खासियत मानसिक है। प्रो. ऐडिंगटन अपनी संसार-प्रसिद्ध पुस्तक Science & The Unseen World में लिखता है- "देश एवं काल, माद्दा, प्रकाश, रंग-रूप एवं माद्दी वस्तुओं का पर्यावरण जो हमें सर्वथा यथार्थक अनुभव होता है, भौतिक विज्ञान के प्रत्येक यंत्र से जांचा-परखा गया है और गहन समीक्षा के बाद हम चिन्हों तक पहुंचते हैं। तद्यपि यह संसार यथार्थक है यदि इन चिन्हों और संकेतों की कोई पृष्ठिभूमि हो।" आगे चल कर वह लिखता है- "हमारा विचार है कि हम इस पृष्ठभूमि से बिलकुल कटे हुए नहीं हैं। यह वही पृष्ठभूमि है जिसके साथ हमारे व्यक्तित्व और चेतनता का संबंध है और हमारे स्वभाव के रूहानी पहलुओं से संबंद्धित है जो चिन्हवाद द्वारा वर्णन नहीं किए जा सकते।"

उपरोक्त विचार का परिणाम यही निकलता है कि संसार की नुहार एवं रूप-रेखा वह नहीं जो अठाहरवीं अथवा उन्नीसवीं शताब्दी के वैज्ञानिकों ने रेखांकित की थी। अठाहरवीं शताब्दी के विज्ञानी तो यहां तक कहने लग पड़े थे कि वे किसी भी उस विचार को मान्यता नहीं देंगे, जिसका मशीनी रूपांतरण न बन सकता हो परंतु वे अपने यत्नों में बुरी तरह नाकाम रहे। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में ही वैज्ञानिकों का पदार्थक संसार की वास्तविकता के प्रति रुख बदलने लग पड़ा था। विश्व के बहुत-से प्रसिद्ध विज्ञानी आईनस्टाईन, एडिंगटन, जेम्ज जीन, पलैंक, सुलीवान आदि भी इसी विचार के समर्थक थे कि संसार की मूल शक्ति मानसिक एवं चेतन है।

हमने देखा कि विज्ञान की अब तक की खोजें गुरुमति की विचारधारा ही नहीं दर्शाती

अपितु गुरुमति-ज्ञान की पुष्टि भी करती हैं, जो गुरु साहिबान ने उस समय दिया जब आधुनिक विज्ञान अभी खड़े होना ही सीख रही थी और इसके गगनों में परवाज़ भरने वाले पंख अभी नहीं निकले थे। गुरमति विचारधारा के अनुसार गुरु साहिबान की समूची शिक्षा दर्शन और पूरे श्री गुरु ग्रंथ साहिब का निचोड़ मूल मंत्र है। श्री गुरु नानक देव जी ने 'मूल मंत्र' में उस अंतिम सत्य वस्तु ब्रह्म के बारे में इस प्रकार कथन किया है :

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥
(पन्ना १)

विश्व की अंतिम एवं मूल सत्ता को श्री गुरु नानक देव जी ने '१' (एक) के अंक सहित प्रकट किया है और यह '१' ही सृष्टि का मूल है। समूची प्रकृति, समूची सृष्टि इस '१' का ही पसारा है। यह '१' ही निर्गुण ब्रह्म है और अपनी कवाउ सत्ता द्वारा पसाउ करके सगुण, एक से अनेक हो जाता है। उसकी एकता ओअंकार अथवा सगुण रूप में भी रहती है। याद रहे कि यह '१' गणित विद्या की गिनती का '१' नहीं, यह सृष्टि की समूची एकता का चिन्ह है। परमात्मा निरंतर एक है। सगुण रूप में भी एक ही है और एक ही रहता है। कई मत परमात्मा को केवल एक कल्पित हस्ती ही मानते हैं परंतु गुरु साहिब का बताया प्रभु एक यथार्थक व्यक्तित्व है। उसका अस्तित्व है, जिसे अहं के त्याग के बाद अनुभव किया जा सकता है।

यही एकता निर्गुण रूप में जब सृष्टि का दृष्टमान रूप नहीं होती, निरंकार कही जाती है। जब यही अपनी हुक्म-सत्ता द्वारा विस्तार करती है और प्रकृति की रचना करती है, तब इसे 'ओअंकार कहते हैं। सारी सृष्टि की रचना का कारण यह निर्गुण ब्रह्म (प्रभु) ही है, जो स्वयं अपनी प्रकृति का निर्माण कर उसमें निवास किए बैठा है और अपनी रचना को विस्माद में आकर देख रहा है। निर्गुण रूप में यह सत्ता रूप, रंग, रेख, भेख, चक्र, चिन्ह, वर्ण, जाति आदि से बाहर, अगम, अगोचर, अतुल्य, अलख और सत्त-चित्त आनंद हस्ती है।

'ओअंकार' होकर यह हस्ती नाम रूप की रचना करती है। 'ओअंकार' उसका आकार रूप है और नाम रचकर वह सगुण साकार हो जाती है :

आपीन्है आपु साजिओ आपीन्है रचिओ नाउ ॥
दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ ॥
दाता करता आपि तूं तुसि देवहि करहि पसाउ ॥
तूं जाणोई सभसै दे लैसहि जिंदु कवाउ ॥
करि आसणु डिठो चाउ ॥ (पन्ना ४६३)

यहां नाम संज्ञा नहीं अपितु इसका आशय उस सर्व व्यापक हस्ती से है जो पूरे दृष्टमान जगत का आधार है और जिसने खंडों, ब्रह्मांडों को धारण किया हुआ है। नाम और शबद एक ही वस्तु है और यही निरंकार का सच्चा चिन्ह है। शबद अथवा नाम द्वारा ही निरंकार रूपमान होता है या जाना जाता है। नाम सर्व आध्यात्मिक गुणों का खज़ाना है, नाम सभी रूहानी और प्राकृतिक शक्तियों का स्रोत है। नाम अमृत है, नाम मुक्ति दाता है, नाम सभी बख़्शिशें करने वाली कामधेनु गाय है। कल्प वृक्ष भी नाम का ही काविक रूप है। मुद्दे की बात कि नाम ही सौंदर्य है, नाम ही एकता है, नाम ही रत्नों का भंडार एवं खज़ाना है। गुरबाणी बताती है कि सबसे उत्तम वस्तु नाम ही है। नाम के बिना मनुष्य बावला है।

नाम ही जीवन है। नाम के बिना सब मुर्दा है। नाम जीवन-दान है। नाम हुक्म है।

नाम ही गुरबाणी है जो गुरु-हृदय में निरंकारी मंडलों से प्रवेश हुई। यह नाम आदि जुगादि एवं अनादि निरंकारी सत्ता है। सिक्ख धर्म का नाम दर्शन विश्व के धार्मिक इतिहास में विशेष स्थान रखता है।

सांख्य मत का ख़्याल है कि सृष्टि रचना प्रकृति का काम है। जैसे हमने पहले शुरू में विज्ञान संबंधी विचार करते हुए बताया था कि अंधा माद्दा विकास के गाडी राह पर कभी चल ही नहीं सकता। इसलिए संसार रचना का कारण हमें प्रकृति के गुणों के विकासात्मक विस्तार में से नहीं मिल सकता। गुरु साहिब अकाल पुरख को संसार रचना का कारण मानते हुए उसको 'करता पुरख' कहते हैं। उसका हुक्म ही कर्त्ता सत्ता या कर्त्ता का रूप धारण करता है। गुरु साहिबान माया को संसार रचना का कारण नहीं मानते बल्कि माया भी उसी 'एक' की ही पैदा की हुई है। सनातन दर्शन के अनुसार संसार रचना उसकी देखभाल और काल तीन देवताओं ब्रह्मा, शिवजी और विष्णु के जिम्मे है। गुरमति इससे सहमत नहीं है, बल्कि ब्रह्मा, विष्णु और शिव आदि को भी काल के अधीन और अकाल की रचना ही बताती है :

ओअंकारि ब्रहमा उतपति ॥
ओअंकारु कीआ जिनि चिति ॥
ओअंकारि सैल जुग भए ॥
ओअंकारि बेद निरमए ॥ (पन्ना ९२९)

अर्थात ब्रह्मा आदि सब देवताओं की उत्पत्ति 'ओअंकार' से है। 'ओअंकार' से ही आत्मा पैदा होती है जो उसका निज आपा या स्व प्रकटन है जो हउमै (अहम्) के अधीन भिन्न-भिन्न जान पड़ता है। 'ओअंकार' से ही सैलजुग यानी देश-काल की रचना होती है। सारी रचना देश-काल के अधीन है। केवल एक निरंकार ही देश-काल से बाहर है। समस्त रचना संयोग-वियोग के सिद्धांत के अनुसार क्रिया करती है। श्री गुरु नानक साहिब के परमात्मा के बारे में कर्त्ता होने के विचार ने सिक्ख इतिहास में अपना विशेष प्रभाव रूपमान किया है। संपूर्ण सिक्ख इतिहास प्रभु रूप व्यक्तित्वों की मुंह बोलती तस्वीर है। जो समाज के निर्माण और विकास के किसी न किसी पहलु में नये किरदार पैदा करते और मानवता को नये दृष्टिकोण प्रदान करते नज़र आ जायेंगे।

कई मत कहते हैं कि परमात्मा सृष्टि की रचना कर उससे बाहर रहता है, जैसे कि बढ़ई मेज़ से, परंतु श्री गुरु नानक देव जी परमात्मा को कर्त्ता मानने के साथ यह भी मानते हैं कि वो सर्व व्यापक है और संसार-रचना के कण कण में समाया है और सर्व शक्तिमान है।

सर्व शक्तिमान एवं कर्त्ता होने के कारण प्रभु को किसी का भय नहीं क्योंकि सब उसकी पैदाइश होने से कोई दूसरा उसके मुकाबले में नहीं। यह विचार बहुदेव विचारधारा को भी रद्द करता है, जिसके अनुसार देवते आपस में लड़ते रहते थे, अपनी ताकत दूसरे द्वारा छिन जाने के डर से भय खाते थे। ये देवते बहुत क्रोधवान भी हो जाते थे और कई प्रकार की भीष्ण तबाहियां करते थे। इस्लाम में भी परमात्मा का रूप जब्बार और कह्हार (जब्र और कहर करने वाला) बताया गया है। श्री गुरु नानक साहिब का रब प्रसादी है। भूलों को बख़्शने वाला, प्रेम से परिपूर्ण, निरवैर व्यक्तित्व है। इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि वह इंसाफ करने वाला या पापियों एवं दुष्टों को दंड देने वाला नहीं, बल्कि स्वाभाविक और फितरत वह निरवैर है।

वह हस्ती अकाल है, काल से ऊपर है काल की सीमाओं से मुक्त है। देश-काल का कर्त्ता होने के नाते वह इसकी कैद में हो भी कैसे सकती है? वह सर्वव्यापी एवं अनादि है। वह सर्वव्यापी आत्मा, ब्रह्म, प्रभु, देश-काल के अधीन नहीं।

वह हस्ती कोरी कल्पना ही नहीं बल्कि वास्तविकता है, अस्तित्व है, मूर्त है। मूर्त भी ऐसी जो सुंदर है, अकाल है। समय के अधीन नहीं, इसके प्रभाव तले नहीं।

यह मूर्त, यह अस्तित्व अनादि है, अजूनी है यानी किसी योनि में नहीं आता।

प्रभु हस्ती चेतन है और उसका प्रकाश अपने आप से है। उसको किसी आधार की आवश्यकता नहीं। वह सैभं (स्वयंभू) है।

वह हस्ती ज्ञान दाता भी है। इसीलिए वह गुरु है। रास्ता दिखाने वाला है, रौशनी देने वाला है। हज़ारों सूरजों की रौशनी उसके तुल्य नहीं। ज्ञान-दाता के साथ ही वह मेहरवान, प्रसादी बख़्शिंद तथा रहमतों का भंडार भी है।

इस पूरी विचार चर्चा का निष्कर्ष यही है कि गुरु साहिबान का दर्शाया हुआ सिक्ख धर्म एक सर्वव्यापक धर्म है जो निरोल वैज्ञानिक ही नहीं अपितु विज्ञान को नई प्रेरणाएं तथा नए दृष्टिकोण भी देता है। यह एक मानववादी धर्म है जिसके मुख्य अंश मनुष्य मात्र की सेवा, भ्रातृ भाव, जात-पात का खंडन परस्पर प्यार, हमदर्दी सहनशीलता सब्र संतोष के साथ ही दैवी शूरवीरता शिष्टाचार, देश-भक्ति, स्वाभिमान, इंसाफ तथा नम्रता है।

गुरु साहिबान की शिक्षा में किसी फ़िजूल, फालतू और समाज पर हावी कर्मकांडों के लिए कोई स्थान नहीं, जैसे कि सूतक-पातक, तीर्थ-स्नान, यज्ञ, धूनी रमाना, होम, शरीर पर राख मलना, सन्यास धारण करना, कान छिदवाना, बुत पूजा, नंगे पांव भ्रमण, मढ़ी-मसाण पूजा, शिवलिंग पूजा, पितृ पूजा, श्राद्ध, व्रत, नियोली कर्म, मौन वर्त, गृहस्थ त्याग आदि।

गुरु साहिबान की शिक्षा चढ़दी कला (परमानंद) की धारणी और आशावादी है। इस चढ़दी कला और आशावाद को सिक्ख इतिहास के पतरे रूपमान करते हैं। यह शिक्षा केवल दिमागी वर्जिश नहीं बल्कि एक कर्मण्य अनुभव (अमली तजुर्बा) है। अमल रहित दमगजों को गुरु साहिब महत्त्व नहीं देते।

गुरु साहिब की शिक्षा अंत:करण को रौशन करती है और हर तरह के वहम-भ्रम, जादू-टोने, जंत्र-मंत्र, शकुन-अपशकुन, तिथ-वार, ग्रह एवं मुहूरत आदि का खंडन करती है।

गुरु साहिबान ने सिक्ख धर्म की बुनियाद समाजवादी विचारों पर रखी है, जिन का आधार गुरु साहिब का महान ज्ञान और विशाल विवेक बुद्धि है। गुरु साहिब मनुष्य मात्र को हंसते-खेलते, खाते-पीते, गृहस्थ में रहकर मुक्ति प्राप्त करने, स्वयं नाम जपने व औरों को जपाने, मेहनत की खाने, औरों की मदद करने, बांटकर खाने, सेवा सुश्रुषा और हमदर्दी द्वारा सब का भला मांगने की सीख देते हैं :

हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ विचे होवै मुकति ॥ *(पन्ना ५२२)*

सारागढ़ी का शहीदी साका

-प्रो पिआरा सिंघ 'पदम'*

सिक्ख इतिहास में यह एक निश्चित शानदार रिवायत है कि सिंघ सूरमें (शूरवीर) जहां डट जायें, फिर चाहे शीश कट जाये, कभी पीछे नहीं हटते। यह पाठ उन्होंने श्री अनंदपुर साहिब, श्री चमकौर साहिब तथा श्री मुक्तसर साहिब की जंगों में दशम गुरु जी की निगरानी तले अच्छी तरह से दृढ़ किया हुआ है। जब सतलुज के किनारे स. शाम सिंघ अटारीवाले के नेतृत्व में वीर बहादुर सिक्ख फिरंगियों के विरुद्ध जूझे तो भी यही रीति निभाई गई, जिसको शाह मुहम्मद ने इन शब्दों में कलमबंद किया है :
'शाह मुहम्मद सिरां दी ला बाजी, नहीं सूरमे मोड़दे अंग मीआं।'

पठानी इलाके वज़ीरस्तान में सारागढ़ी के मुकाम पर १२ सितंबर १८९७ को २१ बहादुर सिंघ भारी पठानी हजूम से लड़ते-लड़ते शहीदियां पा गए किंतु किसी ने भी जान बचाने के लिए सफैद झंडा खड़ा नहीं किया। इन अमर शहीदों की याद में तीन स्थानों पर शहीदी स्मारक बनाए गए-- सारागढ़ी, श्री अमृतसर तथा फिरोज़पुर इस लिए कि ज्यादातर योद्धे इसी इलाके के थे। फौजी अफ़सरों के दिए विवरण के अनुसार यह दासतां स. गुरबख़्श सिंघ, मैनेजर सिक्ख कन्या महाविद्यालय फिरोज़पुर ने कलमबंद की थी, वही हू-ब-हू यहां दी जा रही है।

३६ नं. पलटन का कारनामा : ३६ नं. पलटन जिसको ४/११ सिक्ख के नाम से याद किया जाता है। २० अप्रैल १८८७ ई. को कर्नल कुक साहब की कमांड तले छावनी जलंधर में खड़ी हुई थी। १८९६ ई में यह पलटन बदलकर कुहाट चली गई। २ जनवरी १८९७ ई को कुहाट से बदललर फोर्ट लॉक हार्ट पहुंच गई। फोर्ट लॉक हार्ट की एक पिक्ट पोस्ट का नाम सारागढ़ी था तथा दूसरी का नाम गुलस्तान था।

कर्नल हार्टन साहब किला लॉक हार्ट के इंचार्ज (प्रभारी) थे कि २७ अगस्त १८९७ ई को अरकज़ई पठानों के कबीले ने गुलस्तान पोस्ट पर हमला किया। कर्नल हार्टन साहब ने अपने कुछ जवानों की मदद लेकर गुलस्तान पोस्ट को दुश्मन से लड़कर बचा लिया, जिस में लेफ्टिनेंट ब्लेयर साहब ज़ख्मी हुए एवं दुश्मन पीछे हट गए।

२८ अगस्त को दुश्मन ने फिर छोटी पोस्टों संगर और धार पर हमला कर दिया। वहां से भी दुश्मन मुंह की खाकर पीछे मुड़ गया।

३ सितंबर को दुश्मन ने फिर इकट्ठा होकर गुलस्थान पोस्ट पर हमला कर दिया। कर्नल हार्टन साहिब भी समय पर मदद लेकर पहुंच गए। ४ बजे शाम का वक्त था कि दुश्मन ने हिफ़ाजती लाइनों को तीन तरफ से आग लगा दी मेजर डेविस साहिब जो कि उस समय पोस्ट के कमांडर थे, ने हुक्म दिया कि जवान पोस्ट से बाहर जाकर यह आग बुझाएं। यह हुक्म मिलने पर एक तरफ से स. सुंदर सिंघ,

कलम मंदिर, लोयर माल, पटियाला।

स. हंसा सिंघ, तथा स. जीवन सिंघ एवं दूसरी तरफ से स. गुरमुख सिंघ, स. सोभा सिंघ तथा स. भोला सिंघ आग बुझाने के लिए बाहर निकले तभी दुश्मन ने चहुं तरफ से गोलियों की बौछाड़ कर दी। सूर्य छिपने के बाद दुश्मन ने फिर हमला किया तथा पोस्ट के किचन में दाख़िल हो गया और पोस्ट के भीतर के सिपाहियों को गोली बारूद से मारना शुरू कर दिया भीतर से सिक्ख सिपाहियों ने बड़ी सख़्ती से जवाब दिया अर्थात् अंदर से भी गोलियों की बौछाड़ ही दुश्मन पर आई।

कर्नल हार्टन साहब इस वक्त चाहते थे कि रात अंधेरी है, गोली-बारूद का पूरा-पूरा फायदा उठाया जाना चाहिए, इस लिए कोई जवान जाकर बाहर आग जलाये ताकि दुश्मन का कुछ पता चल सके। इस पर सिपाही स. हरनाम सिंघ, स. घुल्ला सिंघ तथा स. वरिआम सिंघ पिक्ट पोस्ट से बाहर जाकर लकड़ियां इकट्ठा करके आग जलाकर रोशनी करने में कामयाब हो गए। इस रोशनी से दुश्मन को पीछे हटाने में बहुत मदद मिली। ४ सितंबर को दुश्मन ने लगभग वापिस होते हुए बाहर पुलिस की सभी पोस्टें जला दीं।

८ सितंबर १८९७ ई को दुश्मन ने फिर गुलस्थान, संगर एवं धार पोस्टों पर हमला कर दिया एवं एक सुकैड्रन जोकि कुरम वैली में से गुज़रता था तथा राशन ला रहा था, उसको भी लूट लिया।

११ सितंबर को एक कालम हंगू को वापिस आ रहा था कि अफ्रीदी तथा अरकज़ई पठानों ने उसको भी लूट लिया तथा लड़ाई सारी रात जारी रही।

१२ सितंबर १८९७ ई को लगभग नौ बजे सुबह का समय था दुश्मन ने दस हज़ार गिनती में इकट्ठा होकर सारागढ़ी पोस्ट पर हमला कर दिया। पोस्ट के लगभग १००० गज़ पर दुश्मन पहुंच गया तथा सारागढ़ी पोस्ट पर गोलाबारी शुरू कर दी। इस समय सारागढ़ी पोस्ट में सिर्फ २१ बहादुर सिक्ख जवान थे जिन्होंने दुश्मन के दस हज़ार लश्कर का डटकर मुकाबला करना शुरू कर दिया, उस समय उन बहादुर सिपाहियों को बाहरी कोई मदद मिलने की उमीद नहीं थी, स. गुरमुख सिंघ शीशा झंडी वाले सिपाही ने कर्नल हार्टन साहब इस प्रकार घिरे होने की ख़बर दी। कर्नल हार्टन साहब ने जवाब में हुक्म दिया कि पुजीशिनें संभालकर दुश्मन का डटकर मुकाबला करो परंतु ध्यान रहे कि गोली-सिक्का यूं ही ज़ाया (व्यर्थ) न हो। स. ईशर सिंघ हवालदार जो कि पोस्ट सारागढ़ी का उस वक्त कमांडर था, ने यह हुक्म मिलने पर अपने जवानों अच्छी पज़ीशिनों पर लगाकर दुश्मन पर गोली चलाने का हुक्म दे दिया।

लगभग आधा घंटा गुज़र जाने के बाद नायक स. लाल सिंघ, स. भगवान सिंघ तथा स. जीवा सिंघ सिपाही जंग के जोश एवं रोष में आकर पोस्ट के बाहर आकर दुश्मन पर फायर करने लगे तथा बहुत-से दुश्मनों का उन्होंने सफ़ाया किया। उनमें से नायक स. भगवान सिंघ वहीं शहीद हुए तथा नायक स. लाल सिंघ ज़ख्मी हुए, दुश्मन को मारते हुए सिपाही स. जीवा सिंघ, स. लाल सिंघ स. भगवान सिंघ की मृतक देह उठाकर किले में ले आए, स. गुरमुख सिंघ झंडी वाला प्रत्येक वाकिया की रिपोर्ट कर्नल हार्टन साहब को पहुंचाता रहा। बहुत सारे दुश्मन भी मारे गए और अंदर बहादुर सिंघों की गिनती भी कम होती गई परंतु बहादुर सिंघों ने दुश्मन को पोस्ट के पास न आने दिया। दुश्मन दस हज़ार की गिनती में थे और बहादुर सिक्ख

सिपाही मात्र २१ की गिनती में थे। स. गुरमुख सिंघ प्रत्येक बहादुर शहीद सिपाही की ख़बर कर्नल हार्टन साहब को देता रहा।

बाद दोपहर लगभग दो बजे का वक्त था। बहादुर सिक्खों का गोली-सिक्का ख़त्म हो गया। स. गुरमुख सिंघ कर्नल साहब को सूचना देता है कि सिक्का-बारूद ख़त्म हो गया है, और भेजो। जवाब मिलता है कि बहादुर बनो और धैर्य रखो। उधर दुश्मनों ने इन बहादुरों को सूचना दी कि हथियार फेंक दो, आपको कोई मदद आपकी पलटन से नहीं मिल सकती एक ही रास्ता जान बचाने का है कि हथियार फेंक दो। अंदर से बहादुरों से जवाब मिलता है; हम श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के सिंघ हैं, हम हथियार फेंकने शहीद होना मुबारक ख़्याल समझते हैं और जब तक एक भी ज़िंदा है, किले के समीप आपको नहीं आने देंगे। स. गुरमुख सिंघ ने फिर सूचना दी कि अब गोली-सिक्का बिलकुल ही ख़त्म हो गया है। दुश्मन किले के साथ मुर्दों की लाशें रखकर ऊपर चढ़ रहा है। जिस वक्त दुश्मन किले की दीवार पर चढ़ा तो उस वक्त शेष ७ सिपाही ज़िंदा थे। शीशा झंडी वाले ने फिर सूचना दी कि केवल दो सिपाही सोरड बिनट से किले पर चढ़ रहे दुश्मन से लड़ रहे हैं और पांच सिपाही किले में दाख़िल हुए दुश्मनों से लड़ रहे हैं।

अंतिम संदेश स. गुरमुख सिंघ झंडी वाला किले लॉक हार्ट में निम्नलिखित शब्दों में देता है :

"हमारे किला लॉक हार्ट में रहने वाले बहादुर भाइयो! लोग कहते हैं कि भाई तो बाजुएं होते हैं, अगर आप बाजुएं होते तो हमारा हाल आकर देखते, हमें गोलियां भेजकर ही सहायता करते, किंतु आपके भी कुछ बस में नहीं, दुश्मन ने सब रास्ते घेरे हुए हैं। भाइयो! हमने अपना सिपाही होने का धर्म पूरा कर दिखाया है तथा सतिगुरु के चरणों में अपने अफ़सरों के हुक्म को मानकर मुक्त होकर आपसे हमेशा के लिए जुदा होते हैं।"

इन २१ सिंघों की बहादुरी ने इंग्लैंड तथा हिंदोस्तान में धूम मचा दी। 'पाइयोनियर' अख़बार ने इन बहादुर सिंघों की बहादुरी को अपने हाथों में लेकर मज़मून लिखने शुरू किए। ३६ नं. सिक्ख पलटन के बहादुरी के गीत गाने शुरू कर दिए तथा बहुत भारी ऐजीटेशन शुरू कर दो, ताकि इस बहादुर पलटन का नाम यूं ही व्यर्थ न चला जाए। इनकी यादगार बनाने के लिए फंड भी जमा करना शुरू कर दिया। तीन जगह पर इन बहादुरों की यादगार कायम की गई :

(१) जहां ये बहादुर शहीद हुए अथवा सारागढ़ी (वज़ीरस्तान)।

(२) सिक्ख कौम की सेंटर प्लेस केसरी बाग, श्री अमृतसर।

(३) जहां के ज्यादा निवासी थे अथवा फिरोज़पुर।

यह बिल्डिंग १९०२ ई. में जिसका नाम सारागढ़ी मशहूर है २७११८-४-३ की राशि से बनी तथा पब्लिक के लिए १८-९-१९०४ ई. को सर चारलेस मौनटगुमरी लेफ़्टिनेंट गवर्नर साहिब पंजाब ने इसका उद्घाटन किया।

निम्नलिखित पत्थर अंग्रेजी, उर्दू, गुरमुखी तथा हिंदी में लगे हुए हैं :

'यह यादगार ३६ नं. सिक्ख पलटन की याद में बनाई गई है जो किला सारागढ़ी को बचाते हुए १२-०९-१८९७ को शहीद हुए। अख़बार 'पाइयोनियर' इलाहाबाद द्वारा चंदा एकत्रित करके इन बहादुर योद्धाओं की यादगार कायम की गई।'

निम्नलिखित नाम उन शहीदों के हैं जो

सारागढ़ी पोस्ट में शहीद हुए :-

१) नं. १६५ हवालदार ईशर सिंघ
२) नं. ३३२ नायक लाल सिंघ
३) नं. ५४६ लांस नायक चंदा सिंघ
४) नं. १३२१ सिपाही बुद्ध सिंघ
५) नं. १८२ सिपाही साहिब सिंघ
६) नं. ४९२ सिपाही उत्तम सिंघ
७) नं. ८३४ सिपाही नरैण सिंघ
८) नं. ८१४ सिपाही गुरमुख सिंघ
९) नं. ८७१ सिपाही जीवन सिंघ
१०) नं. २८७ सिपाही राम सिंघ
११) नं. ३५९ सिपाही हीरा सिंघ
१२) नं. ६८७ सिपाही दया सिंघ
१३) नं. ७९१ सिपाही भोला सिंघ
१४) नं. ७६० सिपाही जीवन सिंघ
१५) नं. १७३३ सिपाही गुरमुख सिंघ
१६) नं. १६३ सिपाही राम सिंघ
१७) नं. १२५७ सिपाही भगवान सिंघ
१८) नं. १५५६ सिपाही बूटा सिंघ
१९) नं. १६५१ सिपाही जीवा सिंघ
२०) नं. १२२१ सिपाही नंद सिंघ
२१) नं. १२६५ सिपाही भगवान सिंघ

अनुवादक : स. गुरप्रीत सिंघ भोमा

कविता

माता-पिता सम कोई नहीं

माता और पिता ही जग में, प्रकट रूप में हैं भगवान।
देना चाहिए सदा ही इनको, सबसे अधिक मान-सम्मान।
निश्छल प्यार सदा बरसाते, बाल्यकाल से करते पालन।
अपने शौक भले ही मारें, बालक का रखते हैं मन।
वे ही हैं, जो बालक की चिंता को अपना मानें हैं।
स्वयं भले ही कष्ट सहें, चिंता से उसे उबारे हैं।
वे ही हैं, जो बालक की उन्नति से ईर्ष्या नहीं करें।
आत्मा उनकी सुख पाती, नयनों से प्रेमाश्रु झरें।
स्वार्थ-भाव में डूबी इस, दुनिया में ऐसा प्यार कहां?
परदुख को जो अपना समझे, ऐसा अद्भुत भाव कहां?
रोम-रोम सिंचित बालक का, मात-पिता के सद्भावों से।
वृक्ष की भांति छांव करें वे, रक्षा करते कुप्रभावों से।
बालक का दायित्व यही है, कभी न उनको दुख होवे।
अपने हाथों घोर पाप यह, सपने में भी न होवे।
जितना सुख दे सकता हो, उनको देने का यत्न करे।
बाकी सब कुछ छोड़ प्रभु पर, सच्चे मन से कर्म करे।
मात-पिता की नम्र-भाव से, सेवा का अपना सुख है।
डूबे हैं जो स्वार्थ में उनको, अनुभव इसका दुर्लभ है।

-श्री प्रशांत अग्रवाल, ४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली-२४३००३ (उ. प्र.); मो : ९४११६०७६७२

जीवन में अत्यधिक कष्ट होना इस बात का प्रतीक नहीं कि भगवान है ही नहीं

-श्री ओम प्रकाश 'दार्शनिक'*

प्राय: इस संसार में दैहिक, दैविक और भौतिक तापों से तापित व्यक्ति अत्यधिक देखे जाते हैं। जो मनुष्य अपने जीवन की प्रारंभिक सीढ़ी से अंतिम सोपान तक दुखों और संकटों से संघर्ष करता रहता है और सुख की छाया से वंचित रहता है, वह हताश, निराश होकर कहता है कि ईश्वर है ही नहीं, यदि है भी तो वह कठोर है। धर्म और भगवान् पर से ऐसे मनुष्य की आस्था समाप्त हो जाती है। यही कारण है कि धर्म और भगवान् पर आस्थाहीन और अविश्वास रखने वाले अक्सर ये सवाल करते हैं कि यदि भगवान दयालु, न्यायप्रिय तथा कल्याणकारी है तो वर्तमान युग में पाप और दुखों की अधिकता क्यों है? अतंकवादी संसार में इतना आतंक मचाये हैं तो ईश्वर उनको दंड क्यों नहीं देता? आस्तिक लोग प्राय: स्वयं भी कह देते हैं कि इस जगत में धर्मात्मा कम और अधर्मी अधिक हैं। यह भी आम धारणा बन चुकी है कि बेईमान-भ्रष्टाचारी सुखी हैं और मौज से जीवन-यापन कर रहे हैं, जबकि ईमानदार लोग प्राय: दुखमय जीवन गुज़ारते हैं। ऐसी स्थिति में इस बात पर कैसे विश्वास किया जाये कि एक महान चेतन्य सत्ता इस सृष्टि की रचयिता तथा संचालक है? यदि सचमुच सृष्टि की रचना किसी विवेकी शक्ति द्वारा हुई है तो विश्व में सर्वत्र सुख, आनंद और पुण्य कर्मों का ही प्रसार देखने में आना चाहिए।

वास्तव में यह एक ऐसी जटिल समस्या है जिसका समाधान करने में अनेक आस्तिक, बुद्धिमान-जन भी लड़खड़ा जाते हैं। जिन पाश्चात्य ईश्वरवादियों ने इसका उत्तर दिया है उन्होंने कहीं-कहीं अपनी असमर्थता भी स्वीकार की है।

*३६५/१६८-A, अलोपी बाग, इलाहाबाद-२११००६

'थीइज्म' ग्रंथ का रचनाकार फ्लिण्ट इस संदर्भ में उत्तर देता है कि "यदि मुझे आप प्रश्न करें कि भगवान ने सभी को धर्मात्मा क्यों नहीं बनाया तो इसका मेरे पास कोई उत्तर नहीं हैं, क्योंकि यह एक ऐसा सवाल है जिसका कोई जवाब हो ही नहीं सकता तथा न उससे कोई लाभ है। आप यह भी प्रश्न करेंगे कि मानव को देवताओं की भांति क्यों नहीं रचा? फिर आप यह भी प्रश्न करेंगे कि भगवान ने देवताओं से भी सर्वोपरि प्राणियों की रचना क्यों की? इस तरह के प्रश्नों से 'अनावस्था-दोष' पैदा होता है।"

जिस तरह से अधिकांश व्यक्ति पाप के विषय में दोषारोपण करते हैं वैसा ही भाव कष्टों व दुखों के विषय में भी प्रकट करते हैं। वे कहते हैं कि जब भगवान् सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक है तथा प्राणियों का कल्याण भी चाहता है तो उसने ऐसी व्यवस्था क्यों नहीं की कि इस विश्व में कष्टों, वेदनाओं और दुखों का नाम ही न रहे। इस संदेह का निवारण करते हुए 'अल्फ्रेड रसेल वालेस' ने अपनी पुस्तक 'The World Of Life' में लिखा है कि कुछ आलोचकों को सांसारिक दुखों व कष्टों को देखकर अक्सर घृणा हो जाती है और वे कहने लगते हैं कि यह सृष्टि सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान और दयालु सत्ता द्वारा निर्मित नहीं हो सकती। इन लोगों ने कभी भी गंभीरता व शालीनतापूर्वक कष्टों व दुखों के मूल तक पहुंचने का प्रयास नहीं किया। उन्होंने यह कभी विचार नहीं किया कि जीवन के विकास के लिए कष्टों व दुखों का होना नितांत आवश्यक है। स्वयं डार्विन ने इस नियम पर बड़ा बल दिया है कि

इंद्रिय-शक्ति अथवा वेदना किसी प्राणी में उस समय तक नहीं उत्पन्न होती, जब तक वो उसके लिए उपयोगी न हो। इस सिद्धांत पर यदि गंभीरतापूर्वक विचार किया जाये तो निष्कर्ष यह निकलता है कि भगवान् हर प्राणी, वर्ग में उतना ही कष्ट-दुख पैदा करता है, जितनी कि उसके लिए आवश्यकता है।

फ्लिण्ट ने इसका निराकरण अपने उपर्युक्त ग्रंथ में कुछ अलग ही ढंग से किया है। उसका कथन है, "कष्ट परिश्रम के लिए प्रेरणा प्रदान करता है तथा परिश्रम द्वारा ही हमारा जीवन, हमारी शक्तियां नियमित तथा विकसित हो सकती हैं। इच्छा आवश्यकता का अनुभव करती है और आवश्यकता के अनुभव ही कष्टों व दुखों का रूप धारण कर लेते हैं।" याद रखें कि "ज़रूरत ही से आते हैं, सदा संताप घर-भर में। आप आने ही क्यों देते हैं, ज़रूरत को अपने घर में?" यदि मनुष्य में इच्छाएं तथा आवश्यकताएं न हों तो फिर क्या मानव रह सकेगा? यदि मनुष्य को समय-समय पर संघर्ष न करना पड़े तो क्या वह प्रयत्नशील, चतुर, बुद्धिमान, शिक्षित होगा? इसीलिए कहा गया है कि संघर्ष ही जीवन है। इस तरह आवश्यकता से उत्पन्न कष्ट, दुख प्राणियों की प्रगति तथा पूर्णता का साधन हैं। अतएव जो कष्ट इस प्रयोजन की पूर्ति करता है, उसे बुरा नहीं कहना चाहिए।

इसका एक अन्य पक्ष यह भी है कि कष्ट व दुख पूर्णता का ही साधन हैं। संभवतः प्राणियों की संरचना ही ऐसी है कि यदि प्राणी दुख का अनुभव न करे तो उसे सुख की अनुभूति भी नहीं होगी। संभव है कि यह तथ्य शत-प्रतिशत उचित न ठहरे, किंतु एक बात तो स्पष्ट है कि इस संसार में समस्त प्राणियों के लिए दुख वास्तव में आनंद का एक माध्यम है। जो मानव जाति को परिश्रम के लिए उत्तेजित करता है। छोटे प्राणियों में कष्टों की उपयोगिता का परिचय उतना ही प्राप्त होता है, जितना कि विवेकयुक्त मनुष्य में प्राप्त होता है। दुख का महत्त्व जितना शारीरिक बातों में है, उससे कहीं अधिक मानसिक बातों में मिलता है। दुख आत्मा को शुद्ध बनाने तथा मार्ग-दर्शन देने में परम सहायक है। दुख से हृदय की कठोरता में कमी आती है। दुख-कष्ट वस्तुतः एक प्रकार का तप है, साधना है। दुख से गर्व का दमन होता है। इससे साहस तथा धैर्य में वृद्धि होती है एवं दूसरों के प्रति सहानुभूति विकसित होती है। ऐसी अवस्था में कोई भी विवेकी मनुष्य विश्व में दुखों को देखकर उसके लिए भगवान को दोषी बनाने की तुलना में उसे धन्यवाद ही देगा।

नास्तिक विचार वाले मनुष्यों की भर्त्सना करते हुए "थियोसाफी" की संस्थापिका मैडम ब्लैवटस्की ने ज़ोरदार शब्दों में कहा कि परमात्मा तथा आत्मा के अस्तित्व को नकारना या अस्वीकार करना वास्तव में एक विनाशकारी कल्पना है। यह एक ऐसे उन्मत का प्रलाप है जो अपनी इच्छित कल्पना के आधार पर विश्व रचना को उद्भिज्जों अर्थात् धरती से बाहर निकलने वालों की भांति उगने वाली सामग्री के रूप में देखता रहता है तथा उसका कर्त्ता किसी को नहीं मानता है। ऐसे लोगों का विचार है कि यह सामग्री स्वयं ही प्रकट हुई है, स्वयं ही स्थित है, स्वयं ही विकसित होती है। यह समस्त सृष्टि अनायास ही पैदा हुई है तथा चलती ही जा रही है। इसका कोई उद्गम नहीं और न कोई निमित्त है।

मेरी अपनी धारणा है कि हम अपने विश्वास पर दृढ़ रहें। अपने जीवन में कुछ कष्ट होने अथवा किसी के कुछ कहने से भी हम अपने विश्वास को डगमगाने न दें। प्रभु का ध्यान करते हुए यदि कोई भी कष्ट, दुख, वेदना के कारण निराशा हो जाए तो इसका अर्थ यह नहीं कि हम प्रभु का ध्यान छोड़कर किसी अन्य पर विश्वास करने लगें। सब कुछ हम प्रभु को समर्पित कर दें, सब उसकी इच्छानुसार होने दें, यही हमारी मनोवृत्ति होनी चाहिए। जब तक हम जीवन में

आने वाले उतार-चढ़ाव के पथ से नहीं गुज़रेंगे तो सहनशक्ति प्राप्त नहीं कर सकेंगे। अंधकार और प्रकाश, धूप और वर्षा का स्वागत करें।

अमेरिका जैसे अत्यंत समृद्ध सभ्य और सुशिक्षित देश के प्रत्येक अस्पताल में आजकल ५० प्रतिशत बेड पागलों के लिए सुरक्षित रहते हैं। यही स्थिति लगभग हर पाश्चात्य देशों की है, क्योंकि वहां सफलता-असफलता लाभ-हानि जैसे प्रसंगों में तथाकथित बुद्धिवादी देश अपनी अनीश्वरवादी मान्यता के कारण उस गहराई तक नहीं उत्तर पाते हैं। सब कुछ इसी जीवन का परिणाम, प्रतिफल स्वीकार करते हैं। ऐसे में जब कोई बड़ी सफलता थोड़े से प्रयास से उनके हाथ लगती है, तो वे फूले नहीं समाते और अति प्रसन्न हो जाते हैं किंतु जब कोई विफलता उनको मिलती है तो उनका जीवन नीरस तथा भारस्वरूप प्रतीत होने लगता है। कभी-कभी वे मानसिक रूप से विक्षिप्त से हो जाते हैं। इसके विपरीत हमारे देश में जीवन के उतार-चढ़ाव को मात्र लौकिक दृष्टि से नहीं देखा जाता बल्कि प्रारब्ध तथा कर्मफल को भी उसमें सम्मिलित किया जाता है तथा अप्रिय प्रकरणों में उसे ईश्वरीय न्याय मानकर संतोष कर लिया जाता है।

देखने में आता है कि पाश्चात्य देशों में नास्तिकवादी चिंतन की सबसे बड़ी हानि अपराध-वृत्ति को बढ़ावा देना है। शायद यही कारण है कि पश्चिमी राष्ट्र आज अपराधों के जाल-जंजाल में उलझे हुए हैं। जहां यह मान लिया जाये कि अपराधी को मार देने से अपराध समाप्त हो जाएंगे, वहां कदाचित अपराधों का अंत नहीं होगा। कारण, अपराध के लिए दंड या फांसी सामाजिक व्यवस्था है। सरकारी कानून से दुष्कृत्यों पर नियंत्रण तो रखा जा सकता है परंतु अपराधविहीन समाज की कल्पना को साकार नहीं किया जा सकता। इसके लिए नियम नहीं आत्मानुशासन की आवश्यकता पड़ती है। चिंतनशील आस्तिक व्यक्ति ही आत्मानुशासित हो सकता है। चिंतनधारा के अंतर्गत नीतिमत्ता, कर्त्तव्य-परायणता, सेवा तथा सहायता सम्मिलित है, क्योंकि कर्त्ता का दृढ़ विश्वास होता है कि कर्म कभी निरर्थक नहीं होता, उसका परिणाम आज नहीं तो कल अवश्य प्राप्त होगा। कर्म फल के लिए धैर्य की नितांत आवश्यकता होती है।

मेरे विचार से आधुनिक युग में यद्यपि हम वैज्ञानिक प्रगति के चरमोत्कर्ष पर पहुंच ज़रूर गए हैं तथा अपराधियों की धर-पकड़ के लिए नित्य नये-नये परिष्कृत क्षेत्र भी विकसित हो चुके हैं, तथापि यह कहना अनुचित न होगा कि भविष्य में भी अपराध अपना स्थान बनाए रखेंगे। इसका एकमात्र निराकरण आस्तिकवादी विचारधारा को स्वीकार करना ही होगा। यदि सृष्टि रचना के पीछे किसी सर्वोपरि सत्ता को स्वीकार कर लिया जाए तो लाभ-हानि, जीवन-मरण, सफलता-विफलता, रोग-शोक जैसे गूढ़ कारणों से अति सहजता से पिंड छुड़ाया जा सकता है। इस चिंतन की गहरी तह में उतरने पर यह अनुभूति हो जाती है कि विश्व में प्रभु ने लाभ तथा सुख के साथ-साथ इनके विपरीत तथ्यों को क्यों गढ़ा है?

सत्यता तो यह है कि मनुष्य की प्रगति और हर्ष प्रभु को भी अभीष्ट है। अगर मानव जाति के जीवन में अवगति का डर न हो, तो उसके लिए प्रगति का महत्त्व भी नगण्य-सा लगता है। इसी प्रकार से उसे यदि कष्टों और वेदनाओं की पीड़ा की अनुभूति न हो तो फिर सुखानुभूति की महत्ता नहीं होगी। वास्तविकता तो यह है कि रात्रि के सघन अंधकार के पश्चात् ही दिन के स्वर्णिम प्रकाश का सच्चा आनंद अनुभव होता है। यदि जीवन में हमेशा सुख ही सुख हो या जहां हमेशा उजाला ही उजाला हो वहां जीवन नीरस तथा निरानंद हो जाएगा। यदि इस नज़रिए से विचार किया जाए तो भगवान् पर लगने वाले आरोप निरस्त हो जाएंगे तथा यह स्पष्ट अनुभव होगा कि इसके पीछे भगवान् की कल्याणकारी भावना ही प्रमुख है।

(साभार : 'पंजाब सौरभ', फरवरी २००९)

गुरबाणी चिंतनधारा : ८३

सुखमनी साहिब : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

नीकी कीरी महि कल राखै ॥
भसम करै लसकर कोटि लाखै ॥
जिस का सासु न काढत आपि ॥
ता कउ राखत दे करि हाथ ॥
मानस जतन करत बहु भाति ॥
तिस के करतब बिरथे जाति ॥
मारै न राखै अवरु न कोइ ॥
सरब जीआ का राखा सोइ ॥
काहे सोच करहि रे प्राणी ॥
जपि नानक प्रभ अलख विडाणी ॥५॥ (पन्ना २८५)

१७वीं असटपदी की पांचवी पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह ने अकाल पुरख की अपार शक्ति एवं समर्थता का वर्णन करते हुए यह तथ्य उजागर किया है कि अगर वह मालिक चाहे तो तुच्छ से तुच्छ प्राणी में अपनी सत्ता टिकाकर उससे भी महान एवं विलक्षण कार्य करवा सकता है और उस मालिक की मनशा हो तो वह जीव को बिना श्वास के भी जीवित रख सकता है। कहने से अभिप्राय प्रभु सब कुछ करने एवं करवाने में समर्थ है तथा नामुमकिन को मुमकिन करते उसे एक पल का भी समय नहीं लगता।

श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि यदि छोटी-सी चींटी में परमेश्वर कल (शक्ति, ताकत) रख दें अर्थात् टिका दे तो वह (तुच्छ-सा प्राणी) लाखों लश्करों (सेना) को नष्ट करने के योग्य हो जाती है। जिस जीव को प्रभु आप जीवित रखना चाहता हो, उसे वह आप हाथ देकर हर मुश्किल से बचा लेता है।

मनुष्य अनेक उपाय अर्थात् कई तरह के यत्न करता है लेकिन प्रभु की रहमत के बिना वे व्यर्थ ही चले जाते हैं। ईश्वर के बिना न तो किसी को कोई मार सकता है और न ही बचा सकता है। समस्त जीवों का रक्षक प्रभु खुद ही है। गुरु पातशाह पावन संदेश देते हैं कि हे प्राणी! तू काहे को चिंताग्रस्त रहता है? तू समस्त चिंताओं से मुक्त होकर उस आश्चर्य चकित कर देने वाले विस्माद रूप परमेश्वर की आराधना कर अर्थात् उसका नाम जप।

गुरु पातशाह सर्वकला समर्थ प्रभु की अनंत ताकत का ज़िक्र करते हुए जीव को समझाना चाहते हैं कि उसकी ताकत और समर्थता अनंत-बेअंत है अगर वह तुच्छ से तुच्छ प्राणी पर भी रहमोंकर्म कर दे तो उसमें अपार शक्ति का संचार कर बड़ी से बड़ी ताकत वालों को भी उससे परास्त करवाकर उन्हें धूल चटा सकता है। नामुमकिन एवं असंभव दिखने वाले कार्य भी पल में संभव हो जाते हैं, यहीं नहीं जिसे प्रभु जीवित रखना चाहता है उसे हर मुश्किल में जीवित रख सकता है। जिसे वह मारना चाहे तो कोई उसे बचा नहीं सकता। इसीलिए तो कहा जाता है :

मारे आप तो राखे कौन ?
राखे आप तो मारे कौन ?

इस संदर्भ में हिंदी में एक उक्ति बहुतायत से प्रचलित है :

जाको राखे सांईया मार न साके कोए।
बाल न बांका कर सके जा जग वैरी होए।

गुरबाणी में अन्यत्र भी समझाया गया है कि यदि परमेश्वर किसी को शक्तिशाली बनाना चाहे या शक्तिहीन करना चाहे तो अत्यंत सहजता से बना सकता है :

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ९९२९७-६२५२३*

कीड़ा थापि देइ पातिसाही लसकर करे सुआह ॥
जेते जीअ जीवहि लै साहा जीवाले ता कि असाह ॥
नानक जिउ जिउ सचे भावै तिउ तिउ देइ गिराह ॥ *(पन्ना १४४)*

गुरबाणी समूची मानवता को यही पावन संदेश देती है कि जीव को सब तरह की चिंताओं से मुक्त होकर केवल सर्वकला समर्थ प्रभु की बंदगी करनी चाहिए और हमेशा उसके ही भय में रहना चाहिए।

बारं बार बार प्रभु जपीऐ ॥
पी अंम्रितु इहु मनु तनु ध्रपीऐ ॥
नाम रतनु जिनि गुरमुखि पाइआ ॥
तिसु किछु अवरु नाही द्रिसटाइआ ॥
नामु धनु नामो रूपु रंगु ॥
नामो सुखु हरि नाम का संगु ॥
नाम रसि जो जन त्रिपताने ॥
मन तन नामहि नामि समाने ॥
ऊठत बैठत सोवत नाम ॥
कहु नानक जन कै सद काम ॥६॥

१७वीं असटपदी की छठी पउड़ी में गुरु पातशाह जी ने प्रभु की महिमा का गान किया है कि किस प्रकार परमेश्वर का अमृतमयी नाम तन-मन को तृप्त कर आनंद विभोर कर देता है वस्तुत: नाम ही जीव हेतु जीवनाधार है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि हर पल परमेश्वर का सिमरन करें। उस मालिक का नाम जप-जपकर (नाम अमृत पीकर) इस मन-तन को तृप्त कर लें। जिन्हें गुरु के बचन और आदेश प्यारे लगते हैं। ऐसे गुरु के प्यारों ने नाम रूपी (अनमोल) रत्न प्राप्त कर लिया है, ऐसे नाम के रसिया को नाम के बिना कुछ भी दिखाई नहीं देता। नाम ही ऐसे जीव के लिए धन है और नाम ही उसके लिए रूप-रंग है अर्थात् नाम ही उसकी सर्वोत्म पूंजी है। ऐसे व्यक्ति के लिए नाम ही सच्चा सुख है, नाम ही उसका सच्चा साथी है। जो व्यक्ति नाम के रस से तृप्त हो गये हैं वही (वास्तव में) नाम में लीन हो गए हैं अर्थात् समा गये हैं। ऐसे जीव उठते-बैठते और सोते हुए भी नाम-सिमरन में जुड़े रहते हैं। गुरु पातशाह अंतिम पंक्ति में स्पष्ट करते हैं कि नाम जपना ही असल में ऐसे पुरुषों का सदैव अभ्यास होता है अर्थात् नाम जपना ही उनका वास्तविक कर्म होता है।

वस्तुत: नाम-सिमरन के अभ्यास से मन की समस्त तृष्णाएं शांत हो जाती हैं जिस तकदीर वाले को प्रभु-नाम का अमूल्य रत्न गुरु कृपा से नसीब हो जाता है वह सांसारिक पदार्थों के मोह से बच जाता है जैसा कि भक्त कबीर जी की पावन बाणी का प्रमाण है :

किनही बनजिआ कांसी तांबा किनही लउग सुपारी ॥
संतहु बनजिआ नामु गोबिद का ऐसी खेप हमारी ॥१॥
हरि के नाम के बिआपारी ॥
हीरा हाथि चड़िआ निरमोलकु छूटि गई संसारी ॥
(पन्ना ११२३)

अर्थात् किसी ने तो कांसा खरीदा है और किसी ने तांबा और किसी ने लौंग, सुपारी खरीदे हैं। हे संत जनों! हमने प्रभु-नाम का व्यापार कर लिया है। हम प्रभु-नाम के व्यापारी हैं जब से प्रभु-नाम रूपी अमूल्य हीरा हमारे हाथ लग गया है तब से हमारी सांसारिकता छूट गई है।

तब मन की इतनी उच्चावस्था हो जाती है कि वह मायिक पदार्थों से उलटकर हृदय रूपी कमल अमृत से भर जाता है। श्री गुरु नानक देव जी की पावन बाणी का प्रमाण है :

उलटि कमलु अंम्रिति भरिआ इहु मनु कतहु न जाइ ॥
अजपा जापु न वीसरै आदि जुगादि समाइ ॥
(पन्ना १२९१)

वास्तव में यही अजपा-जाप सुप्तावस्था में भी गुरमुखों के रोम-रोम में सहज गति से चलता रहता है। नाम अभ्यास की बदौलत ही उठते, बैठते, जागते श्वास-श्वास सिमरन करने वाले जीव का जीवन धन एवं जीवन आधार तथा जीवन सार

परमेश्वर का नाम होता है नाम के बिना एक पल भी ऐसे गुरमुख प्यारों का व्यर्थ नहीं जाता। ऐसी परमावस्था पर पहुंचे गुरमुख जनों के लिए ही गुरु नानक पातशाह जी ने फरमाया है :

जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥१॥

(पन्ना ८)

बोलहु जसु जिहबा दिनु राति ॥
प्रभि अपनै जन कीनी दाति ॥
करहि भगति आतम कै चाइ ॥
प्रभ अपने सिउ रहहि समाइ ॥
जो होआ होवत सो जानै ॥
प्रभ अपने का हुकमु पछानै ॥
तिस की महिमा कउन बखानउ ॥
तिस का गुनु कहि एक न जानउ ॥
आठ पहर प्रभ बसहि हजूरे ॥
कहु नानक सेई जन पूरे ॥७॥

१७वीं असटपदी की ७वीं पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह जी भक्त की आत्मिक अवस्था का ज़िक्र करते हैं कि परमेश्वर के भक्त उसी की कृपा से दिन-रात नाम-सिमरन में लीन रहते हैं। उनके अंत:करण में भक्ति के प्रति उत्साह बना रहता है। असल में वे अपने जीवन रूपी उद्देश्य को पूरा करने में कामयाब रहते हैं।

गुरु पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि (हे जीवो) दिन-रात अपनी रसना (जिह्वा) से प्रभु के गुण गायन करते रहो यह रहमत अर्थात् दिन-रात सिमरन करने की दात (बख़्शिश) परमेश्वर अपने सेवकों को खुद ही देता है। प्रभु के सेवक चाव एवं उत्साहपूर्वक प्रभु की भक्ति करते हैं। प्रभु भक्ति करते हुए वे प्रभु में ही समाए रहते हैं। जो (भूतकाल में) हो चुका तथा जो (भविष्यकाल में) होने वाला है उसे जानते हुए भी प्रभु हुक्म में सदैव प्रसन्नचित्त रहते हैं। वे प्रभु के हुक्म को पूर्णत्य पहचान चुके होते हैं। ऐसे (रज़ा में राज़ी रहने वाले) सेवक की किस-किस महिमा का बखान किया जाये? उनके एक भी गुण को बयान नहीं किया जा सकता। पंचम पातशाह पावन फरमान करते हैं कि जो जीव परमेश्वर की हजूरी में आठो पहर (हर समय) रहते हैं और हर तरह से पूर्ण है। ऐसे जीवों को परिपूर्ण परमेश्वर हाज़र-नाज़र दिखाई देता है। ऐसे जीव उस पूर्ण में एक रूप होकर खुद भी पूर्ण हो जाते हैं।

प्रभु की रहमत से नाम-सिमरन में लगे जीव नाम के अभ्यासी हो जाते हैं और फिर उन्हें (नाम जपने का) कोई विशेष उपक्रम नहीं करना पड़ता वह तो उनके जीवन का अंग बन जाता है और सहजता से उनके श्वास की प्रक्रिया की तरह निरंतर आठों पहर चलता रहता है। ऐसे व्यक्ति ही जीवन में आने वाले उतार-चढ़ाव में समरूप रहते हुए उस मालिक के हुक्म को शिरोधार्य करके न तो अति उत्तम अवस्था में आपे से बाहर होते हैं और न ही अति निम्न अवस्था में पहुंचकर प्रभु से गिला-शिकवा करते हैं। वे तो शांत एवं सहज भाव से गुरबाणी आशयानुसार जीवन यापन करते हैं। इस पांच भौतिक शरीर के साथ दुख-सुख तो चलता ही रहता है और ये तो शरीर ढकने के लिए प्रभु दर से मिले वस्त्र हैं। जिन्हें मनुष्य को स्वीकार करना ही पड़ता है :

सुखु दुखु दुइ दरि कपड़े पहिरहि जाइ मनुख ॥
जिथै बोलणि हारीऐ तिथै चंगी चुप ॥

(पन्ना १४९)

प्रभु रज़ा में चलने में ही जीव की भलाई छिपी है।

मन मेरे तिन की ओट लेहि ॥
मनु तनु अपना तिन जन देहि ॥
जिनि जनि अपना प्रभू पछाता ॥
सो जनु सरब थोक का दाता ॥
तिस की सरनि सरब सुख पावहि ॥
तिस कै दरसि सभ पाप मिटावहि ॥
अवर सिआनप सगली छाडु ॥
तिसु जन की तू सेवा लागु ॥

आवनु जानु न होवी तेरा ॥
नानक तिसु जन के पूजहु सद पैरा ॥८॥१७॥

१७वीं असटपदी की अंतिम पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह जी ने मन को प्रबोधते हुए समझाया है कि ऐसे प्रभु सेवक को अपना तन, मन समर्पित कर दे जिसने अपने परमेश्वर को पहचान लिया है। साथ ही समस्त चतुराइयां त्यागकर प्रभु के सेवकों के चरणों में लीन हो जा, जिसकी बदौलत तू आवागमन के चक्रों से मुक्त हो जायेगा।

श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि हे मेरे मन! तू सदा प्रभु के सेवक की ओट अथवा शरण ले। प्रभु की हजूरी में रहने वाले भक्तजनों को अपना तन-मन समर्पित कर दे। जिस भक्तजन ने अपने परमेश्वर को पहचान लिया उसमें सारी दातें देने की समर्थता आ जाती है। ऐसे सेवक की शरण में आने से समस्त सुखों की प्राप्ति होती है। उसके दर्शन से समस्त पापों का विनाश होता है। तू सब तरह की चालाकियां एवं होशियारियां छोड़कर प्रभु-भक्त की सेवा में लग जा। पंचम पातशाह अंतिम पंक्ति में कलयुगी जीव को यही संदेश देते हैं कि तू सदा ऐसे सेवक के चरणों की आराधना कर ताकि तू आवागमन के चक्र से पूर्ण मुक्ति पा सके।

जीव को समस्त पदार्थों की प्राप्ति हेतु तथा आवागमन से मुक्ति हेतु समस्त चतुराइयां त्याग कर प्रभु के सेवक की शरण में आ जाना चाहिए। उसकी हर समस्या का समाधान सहज ही हो जायेगा तथा लोक-परलोक भी संवर जायेगा। आवश्यकता है तो केवल ऐसे हरि जन की शरण में आने की तथा उसके पावन उपदेशों को श्रवण कर, मनन करने की अर्थात् उसके दर्शाये मार्ग पर चलने की :

गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ ॥
दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ ॥ (पन्ना २)

जीव को परमात्मा ने जिस कर्म में प्रवृत्त किया हुआ है वो उसी में मग्न हो जाता है। जिस पर प्रभु रहमत कर दें उसे अपनी सेवा बख़्शकर निहाल कर देते हैं :

सो सो करम करत है प्राणी जैसी तुम लिखि पाई ॥
सेवक कउ तुम सेवा दीनी दरसनु देखि अघाई ॥
(पन्ना ६१०)

प्रभु का सेवक प्रभु के दर्शन कर तृप्त होता है। यह सेवा प्रभु उसे आप बख़्शता है। उपरोक्त असटपदी की अंतिम पउड़ी में गुरु पातशाह ने यह स्पष्ट किया है कि प्रभु सेवकों की सेवा और शरण भी प्रभु की रहमत से ही नसीब होती है। पातशाह ने अन्यत्र भी इसी भाव को अभिव्यक्त करती बाणी उच्चारण की है :

सेवक की ओड़कि निबही प्रीति ॥
जीवत साहिबु सेविओ अपना चलते राखिओ चीति ॥१॥रहाउ॥
जैसी आगिआ कीनी ठाकुरि तिस ते मुखु नही मोरिओ ॥
सहजु अनंदु रखिओ ग्रिह भीतरि उठि उआहू कउ दउरिओ ॥२॥ (पन्ना १०००)

धन्य है प्रभु-सेवकों का जगत में आना, जिन्होंने अपने मालिक प्रभु को पहचान लिया :

धंनु सेवकु सफलु ओहु आइआ जिनि नानक खसमु पछाता ॥ (पन्ना १०००)

वास्तव में प्रभु की रहनुमाई से ही प्रभु सेवकों की संगत नसीब होती है, जिसके फलस्वरूप जीवन संवरते देर नहीं लगती। सचमुच यूं प्रतीत होता है :

कोई कमी नहीं है खुदा, तेरे खज़ाने में।
सब कुछ घड़ा जाता है, तेरे कारखाने में।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष साहिबान : २४

जत्थेदार जगदेव सिंघ तलवंडी

*-स. रूप सिंघ**

गुरसिक्खी श्रद्धा-भावना से ओत-प्रोत, गुरबाणी के नेमी-प्रेमी, लोह-पुरुष के रूप में जाने जाते सद जागत, जज़्बाती टकसाली गुरसिक्ख, लोक सभा, राज्य सभा के भूतपूर्व सदस्य, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर के ४९ वर्ष तक निरंतर सदस्य एवं शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के सम्मानजनक अध्यक्ष पद पर रह चुके जत्थेदार जगदेव सिंघ तलवंडी की सिक्ख धर्म व राजनीति में विलक्षण पहचान है।

जत्थेदार जगदेव सिंघ तलवंडी का जन्म १९२९ ई में जत्थेदार छांगा सिंघ तथा माता जसमेल कौर के घर मुल्लांपुर ज़िला लायलपुर (पाकिस्तान) में हुआ। जत्थेदार छांगा सिंघ धार्मिक वृत्ति के धारक, पंथक गतिविधियों में भाग लेने वाले जागीरदार किसान थे। तलवंडी साहिब के पिता जी ने श्री ननकाणा साहिब, गुरु का बाग, जैतो व डसका के मोर्चे में भाग लिया तथा कैद काटी। ७ फरवरी, १९५५ ई को शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के हुए प्रथम जनरल इजलास के समय जत्थेदार छांगा सिंघ बतौर सदस्य हाज़िर थे। इस उल्लेख से स्पष्ट है कि तलवंडी साहिब का पालन-पोषण पंथक परिवार में प्रवान चढ़ा। इनका बालपन लायलपुर की ज़रखेज धरती पर बीता। १८ वर्ष की आयु में इनका विवाह बीबी महिंदर कौर के साथ हुआ। देश-विभाजन के समय ये लायलपुर छोड़कर तलवंडी राय(लुधियाना) में परिवार सहित बस गए। इनके घर दो लड़कों एवं दो लड़कियों ने जन्म लिया। १९५२ ई में ज्ञानी गुरबचन सिंघ खालसा भिंडरांवाला के जत्थे द्वारा करवाए गए अमृत-संचार समागम के समय अमृत की दात प्राप्त कर, पंथक परिवार के सदस्य बन गए। इस पंथक परिवार का इलाके में आज भी पूरा मान-सम्मान है। १९५२ ई में बिना मुकाबला गांव के सरपंच चुने गए तथा निरंतर १७ वर्ष गांव के सरपंच के रूप में सेवा करते रहे।

शिरोमणि अकाली दल तथा शिरोमणि गु. प्र. कमेटी में जत्थेदार जगदेव सिंघ तलवंडी तथा जत्थेदार गुरचरन सिंघ टौहड़ा का प्रवेश लगभग एक ही समय में हुआ। १९६० ई में शिरोमणि गु. प्र. कमेटी का आम चुनाव हुआ, जिसमें तलवंडी साहिब राएकोट क्षेत्र से सदस्य चुने गए तथा निरंतर इस इलाके से सदस्य के रूप में सेवा निभा रहे हैं। जत्थेदार तलवंडी सिक्ख राजनीति में बहुत सक्रिय भूमिका निभाते रहे हैं। १९६७ ई में सबसे ज्यादा वोटों के फ़र्क से पंजाब विधान सभा के सदस्य चुने गए तथा अकाली विधानकार पार्टी के नेता के रूप में सेवा निभाई। आप १९६९ ई में पंजाब विधान सभा में विरोधी दल के नेता के रूप में कार्यशील रहे। इनको १९७१ ई में भी पंजाब विधान सभा का सदस्य होने का सम्मान हासिल हुआ।

आप स. गुरनाम सिंघ की सरकार में पंजाब सरकार के विकास तथा पशु-पालन विभाग के मंत्री बने। स. परकाश सिंघ बादल की सरकार के समय जेल, खेल विभाग तथा ट्रांसपोर्ट मंत्री के रूप में कार्यशील रहे। १९७२ ई में शिरोमणि अकाली दल के कार्यकारी अध्यक्ष बन गए तथा १९७४ ई में अध्यक्ष शिरोमणि अकाली दल के सम्मानजनक पद पर विराजमान

**सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर-१४३००१; मो. ९८१४६-३७९७९*

हुए। तलवंडी साहिब १९७७ ई. में लोक सभा के चुनाव के समय एक लाख से अधिक मतों के अंतर से लोक सभा के सदस्य चुने गए। इन्होंने पंथ तथा पंजाब से संबंधित लगे प्रत्येक मोर्चे के समय जेल-यात्रा की। अपातकालीन के समय इन्होंने १९ महीने जेल में गुज़ारे। पंजाब व पंथक राजनीति में स. परकाश सिंघ बादल, (गुरपुरवासी) जत्थेदार गुरचरन सिंघ टौहड़ा तथा जत्थेदार जगदेव सिंघ तलवंडी का हमेशा प्रभाव रहा है। इनकी विचारधारक एकता ने राजनीतिक सफलता की बुलंदियों को स्पर्श किया एवं आनंद लिया परंतु आपसी मतभेदों के कारण इनको राजनीतिक नुकसान का भी सामना करना पड़ा। २७ सितंबर, १९७९ ई. को जत्थेदार गुरचरन सिंघ टौहड़ा, अध्यक्ष शिरोमणि गु. प्र. कमेटी तथा जत्थेदार जगदेव सिंघ तलवंडी अध्यक्ष शिरोमणि अकाली दल ने अपने-अपने पद से त्यागपत्र श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार को दे दिए। जत्थेदार श्री अकाल तख़्त साहिब के आदेश की उल्लंघना करने के कारण तलवंडी साहिब को १६ नवंबर, १९७९ ई. को तनखाहिया करार दे दिया गया। इन्होंने २३ नवंबर, १९७९ ई को तनखाह प्रवान की।

जुलाई, १९८० ई. में ये राज्य सभा के सदस्य चुने गए। श्री अनंदपुर साहिब के प्रस्ताव को लागू करवाने के लिए १९८२ ई. में दिल्ली में मोर्चा लगाया। पंजाब के बुरे हालात के दौरान कपूरी मोर्चे तथा धर्म-युद्ध मोर्चे में विशेष योगदान डाला। जत्थेदार श्री अकाल तख़्त साहिब के आदेश को स्वीकार करते हुए तलवंडी साहिब धर्म-युद्ध मोर्चे में शामिल हो गए और एक बड़े जत्थे सहित गिरफ्तारी दी। १९८२ ई. में पंथक हुक्म को मानते हुए राज्य सभा की सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया जून, १९८४ ई. में भारत सरकार द्वारा श्री दरबार साहिब पर किए फौजी हमले के समय भी आप जी को गिरफ्तार कर लिया गया तथा लंबा समय कैदी बनाकर जेल में रखा गया। १९८५ ई. में आप पंथक एकता के नाम पर बने संयुक्त अकाली दल में शामिल हो गए।

७ मार्च, १९६० ई को आप शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के जनरल समागम के समय पहली बार सदस्य के रूप में हाज़िर हुए। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के आम चुनाव-- १९६०, १९६५, १९७९, १९९६ तथा २००४ ई में हुए। हर बार तलवंडी साहिब सदस्य चुने गए। शायद लोकतांत्रिक प्रबंध में यह एक कीर्तमान हो कि एक व्यक्ति सदस्य के रूप में निरंतर चुनाव जीते। इस समय के दौरान तलवंडी साहिब १९६५, १९६६, १९७६, १९७७, १९७८ ई. में कार्यकारिणी कमेटी के सदस्य के रूप में भी कार्यशील रहे। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी में भी बतौर सदस्य तलवंडी साहिब ने लंबा समय सेवा निभाई है।

आप जी ने ३० नवंबर, २००० ई को शिरोमणि सिक्ख संस्था, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी श्री अमृतसर का अध्यक्ष पद संभालते ही सिक्खों को विश्वास एवं एहसास करवा दिया कि शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की सरदारी कायम रहेगी। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने पाकिस्तान में अलग गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी बनने पर पाकिस्तान गुरुद्वारा साहिबान के दर्शनों के लिए जत्थे भेजने बंद कर दिए थे। इससे जहां यात्रियों को मुश्किल आती थी, वहीं शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के शरीकों को भी चौधरी बनने का मौका मिला। तलवंडी साहिब ने जत्थे भेजने की रीति को सुरजीत करके शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की सरदारी को कायम किया। सिक्ख शैक्षणिक संस्थायों को अल्प संख्यक दर्जा दिलाने हेतु तलवंडी साहिब के प्रयत्न सार्थक हुए। इससे सिक्ख शैक्षणिक संस्थाओं में साबत-सूरत विद्यार्थियों को प्राथमिकता के आधार पर दाख़िले मिलने शुरू हुए।

शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के प्रबंध को नयी दिशा प्रदान करने हेतु तलवंडी साहिब ने श्री हरिमंदर साहिब के दर्शन करने वाले श्रद्धालुओं के लिए सिरोपाउ की पुरातन मर्यादा बहाल की। श्री दरबार साहिब में श्रद्धालुओं द्वारा करवाए जाते श्री अखंड पाठ साहिब के लिए अलग कमरों का निर्माण करवाया तथा संबंधित श्रद्धालुओं का श्री अखंड पाठ साहिब के समय हज़िर रहना आवश्यक करार दिया। ऐतिहासिक गुरुद्वारा बीड़ बाबा बुड्ढा साहिब जी ठट्ठा की कार-सेवा बाबा दरशन सिंघ करवा रहे थे, जिसके वो खुद प्रबंधक बन बैठे। तलवंडी साहिब ने गुरुद्वारा साहिब का संपूर्ण प्रबंध शिरोमणि गु. प्र. कमेटी को लेकर दिया। इसी समय ही शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा ऐतिहासिक दिवसों की शताब्दियां मनाने के लिए विशेष योजनायें बनायी गईं।

इनके अध्यक्षता कार्यकाल के समय ही धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए विशेष गुरमति ट्रेनिंग कैंप लगे तथा सेमीनार हुए। सिक्ख धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए अलग-अलग इलाकों में प्रचार-अभियान आरंभ किए। पाठ बोध समागमों की पंथक रीति को सुरजीत करते हुए तख़्त श्री दमदमा साहिब तलवंडी साबो (बठिंडा) से आरंभता की। गुजरात में २६ जनवरी, २००१ को आए भयानक भूकंप के समय दुखी मानवता की सहायता हेतु विशेष राहत सामग्री तथा आर्थिक सहायता भेजकर नाम कमाया। पंथक मामलों संबंधी केंद्रीय नेताओं के साथ भी विचार-चर्चा की। ६ फरवरी, २००१ ई को श्री अटल बिहारी बाजपेयी प्रधानमंत्री भारत सरकार को गुजरात में आए भयानक भूकंप राहत फंड के लिए शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की ओर से चेक भेंट किया। जम्मू-कश्मीर के चिटी सिंघपुरा में जब निर्दोष सिक्खों का सामूहिक कत्लेआम किया गया तब भी पीड़ितों के साथ हमदर्दी का इज़हार करते हुए उन्हें आर्थिक सहायता दी गई। गृहमंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी के साथ भी उन्होंने विशेष मुलाकात करके चिटी सिंघपुरा में हुए सामूहिक सिक्ख कत्लेआम का मामला उठाया। पिआरा सिंघ भनियारे वाला के विरुद्ध आपने अध्यक्ष-काल के समय जब्रदस्त मुहिम चलाकर इस तथाकथित साध की नाक में दम कर दिया। तख़्त श्री दमदमा साहिब, तलवंडी साबो में दीवान हाल की आरंभता व चमकौर साहिब में पुरातन बाउली (बावली) के संभाल-कार्य का आरंभ तलवंडी साहिब के समय ही हुआ। श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर के दर्शन-स्नान के लिए आने वाली संगत की सुविधा हेतु बस-स्टैंड व रेलवे-स्टैंड से निःशुल्क बस-सेवा आरंभ की गई।

२७ नवंबर, २००१ को शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के वार्षिक जनरल इज़लास के समय प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर, अध्यक्ष शिरोमणि गु. प्र. कमेटी चुने गए। इस तरह इनका अध्यक्ष-काल संपूर्ण हो गया।

अकाली आगुओं में बुजुर्गवार अकाली आगुआ जत्थेदार जगदेव सिंघ तलवंडी बेबाक सिक्ख शख़्सियत के रूप में विचरते रहे हैं। सिक्ख राजनीति के शाहसवार तलवंडी साहिब को सिक्खी श्रद्धा-भावना तथा साबत कदमी के गुण विरासत में मिले। चाहे तलवंडी साहिब जज़्बाती स्वभाव के कारण आक्रोश में आ जाते हैं किंतु शीघ्र ही शांत भी हो जाते हैं।

जत्थेदार जगदेव सिंघ तलवंडी ने चाहे सांसारिक वर्ण-बोध प्राप्त नहीं किया परंतु तजुर्बे की टकसाल में जो रूप उनका तराशा गया, वह एक मिसाल है। वे मानते हैं कि जीवन-संग्राम में धर्म की रोशनी ही असल मार्गदर्शन करती है। बेबाक स्वभाव के मालिक तलवंडी साहिब कहते हैं कि न मैंने गुरु-घर का पैसा खाया है और न ही किसी को खाने दिया है। काली दसतार के धारक तलवंडी साहिब का कहना कि मैं जन्म से ही अकाली हूं और

अकाल के पुजारी अकाली के रूप में ही इस संसार को अंतिम फ़तहि बुलाऊंगा। जत्थेदार जगदेव सिंघ तलवंडी की अकाली जत्थेदार के रूप में ठाठ-बाठ सदैव कायम रही है। आजकल तलवंडी साहिब परिवार सहित सराभा नगर, लुधियाना में निवास रख रहे हैं।

कविताएं

बाणी का बहुत सहारा है

बाणी से निकला हर शबद मुझे,
लगता बड़ा प्यारा है।
जीवन की मुश्किल राहों पर,
बाणी का बहुत सहारा है।
लोग जो भूले-भटके हैं,
बाणी में उनको इशारा है।
जानकर भी न जो जाने इसे,
समझो वो कर्मों का मारा है।
इसकी अपनी ही ज्योति है,
फैला इससे उजियारा है।
जिसने इसका साथ लिया,
उसे जग से पार उतारा है।

जिस दर से बाणी आयी है,
जग सारा उसी का पसारा है।
जहां डगमग नाव नहीं होती है,
बाणी बस, वही किनारा है।
बाणी का पल्ला पकड़े जो,
उसे संकट न मंझधारा है।
बिरला ही इसमें रंग पाये,
बाणी का रंग न्यारा है।
श्रद्धा ले के पढ़ा जिसने,
उसी ने जीवन संवारा है।
जाति-भेद से ऊपर उठ कर,
बना सबकी आंखों का तारा है।

-स. रविंदर सिंघ, हीरा-मोती निवास, गुरुद्वारा गेट नं. ४, बड़पूरा, नांदेड़-४३१६०१, मो: ९३७२३६३३६९

विश्वांगन की बेटियां

बाबुल के आंगन का
श्रृंगार ही नहीं रहीं
विश्वांगन की
बेशकीमती धरोहर
बन गयी हैं बेटियां।
अपने कार्यों की सुरभि से
विश्वभर को सुवासित करती
बहुदायित्वों का बाखूबी
निर्वाह कर रही हैं बेटियां।
पग-पग पर बाधाओं
सामाजिक अड़चनों
पीड़ाओं को झेल कर भी
अद्भुत जिजीविषा से

विश्व भर को
प्रतिभा के अपने आलोक से
प्रदीप्त कर रही हैं बेटियां।
रूढ़ियों को धता बता
सदियों से डाली गयी
बेड़ियों को तोड़कर
नित्य आगे बढ़ रही हैं बेटियां।
रुग्ण, विकृत मानसिकता भी
अब नहीं रोक सकेगी उन्हें
स्वयं वीरांगना बन
दुष्टों का वध करने को
उद्यत हो रही हैं बेटियां।

-डॉ. प्रदीप शर्मा स्नेही, प्राचार्य, एस. ए जैन कॉलेज, अंबाला शहर, हरियाणा।